10·3

पृथ्वीराज चौहान

एक पराजित विजेता

पृथ्वीराज चौहान

एक पराजित विजेता

(खोजपूर्ण तथ्यों पर आधारित एक ऐतिहासिक उपन्यास)

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

लेखक

तेजपाल सिंह धामा

हिन्दी साहित्य सदन

नयी दिल्ली-110005

ग्रंथ	: पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
उपन्यासकार	: तेजपाल सिंह धामा
सर्वाधिकार	: लेखकाधीन
ISBN No.	: 81-88388-49-1
संस्करण	: मई २००८ (विक्रमी २०६४)
मूल्य	: सजिल्द १०० रुपये, अजिल्द ६० रुपये मात्र
प्रकाशक	: हिन्दी साहित्य सदन, २ बी. डी. चैंबर्स, १०/५४, देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली-११०००५
ई-मेल	: indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष	: ०११-२३५५३६२४
फैक्स	: २३५५३६२४
शब्द संयोजन	: धामा ग्राफिक्स, हैदराबाद
मुद्रक	: संजीव आफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली ५१

PRITHVIRAJ CHAUAN EK PRAJIT VIJETA

By: Tejpal Singh Dhama

समर्पण

आदरणीय श्री पद्मेश दत्त जी को सादर समर्पित, जिनकी प्रेरणा स्वरूप भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं कला पर आधारित लेखन अनवरत जारी है......

-तेजपाल सिंह धामा

कथावस्तु संकेत

भूमिका


तेजपाल सिंह धामा

प्रस्तुत ग्रंथ को लिखने की प्रेरणा मुझे वर्तमान हालात से मिली है। आज हालात यह है कि चन्द रुपये या वोट के लालच में राष्ट्र के कर्णधार या उनके प्रतिनिधि हाथ आये दुश्मन या उनके एजेंटों को वास्तविक या अवास्तविक दयाभाव दिखाकर छुड़वाने का साधन बन जाते हैं। इस कारण देश में नक्सलवाद, आतंकवाद व अराजकता का साम्राज्य फैलता जा रहा है। ऐसी अनेक घटनाओं को पढ़कर मुझे उस भावुक मन वाले वीर पृथ्वीराज चौहान का ध्यान आना स्वाभाविक है, जिसने शाहबुद्दीन गौरी को बार-बार पकड़कर भी छोड़ दिया और अंत में उसकी वंचना के कारण स्वयं पराजित हुआ और मारा गया, परिणामस्वरूप सृष्टि के आरंभ से चले आ रहे स्वतंत्र गौरवमय भारत को उसने गुलामी के रास्ते पर धकेल दिया। **'क्षमा वीरों का आभूषण होता है'**- शास्त्रों का यह वचन तो उन्हें बार-बार याद आता रहा, लेकिन **'अग्नि, साँप व शत्रु को शेष छोड़ दिया जाता है, तो ये बदला लेने से नहीं चूकते'**- यह शास्त्र वचन पता नहीं उन्हें क्यों याद नहीं आया?

महाराजा अनंगपाल ने ज्योतिषराज के बहकाए में आकर अपने पुत्र घोरी को देश, धर्म व जाति से बहिष्कृत किया और वही घोरी बाद में शाहबुद्दीन गौरी बनकर आया, जिसने भारत की सभ्यता व संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने में कोई कसर बाकी न छोड़ी। भारत के कई प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में बहिष्कृत घोरी की कथा मिलती है, लेकिन खेद है कि इतिहासकारों ने कभी इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट नहीं किया ? बहिष्कृत घोरी बनाम शाहबुद्दीन गौरी के जीवन से हमें इतनी प्रेरणा तो

नेनी ही चाहिए कि आर्य धर्म से कभी किसी को बहिष्कृत नहीं करना चाहिए, क्योंकि शास्त्रों का वचन है कि जाति से बहिष्कृत व्यक्ति जो पाप करता है, उससे देश तथा समाज की जो हानि होती है, उस सबका भागी वह समाज है, जो उस पापकर्ता को बाहर निकालता है।

पृथ्वीराज चौहान एक वीर व देशभक्त थे, इसमें कोई संदेह नहीं, लेकिन आज हमारा जन्मजात शत्रु पाकिस्तान जहाँ शाहबुद्दीन गौरी के नाम पर अनेक मिसाइलें बना चुका है, वहीं हमारे कुछ इतिहास लेखकों ने पृथ्वीराज चौहान को देश का पहला गद्दार लिख डाला है। ऐसा किसी सामान्य पुस्तकों या काल्पनिक उपन्यासों में नहीं, बल्कि स्कूलों व विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जा रहा है। यह मामला भारतीय संसद में भी गूँज चुका है। ८ अगस्त २००५ को लोकसभा में जनता दल यूनाइटेड के प्रभुनाथ सिंह महान योद्धा व पराक्रमी पृथ्वीराज चौहान को राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की ११वीं कक्षा की पुस्तक में उन्हें (पृथ्वीराज चौहान को) अत्यंत गलत ढंग से पेश करने पर घोर आपत्ति जता चुके हैं।

पृथ्वीराज चौहान को गद्दार लिखने वाले ये वही हिन्दूद्रोही लेखक हैं, जिन्होंने इतना बड़ा झूठ लिख डाला कि पृथ्वीराज चौहान तराइन के द्वितीय युद्ध में शाहबुद्दीन गौरी के हाथों मारा गया था। लेकिन एक मुस्लिम लेखिका जो भारतीय सभ्यता व संस्कृति में गहरी आस्था रखती है, ने मुझे विदेशी भूमि पर बनी दो समाधियों के चित्र दिखाये थे और लेखिका का दावा था कि ये चित्र पृथ्वीराज चौहान व चन्द्र बरदाई की समाधि के हैं, जिन्होंने सदियों पहले गजनी शाह की हत्या की थी, इसलिए शाहबुद्दीन गौरी की समाधि के नजदीक ही इनकी भी समाधियाँ हैं। पृथ्वीराज चौहान वं चन्द्र बरदाई की समाधि को भारत में लाने की मांग संसद में भी उठ चुकी है, लेकिन यह स्वतंत्र भारत का दुर्भाग्य है कि इन दो महान ऐतिहासिक पुरुषों की आत्माएँ विदेशी धरती पर अपनी-अपनी कब्रों के पास भटक रही हैं।

कई लेखकों ने पृथ्वीराज चौहान को औरतों की सुंदरता का गुलाम भी लिख डाला है। लेकिन वे लेखक यह भूल गये कि उस युग में बहु विवाह की प्रथा राजा-महाराजा तो क्या आम जनता में भी प्रचलित थी, फिर बहु विवाह रचाने के पीछे पृथ्वीराज चौहान का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता ही स्थापित करना था। जिन-जिन राजकुमारियों से पृथ्वीराज ने विवाह रचाये उन-उन के राजा पिताओं/भाइयों ने पृथ्वीराज चौहान की अधीनता तो स्वीकारी ही, साथ ही शाहबुद्दीन गौरी के साथ हुए आक्रमणों में पृथ्वीराज का साथ भी दिया, यहाँ केवल जयचंद एक अपवाद है।

भारत में तिथिगत इतिहास लिखने या पढ़ने/पढ़ाने की प्रथा थी या नहीं ? हम नहीं जानते ! परंतु कथाओं और दृष्टांतों के माध्यम से भारत का इतिहास सदा पढ़ाया जाता रहा है। यह वास्तविक सत्य है कि जिस जाति ने अपने इतिहास से शिक्षा नहीं ली वह नष्ट हो गयी। इतिहास अपने-आपको दोहराता है, लेकिन एक भारतीय होने के नाते हम अपनी गुलामी का इतिहास तो नहीं दोहराना चाहते। अतः इस पुस्तक के माध्यम से भारतीयों की ऐतिहासिक गलतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करके उससे कुछ सीख लेने की प्रेरणा देना चाहता हूँ, इसी आशा और विश्वास के साथ यह पुस्तक मैं आपके हाथों में सौंप रहा हूँ।

अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वरर्येषु ।।

खेकड़ा (बांगपत)
१५ अगस्त २००५

(तेजपाल सिंह धामा)



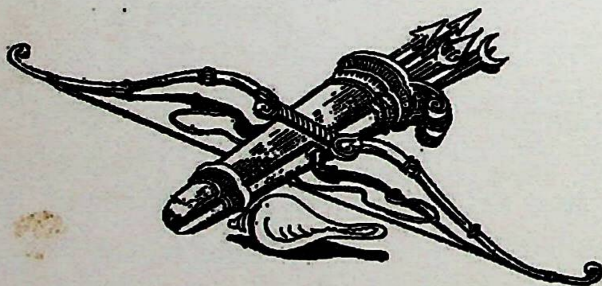
प्राक्कथन

आर्याः शूरा सदा बीराः पराधीनास्तु नाभवन् ।
ते हि बहिष्कृतैरार्यै : पराधीनताः कृता सदा ।।

-वंशचरितावलि, ४/२०

नत्वेवार्यस्य दासभावः चाणक्य का यह वचन सवर्था सत्य है कि आर्य जाति को कभी गुलाम नहीं बनाया जा सकता। भारत पर आक्रमण करने वाले म्लेच्छ बहिष्कृत आर्य ही थे। विष्णु पुराण के अनुसार वे हमारे बंधु थे, जिनको हमने ही अज्ञानवश जाति व धर्म से बहिष्कृत किया था। इसीलिए तो किसी शायर ने ठीक ही कहा है—

हमें तो अपनों ने लूटा, गैरों में कहाँ दम था ।
मेरी किश्ती भी वहाँ डूबी, जहाँ पानी कम था ।।



(१)

"आर्यावर्त्त की जय हो।" - महाराज अनंगपाल के सम्मुख आकर द्वारपाल ने शीश झुकाकर कहा।

अनंगपाल ने द्वारपाल से पूछा-- "ढलते सूर्य के समय हम से कौन मिलने की इच्छा रखता है कार्णिक ।"

द्वारपाल कार्णिक ने धीरे से स्वर में कहा- "महाराज आर्ष देश के सम्राट पृथ्वीपति के द्वार पर शरणागत के रूप में शीश झुकाए खड़े हैं।" महाराजा अनंगपाल ने तनिक मन में कुछ विचारा और फिर पास बैठे ज्योतिषराज जगन्नाथ से पूछा- "ज्योतिषराज इस समय किसी यवन का हमारी शरण में आना किस बात का सूचक हो सकता है।"

जगन्नाथ ने अपनी पोथी के दो-चार पन्ने पलटे, फिर एक कागज पर एक-दूसरे को काटती हुई कई लकीरें खींची और उनके बीच रिक्त स्थानों में कुछ संख्याएँ लिखी और फिर कुछ बताए बिना ही वह खामोश हो गये।

जगन्नाथ की खामोशी देखकर महाराजा अनंगपाल ने पूछा- "क्या बात है ज्योतिषराज ? किसी यवन का इस समय हमारी शरण में आना क्या किसी अमंगल का सूचक है ?"

ज्योतिषराज ने सिर झुकाकर कहा-- "क्षमा करें पृथ्वीपति ! किसी यवन को शरण देना ज्योतिष ही नहीं, नीति से भी अनुचित है। दरवाजे पर बाहर खड़े हुए याचक को शरण देने से आर्य सभ्यता व संस्कृति ही नहीं, बल्कि सृष्टि के आरंभ से आज तक सुसंपन्न आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य भी छिन्न-भिन्न हो सकता है।"

ज्योतिषराज जगन्नाथ की बातें सुनकर महाराजा अनंगपाल की आंखें क्रोध से लाल हो गयी और उन्होंने चिल्लाकर कहा- "क्या अनर्थ बोलते हो ज्योतिषराज। आर्यावर्त्त की तरफ कुदृष्टि करके कौन अभागा बिना मौत मरने की सोचेगा।"

"क्षमा करें महाराज ! विश्व को ज्योतिष विद्या आर्यावर्त्त की ही देन है और ज्योतिष के हिसाब से ढलते सूर्य के समय शरण मांगने वाला याचंक गोभक्षक है, उसे शरण देना विपत्ति मोल ले लेना है।" — अपने आसन से खड़े होकर सिर झुकाकर जगन्नाथ ने कहा।

ज्योतिष में पूर्ण निष्ठा रखने वाले महाराजा अनंगपाल की हालत एक चिंतक की हो गयी, कई मिनट पश्चात उनकी समाधिस्थ जैसी अवस्था तब टूट जाती है, जब द्वारपाल ने कहा- "पृथ्वीपति क्रीत के लिए क्या आज्ञा है।"

अचानक ही महाराजा अनंगपाल बोल पड़े- "याचक को हमारे सामने उपस्थित करो ! राजपूत का पहला धर्म विपत्ति में फंसे हुए प्राणी की रक्षा करना है।"

महाराजा के सामने सिर झुकाकर सांकेतिक प्रणाम करके द्वारपाल चला जाता है। और थोड़ी देर में शरण मांगने वाला यवन उपस्थित हो गया। यवन ने आते ही सिर झुकाकर महाराजा अनंगपाल को प्रणाम किया, फिर उनके चरणों में अल्प भेंट समर्पित की, तत्पश्चात उन्होंने कहा- "आर्य सम्राट मैं फारस अर्थात् आर्ष सम्राट कुतुबुद्दीन मोहम्मद का ज्येष्ठ पुत्र कयामत खान हूँ। दुष्ट सेनापति मेरे पिताश्री का तख्ता पलट कर स्वयं साम्राज्य का स्वामी बन बैठा। इतना ही नहीं उस दुष्ट सेनापति ने गजनी के बहराम के साथ मिलकर मेरे पिता कुतुबुद्दीन मोहम्मद और भाई सैफुद्दीन को निर्दयतापूर्वक फाँसी पर भी चढ़ा दिया है। मैं किसी तरह अपने प्राण बचाकर अपनी धर्मपत्नी शाहबानो व पुत्री शबाना के साथ आपकी शरण में[१] इसलिए आया हूँ कि आर्यावर्त्त के

---

१. बाणाऽश्व चन्द्रभू (११७५) वर्षे गजनी-गौरव-वासिनः ।
शासकाः शक्तिहीना ये तेऽभूवन् शक्तिशालिनः ।।
युद्धं कृत्वा प्रभुत्वाय ते परस्पर - शत्रव : ।
गजनी - बहुरामेण गौरव - मोहमदो हतः ।।
इन्द्रप्रस्थे तस्य पौत्र स्त्वनङ्गशरणं गतः ।
साकमनङ्गपालेन तेन पुत्री विवाहिता ।।
-वंशचरितावलि ४-७, ८, ९



सम्राट कभी किसी की कोई भी प्रार्थना अस्वीकार नहीं करते।"

याचक की बात सुन महाराजा अनंगपाल ने कहा- "राजपूत का पहला धर्म है शरणागत की रक्षा ! आप मेरे यहाँ निश्चिंत होकर रहें। जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं, कोई आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता। लेकिन......."

"निःसंकोच कहिए महाराज, गुलाम आपकी हर आज्ञा का पालन करेगा।"- महाराज की अधूरी बात को पूरा करवाने के लिए शरणागत यवनराज ने सिर झुकाकर कहा।

तब महाराज अनंगपाल ने कहा- "यवनराज मेरी बात को अन्यथा न लेना। ज्योतिष व नीति के अनुसार एक गोभक्षक यवन को आर्यावर्त में शरण देना हमारे लिए अमंगलकारी होगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि यदि आप यवनमत अर्थात् इस्लाम छोड़ कर हिन्दू धर्म अपना लें तो इससे आपको शरण भी मिल जाएगी और हमारा अमंगल भी टल जाएगा।"

यवनराज ने प्रतिवाद करते हुए कहा- "क्षमा करें महाराज ! मैं परिवार समेत इस्लाम त्यागकर हिन्दू धर्म तो अपना लूँगा, लेकिन हिन्दू बनने के बाद मेरी पुत्री से कोई भी हिन्दू युवक शादी नहीं करेगा, बल्कि उसे मुसलमानी कहकर जीवनभर अपमानित किया जाएगा। हिन्दुओं में

जातिप्रथा एक सामाजिक बुराई का रूप ले चुकी है। जातिप्रथा के दुष्परिणाम हम स्वयं भुगत चुके हैं। जहाँ मैं पैदा हुआ उस भूमि का नाम फारस है, लेकिन हमारे बचपन के समय में उसका नाम आर्ष था। ५० वर्ष पहले हमारे देश में सभी हिन्दू ही थे, लेकिन शूद्र वर्ण के लोगों की संख्या अधिक थी, ब्राह्मण उन्हें अछूत समझकर प्रताड़ित करते रहते थे। शूद्रों ने अपमान की अग्नि में जलते हुए इस्लाम कबूल कर लिया। ब्राह्मण लोग जाटों को अश्लील शब्दों से अपमानित करते थे, इस कारण क्षत्रिय जाटों ने इस्लाम कबूल कर सारे ब्राह्मणों को मौत के घाट उतार दिया। हमें जाटवंशी होने पर गर्व है, लेकिन कभी हमारे पूर्वज जातिप्रथा मानने वाले हिन्दू थे, ऐसा विचारने पर शर्म आती है। चमार, भंगी आदि तो हिन्दू धर्म के अभिन्न अंग और रक्षक हैं, लेकिन उच्च वर्ण के हिन्दू उनसे अत्यंत घृणा करते हैं। हम यवनों को तो हिन्दू म्लेच्छ कहकर पुकारते हैं और शूद्रों से भी निकृष्ट समझते हैं। इन सब बातों को देखते हुए हिन्दू धर्म अपनाकर हमें क्या गौरव हासिल होगा?"

महाराज अनंगपाल ने यवनराज की शंकाओं का समाधान करते हुए कहा - "यवनराज आप निश्चिंत रहिए ! हिन्दू बनने के बाद आपको नौ सम्राटों जितना सम्मान मिलेगा।"

यवनराज ने उत्सुकता से पूछा- "क्या ऐसा संभव है महाराज।"

अनंगपाल ने कहा- "क्यों नहीं ? अगर आप परिवार समेत हिन्दू बनने के बाद अपनी पुत्री की शादी मेरे साथ करने पर सहमति जता देंगे तो ?"

इतना सुनते ही यवनराज का दिल खुशी से बाँसों उछल पड़ा और उन्होंने महाराजा अनंगपाल से कहा- "पृथ्वीपति इससे बड़ा मेरा और क्या सौभाग्य होगा कि मेरी पुत्री आर्यावर्त्त की महारानी बनेगी। कल प्रातःकाल ही आप हमारा शुद्धिकरण संस्कार करा दें और मेरी पुत्री का हाथ थामकर मुझे व मेरे कुल को धन्य करें।"

महाराज अनंगपाल को दो पुत्रियाँ थीं, लेकिन पुत्र नहीं था, जब आम



जनता ने समाचार सुना कि महाराज अनंगपाल दूसरा विवाह कर रहे हैं, तो सारे देश में हर्ष की लहर दौड़ गई। जनसमुदाय के दिलों में आशा की नई किरण फूटी कि भावी महारानी निश्चय ही राज्य के उत्तराधिकारी को जन्म देंगी। विवाह की खुशी में महाराजा अनंगपाल ने काफी धन दान-मान में दिया। शुद्धिकृत यवन राजकुमारी का शबाना के स्थान पर नया नाम सुमन देवी रखा गया। तत्पश्चात महाराजा अनंगपाल का सुमन देवी के साथ वैदिक पद्धति से विवाह संस्कार संपन्न हुआ। इसी दौरान सैफुद्दीन के भाई अलाउद्दीन ने अपनी शक्ति बढ़ाकर गजनी को सात दिनों - रातों तक फूंक कर व लूटकर अपने भाई की मौत का बदला लिया, जब यह समाचार दिल्ली में कयामत खान को मिला तो वह अपने दामाद महाराजा अनंगपाल से आज्ञा लेकर गजनी वापस चला गया।

कुछेक दिनों में महारानी सुमन देवी को गर्भ ठहर गया और २७० दिन पश्चात शुद्धिकृत राजमाता सुमन देवी ने एक सुंदर बालक को जन्म दिया।

बालक का भविष्य जानने के लिए महाराजा अनंगपाल ने ज्योतिषराज जगन्नाथ को अपने पास बुलाया और पूछा- "ज्योतिषराज हमारे कुलदीपक की जन्मपत्री शीघ्र तैयार की जाए और हमें अपने पुत्र के भविष्य से अवगत कराया जाए।"

महाराज की बात सुनते ही ज्योतिषराज इस प्रकार गर्दन झुका लेते हैं, जैसे स्पर्श करते ही छुई-मुई का पौधा मुरझा गया हो। तत्पश्चात्

महाराजा अनंगपाल ने पूछा- "ज्योतिषराज बालक का भविष्य बताने के नाम पर आपने चुप्पी क्यों साध ली?"

जगन्नाथ ने चुप्पी तोड़ते हुए उत्तर दिया- "क्षमा करें महाराज ! लड़का बहुत कम्बख्त है, इसको कत्ल कर दो, नहीं तो राज पर संकट आ जाएगा।"

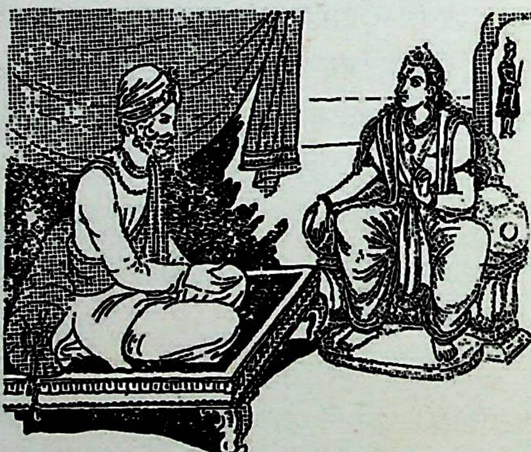
महाराजा अनंगपाल ने गरजते हुए कहा- "क्या कहा राज पर संकट? तुम्हारी ऐसी अशुभ बात कहने की हिम्मत कैसे हुई ज्योतिषराज! अभी हमारी बाहों में इतना बल है कि हम इन्द्र को भी पराजित कर देंगे।"

जगन्नाथ ने हाथ जोड़ते हुए कहा- "क्षमा करें पृथ्वीपति ! इस बालक के कारण देश पर किसी बाहरी शत्रु से खतरा नहीं होगा।"

"तो फिर?"

"महाराज राष्ट्र में गृहयुद्ध भड़क जाएगा।"

"वह कैसे ?"



"लोगों में आम चर्चा है कि वे किसी भी ऐसे युवक को कभी भी अपना राजकुमार, युवराज या महाराज स्वीकार नहीं करेंगे, जो किसी मुस्लिम युवती से जन्मा हो।"

संवाद की निरंतर गतिशीलता पर विराम लग जाता है और महाराजा अनंगपाल के मुखमंडल पर खामोशी छा जाती है। थोड़ी देर में खामोशी तोड़ते हुए उन्होंने उदास भाव से पूछा-- "जगन्नाथ ! इस भावी दैवी आपदा से कैसे मुक्ति पायी जा सकती है?"

"बच्चे को कत्ल करके महाराज।" -- एक ही क्षण में निर्दयी जगन्नाथ

ने अपने दिल की बात कह दी।

आँखों से टपकते हुए आँसुओं के साथ महाराज ने रुक-रुक कर कहा-- "ठीक है जगन्नाथ ! विधाता की जो इच्छा। हम राष्ट्र की सुख-शांति के लिए एक कुल दीपक तो क्या यदि हमारे हजार पुत्र भी होते, उन्हें भी राष्ट्र पर न्यौछावर कर देते।"

जगन्नाथ खुशी के आँसू छलकाते हुए बोले - "मेरे लिए क्या आज्ञा है महाराज।"

अनंगपाल ने कहा - "इसमें पूछने की क्या बात है। जब महारानी चिरनिद्रा में हो, तो दाई के हाथों बालक को अग्नि में जिंदा भस्म करवा कर स्वर्गलोक पहुंचा दो।[१]"



---

१. शुद्धीकृता राजपत्नी हर्म्ये प्रासूत बालकम् ।
परं पृथ्वी भटेनाऽऽशु षड्यन्त्रमत्र निर्मितम् ।।
तेन स बालकः क्षिप्तः कान्तारे घोर नामके ।
कालान्तरे प्रसिद्धोऽभूद् घोरिनाम्ना स बालकः ।।

-वंशचरितावलि ४-१०,११

-काला पहाड -पृथ्वी सिंह बेधड़क, जवाहर बुक डिपो गुजरी बाजार, मेरठ (उत्तर प्रदेश) संस्करण १९७४, भजन २५, पृष्ठ २५

(२)

दिल्ली में लाल कोट के करीब यमुना किनारे कुछ बच्चे राज दरबार का नाटक खेल रहे थे। एक १३-१४ साल का बच्चा राजा बना हुआ था। कई बच्चे पुरोहित, ज्योतिष, सामंत आदि की भूमिका निभा रहे थे। तभी दूर से दौड़ता हुआ एक बच्चा उनके पास आया और राजा बने बालक को सिर झुकाकर हाथ जोड़कर उसने कहा- "महाराजा घोरी की जय हो।"

घोरी ने नकली मूछों पर हाथ फेरते हुए कहा- "नगर के क्या समाचार हैं बालदूत।"

बालदूत ने उत्तर दिया- "महाराज विक्रमादित्य की इस पवित्र भूमि पर आज न्याय की देवी का अपमान हो रहा है और खेद है कि आप इससे अभी तक अनभिज्ञ हैं।"

घोरी ने जोश में आकर कहा- "किसमें इतना साहस है, जो पवित्र भारत भूमि पर विक्रमादित्य की न्याय प्रणाली का अपमान कर रहा है?"

बालदूत ने बताया- "महाराज यह अपमान किसी बच्चे या नागरिक ने नहीं, बल्कि सीधा पृथ्वीपति महाराज अनंगपाल ने किया है।"

घोरी - "अपनी बात को स्पष्ट करो बालदूत।"

बालदूत ने विस्तार से बात बताना शुरू की- "महाराज दस-बारह साल पहले की बात है। बनजारे कालूराम ने व्यापार के लिए गोधूमल सेठ से कुछ कर्ज लिया था। उन्होंने जमानत के तौर पर अपनी खूबसूरत पत्नी को गोधूमल के पास गिरवी रख दिया था। अब बनजारे ने गोधूमल का सारा कर्ज चुका दिया, लेकिन गोधूमल ने कालूराम की पत्नी को लौटाने से इंकार कर दिया और कहता है कि वह मर गयी। लेकिन सत्य यह है कि बनजारन मरी नहीं है। सेठ के दिल में उसकी खूबसूरती को देखकर खोट आ गया है। उसने बनजारन को जबर्दस्ती उपभार्या

बनाकर रखा हुआ है। इस बात को जानकर कालूराम ने सेठ पर महाराजा अनंगपाल के सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमा ठोंका था, लेकिन महाराजा अनंगपाल ने फैसला सेठ के हक में सुना दिया कि यदि बनजारन जीवित भी है, तो वह ब्याज के बदले रख ली जाए, जबकि भारतीय संस्कृति में ब्याज लेना अपराध है।''

घोरी ने दांत भींचते हुए मुट्ठी कसकर कहा- ''ठीक है सभासदों कल हम सब महाराजा अनंगपाल के दरबार में चलेंगे और उनके फैसले को चुनौती देंगे।''

अगले दिन घोरी कालूराम को साथ लेकर पुनर्याचिका दायर करने के लिए महाराजा अनंगपाल की न्याय सभा में जा पहुंचे। धर्मात्मा राजा ने घोरी के तर्क सुनने के बाद पुनर्याचिका स्वीकार करते हुए उस मुकदमे का न्यायाधीश घोरी को ही नियुक्त कर दिया। घोरी ने केन्द्रीय गुप्तचर विभाग व पुलिस की मदद से दूध का दूध और पानी का पानी अलग-अलग कर दिया। इस मुकदमे का फैसला करने से घोरी को इतनी प्रसिद्धि मिली कि लोग उन्हें विक्रमादित्य का अवतार मानने लगे। जिन मुकदमों का फैसला स्वयं महाराजा अनंगपाल भी नहीं कर पाते थे, वह मुकदमे घोरी के बाल दरबार में आने लगे। घोरी की दिव्य योग्यता को देख महाराजा अनंगपाल ने एक दिन उसे राज दरबार में बुलाया. और अपनी गोदी में उठाकर सिंहासन पर बैठ गया। तभी वह धाय (दाई) जो घोरी के जन्म व पालन-पोषण के बारे में जानती थी उसने महाराजा से कहा- ''महाराज यह बालक आपकी गोदी का ही नहीं, इस राज सिंहासन का भी उत्तराधिकारी है।''

महाराजा अनंगपाल ने आश्चर्य से पूछा- ''वह कैसे दाई माँ।''

दांई ने कहा- ''महाराज तेरह साल पहले आपने धर्मांध पोपों के बहकाए में आकर अपने कुलदीपक को कम्बख्त समझकर मेरे द्वारा आग में जिंदा जलाने का आदेश दे दिया था। मुझे उस समय उस नन्हे शिशु पर दया आ गयी। मैंने आपके कुलदीपक को उस गड्ढे में फूलों पर रख

दिया था, जहाँ से पुजाए की ईंट बनाने के लिए मिट्टी खोदी जाती है। उस स्थान को घोर कहते हैं। मिट्टी से ईंट बनाने वाले रामदयाल तेल्ली ने जब फूलों पर हँसते हुए बालक को देखा, तो वह उसे अपने घर ले आया और उसका पालन-पोषण किया। बालक घोर के अंदर से पाया गया था, इसलिए उसका नाम घोरी ही रख दिया गया।[1] आपका वह कुलदीपक महारानी सुमन देवी की संतान यही घोरी है।"

अनंगपाल ने अपने गले से कीमती हार उतारकर दाई को भेंट कर दिया और अपने पुत्र को लेकर महारानी सुमन देवी के पास पहुंचे। माँ से पुत्र का परिचय कराने की आज तक कभी विश्व में किसी को भी जरूरत महसूस नहीं हुई। पुत्र चाहे बिछुड़ने के हजार साल बाद माँ से मिले, माँ उसको बिना पुनर्परिचय हुए गले से लगा लेगी, क्योंकि माँ व पुत्र का प्यार हृदय का नहीं आत्मा से जुड़ा हुआ होता है और ऐसा ही कुछ घोरी के साथ हुआ।

घोरी ने सुमन देवी को देखकर दौड़कर उसके चरण स्पर्श किये और फिर सुमन देवी व घोरी ने एक-दूसरे को सीने से लगा लिया और माँ-पुत्र दोनों की आँखों में प्यार के आँसू छलक आए।



१. वंशचरितावलि

(३)



बिना किसी अंगरक्षक के अपनी पुत्री को सामने खड़ा देख कयामत खान ने पूछा- "यह क्या फकीरों वाला वेश बना रखा है, क्या जंवाई राजा से झगड़ा हो गया है, जो अकेली चली आई, क्या कुछ अशुभ समाचार है ?"

महारानी सुमन देवी ने रोते हुए उत्तर दिया- "अब्बा जान सब खत्म हो गया, मैं बर्बाद हो गयी।"

कयामत खान ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा- "मैं हूँ ना पुत्री, मेरे रहते हुए दुःख तुम्हारे पास फटक भी नहीं सकता, लेकिन यह तो बताओ इन्द्रप्रस्थ में ऐसा क्या हो गया, जो तुम्हें नंगे पाँव गजनी भागकर आना पड़ा।"

सुमन देवी ने रोते हुए उत्तर दिया- "पति परमेश्वर महाराजा श्री अनंगपाल ने मेरे पुत्र घोरी को युवराज घोषित कर दिया था, लेकिन विग्रहराज के पुत्र पृथ्वीभट्ट ने शहर में अफवाह फैला दी कि महाराजा अनंगपाल पागल हो गये हैं, उन्होंने एक मुसलमान को युवराज बना दिया, जो गोमांस भक्षक है। फिर क्या था राजा अनंगपाल के प्रति सेना तथा जनता में विद्रोह फैल गया। अनंगपाल को गिरफ्तार करके पागलखाने में डाल दिया गया तथा मदन को दिल्ली का नया राजा बना दिया गया, मैं अपने पुत्र व अपनी हत्या के भय से आपके धेवते को साथ लेकर जान बचाकर बड़ी मुश्किल से यहाँ पहुंची हूँ।"

कयामत खान रुंधे गले से बोले- "खुदा को यही मंजूर होगा बेटी ! तुम चिंता न करो। बुतपरस्त लोगों ने अपना काफिरपना दिखा ही दिया। तुम पिछली बातों को भूल जाओ और अलाउद्दीन के छोटे भाई से

निकाह पढ़ लो, वह तुम्हें आज भी दिलोजान से चाहता है।''

सुमन देवी बनाम शबाना ने नये जीवन की शुरुआत करने के लिए गर्दन झुकाकर सहमति जता दी और इस तरह अलाउद्दीन के छोटे भाई से निकाह पढ़कर महारानी सुमन देवी पुनः शबाना बेगम बन गयी।[1]

कुछ दिनों पश्चात अलाउद्दीन का पुत्र और उत्तराधिकारी सैफुद्दीन मुहम्मद गुर्ज तुर्कमानों के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया, उसके चचेरे भाई उत्तराधिकारी गयासुद्दीन मुहम्मद ने १२२९ वि.सं. में गुर्ज तुर्कमानों को गजनी से खदेड़ दिया और अपने अनुज घोरी को जिसे नया नाम मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन साम दिया गया था, को इस प्रांत का सुबेदार बना दिया गया। सौतेले होते हुए भी दोनों भाइयों में अत्यंत प्रेमपूर्वक संबंध थे। घोरी जब अपने अनुज के सहायक के रूप में था, उसने भारत पर आक्रमण करना शुरू कर दिया।[2]

गजनी में घोरी ने अपनी सेना बढ़ाई तथा कट्टर मुसलमान होकर के इन्द्रप्रस्थ पर आक्रमण की योजना बनाई। घोरी से मुइजुद्दीन मुहम्मद बिन साम और बाद में शाहबुद्दीन गौरी के नाम से प्रसिद्ध हुए इस किशोर का एकमात्र लक्ष्य भारत को गुलाम कर अपनी माता के साथ हुए अन्याय व अपमान का बदला लेना था।

---

१. एकदाऽनङ्गपालेन तस्मै दत्तं स्वदर्शनम् ।
तस्मिन काले तदुत्पत्तेस्तद्रहस्यमनावृतम् ।।
ततोऽनङ्गेनघोरी स युवराजो हिघोषितः ।
पृथ्वी भट्टश्च कुद्धोऽभूद् विग्रहराजस्याऽऽत्मजः ।।
क्षिप्तो मत्तगृहेऽनङ्गस्तेन मत्तः प्रघोषितः ।
इन्द्रप्रस्थस्य भट्टेन शासको मदनः कृत ।।
घोरिमाता सपुत्रा सा भीताऽऽशु गजनीं गता ।
अल्लादीनानुजेनाऽत्र परिणयस्त्या कृत : ।। -वंशचरितावलि ४-१२,१३,१४,१५

२. ग्रहाऽऽत्माऽक्षिमू (१२२९) विक्रमवर्षे गजनीशासकात् ।
पराजितास्तुर्कमाना गजन्यास्ते बहिर्गताः ।।
ततो गयासुदीनेन घोरी कृतः प्रशासकः ।
मुईजुद्दीननाम्ना च तस्य घोषणा कृता ।।
इत्थमिस्लाम धर्मेण दीक्षितैर्मुस्लिम नृपैः ।
भीता विपन्ना आर्यास्ते मुसलमाना घोषिताः ।। -वंशचरितावलि ४-१६,१७,१८

(४)

शाहबुद्दीन गौरी की सेना में सबसे योग्य वीर था मीर हुसैन। वह शब्दवेधी बाण चलाने की कला में निपुण एक योग्य धनुर्धारी था। शाहबुद्दीन गौरी ने उसे गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया और भारत के कोने-कोने की खबर एकत्र करने का आदेश दिया। मीर हुसैन की योग्यता को देखकर सभी मीर उमराव उसके यश का गान करते थे। शाहबुद्दीन गौरी की चित्ररेखा नाम की एक वेश्या थी, जो रंग में साक्षात रति के समान व गान विद्या में अत्यंत प्रवीण अद्वितीय थी। वह वीणावादन की जानकार बत्तीस स्त्रियोचित लक्षणों से युक्त थी। अत्यंत मधुर वाणी वाली इस कमसिन हसीना की उम्र मात्र पंद्रह वर्ष थी और शाहबुद्दीन गौरी की इस पर विशेष कृपा थी। मीर हुसैन इस पर मुग्ध हो गया और चित्ररेखा भी उसे अपना ह्रदय दे बैठी।

एक दिन प्रातःकाल शाहबुद्दीन गौरी ने मीर हुसैन को बुलाया और कहा- ''अत्यधिक काम वासना वाले व्यक्ति नीच होते हैं। तुमने चित्ररेखा को पटाकर स्वामी के प्रति विश्वासघात कर मेरी क्रोधाग्नि में घी डालने का काम किया है। तुमने एक वेश्या को पाने के लिए गलत ढंग अपनाया है, मैं तुम्हें दंड देकर रहूँगा।''

मीर हुसैन ने गर्दन झुकाकर कहा- ''क्षमा करें आलीजाह ! गुलाम बहक गया था, आगे से ऐसी गलती नहीं होगी।''

शाहबुद्दीन ने मुस्कुराकर कहा- ''ठीक है भई ! हमने तुम्हें माफ किया। तुम मेरे सबसे विश्वासपात्र आदमी हो, तुम्हें खो भी नहीं सकता, चलो आज से चित्ररेखा तुम्हारी हुई, लेकिन तुम्हें मेरा एक काम करना होगा?''

मीर हुसैन ने सिर झुकाकर कहा- ''आलीजाह बताइये मेरे लिए क्या हुक्म है?''

गौरी ने थोड़ा ऊँचे स्वर में कहा- "तुम जानते हो ना, मेरा बाप कभी दिल्ली का सम्राट था। पहले तो मेरे बाप अनंगपाल ने मेरी माँ से मोहब्बत का स्वांग रचाया और उससे शादी की, लेकिन बाद में पोंगा पंडितों के बहकाए में आकर मुझे और मेरी माँ को मरवाने का षड्यंत्र रचा। खुदा के घर में देर है, अंधेर नहीं ! विग्रहराज के पुत्र पृथ्वीभट्ट ने अपने ही नाना अर्थात् मेरे बाप को उसकी करनी का अच्छा मजा चखाया और उसे पागल करार देकर जेल की सलाखों के पीछे बंद कर दिया और जिस राज पर मेरा अधिकार होना चाहिए था, उस पर पृथ्वी भट्ट ने मदन सिंह को बैठा दिया। मदन सिंह के बाद जीवन सिंह दिल्ली के महाराजा बन बैठे, जो मेरे पिता के वंश से ही संबंध रखते थे। यह गृहयुद्ध यहीं खत्म नहीं हुआ। मेरी सौतेली बहन कर्पूरी देवी और उसके पति सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज चौहान ने जीवन सिंह को मारकर अपने भाई गोविंद पाल को दिल्ली का हाकिम बना दिया[1] और इस प्रकार हमारा राजवंश इन्द्रप्रस्थ से सदा-सदा के लिए खत्म हो गया। वाह री दिल्ली ! जिसका सत्ता सुख मुझे भोगना चाहिए था, उस पर न जाने कौन-कौन ऐरे-गैरे-नत्थू खैरे आकर बैठ गये, जैसे दिल्ली का तख्त न हो, कोई रास्ते की पड़ी गुड़ की भेली है और उस पर मक्खियाँ भिनभिना रही हों। आने-जाने वालों के लिए मक्खियाँ परेशानी का सबब बन गयी हैं। तुम समझ गये न मीर हुसैन ! मैं इन मक्खियों को मारकर रास्ता साफ करना चाहता हूँ। मैं तुम्हें एक हाथ में कुरान-ए-शरीफ देता हूँ और दूसरे हाथ में चित्ररेखा तथा तलवार मैं अपने हाथ में रखता हूँ। तुम जानते हो न पृथ्वीराज चौहान एक विलासी पुरुष है, जो आदमी दूसरों की बहू-बेटियों की इज्जत नहीं करता, उसको जीने का कोई हक नहीं।"

गौरी की बात काटते हुए मीर हुसैन ने कहा- "क्षमा करें आलीजाह!

---

१. सप्तकालाक्षिचन्द्राब्दे हत्वा जीवनसिंहकम् ।
पृथ्वीराजो नृपोऽकार्षीद गोविन्दपालकं नृपम् ।।
-वंशचरितावली

पृथ्वीराज चौहान विलासी नहीं, बल्कि एक वीर और नारी का मान-सम्मान करने वाला सच्चा सम्राट है।''

गौरी ने थोड़े क्रोधित भाव से कहा- ''नालायक नमक मेरा खाते हो और तरफदारी उस काफिर की करते हो। अब तक पाँच विवाह रचाने वाला विलासी नहीं तो और क्या है ?''

मीर हुसैन ने प्रतिवाद करते हुए उत्तर दिया- 'आलीजाह पृथ्वीराज चौहान ने एक तो राष्ट्रीय एकता के लिए बहु विवाह किये हैं, दूसरे वह इतना वीर है कि भारत की ही नहीं गजनी तक की कई युवतियाँ उन्हें बिना देखे ही अपना दिल दे बैठी हैं।'

गौरी ने आश्चर्य से पूछा- ''क्या वाकई ऐसा है! आपने चौहान के बारे में और क्या-क्या सूचनाएँ एकत्र की हैं, हमारे लिए उनका जानना बहुत जरूरी है, इसलिए विस्तार से बताओ ?''

मीर हुसैन- ''मैं पृथ्वीराज के अब तक के पाँच विवाहों के कारणों के बारे में बताता हूँ, आप खुद ही निर्णय करें कि दिल्ली सम्राट वीर हैं या विलासी?''

गौरी-- ''ठीक है बताओ......बताओ?''

मीर हुसैन-- ''नाहर राय प्रतिहार ने अपनी पुत्री का विवाह बाल्यकाल में ही पृथ्वीराज से करना तय कर दिया था, परंतु आगे चलकर उसने अपना विचार त्याग दिया। इसी कारण पृथ्वीराज ने प्रतिहार से युद्ध किया और उसे रणभूमि में परास्त कर संधि करने के लिए विवश कर दिया। परिणामस्वरूप नाहरराय ने अपनी दो पुत्रियों का विवाह एकसाथ पृथ्वीराज के साथ कर दिया।''



गौरी- "ठीक है मीर हुसैन यदि मैं पृथ्वीराज की जगह होता तो मैं भी ऐसा ही करता, आखिर दिल्ली का सम्राट त्रिलोक का स्वामी माना जाता है।"

हुसैन ने पृथ्वीराज के बारे में फिर आगे कहना शुरू किया- "पृथ्वीराज का तीसरा विवाह आबू के परमारों के यहाँ इच्छिनी देवी से हुआ है, इस विवाह में चारों वर्णों को पाँच दिन तक परमार राजा ने विशिष्ट भोजन दिया है तथा बारात को पाँच कोस तक पैदल चलकर स्वयं परमार राजा सलष जैन ने स्नेहपूर्ण विदाई दी है। लेकिन आलीजाह इस विवाह को करने से पहले पृथ्वीराज को राजा भीम के आक्रमण का सामना करना पड़ा।"

गौरी ने उत्सुकता से पूछा- "क्यों ?"

मीर हुसैन ने बताया- "जहाँपनाह भोरा भीम जो गुजरात का अत्यंत बलशाली व पराक्रमी राजा है, इच्छिनी की बड़ी बहन मन्दोदरी का पति है। फिर भी उसने द्वितीय पत्नी के रूप में अपने श्वसुर से इच्छिनी की माँग की। यह संबंध इच्छिनी के पिता व भाई किसी को भी पसंद न था, इसलिए उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा। पृथ्वीराज उस निवेदन को स्वीकार कर सदल बल चढ़ आया। उधर भीम की भी सेना आ रही थी। जमकर लड़ाई हुई। दोनों ओर के हजारों वीर मारे गये और अंत में पृथ्वीराज विजयी हुआ तथा उसने इच्छिनी से विधिपूर्वक विवाह रचा लिया।

गौरी- "पृथ्वीराज भी तो दो शादी पहले रचा चुका था, फिर भोरा भीम के दूसरे विवाह पर उसके श्वसुर को क्या आपत्ति थी ?"

मीर हुसैन- "थी आलीजाह, आपत्ति थी ! क्योंकि भोरा भीम से ज्यादा शक्तिशाली पृथ्वीराज चौहान है और दोनों एक-दूसरे के दुश्मन भी हैं, दोनों का एक ना एक दिन युद्ध तो होना ही था और यह निश्चित था कि विजय पृथ्वीराज चौहान को ही मिलती, इसीलिए इच्छिनी का विवाह पृथ्वीराज के साथ करने का निर्णय किया गया।

गौरी- "भोरा भीम व पृथ्वीराज चौहान के बीच क्या दुश्मनी है ? हमें विस्तार से बताओ मीर हुसैन, हम दुश्मन के दुश्मन को अपना मित्र बनाना पसंद करते हैं।"

मीर हुसैन पास रखे गिलास को उठाता है और तीन घूंट पानी की भरने के बाद पृथ्वीराज व भोरा भीम की दुश्मनी का कारण बताने लगता है।

पराक्रमी गुजरात नरेश भोरा भीम के पास हाथी, घोड़े, पैदल आदि कई प्रकार की विशाल सेनाएँ हैं। उसके चाचा का नाम सारंगदेव था, जो गुणों में देवताओं के समान प्रख्यात प्रशंसित था। सारंग के सात पुत्र प्रताप सिंह, अरिसिंह, गोकुलदास, गोविंदराव, हरीसिंह, श्याम सिंह व भगवान सिंह थे। ये सातों भाई भी महान योद्धा व पराक्रमी थे। सारंगदेव की मृत्यु के पश्चात उनका राज दरबार में जो पद था, वह प्रताप सिंह ने संभाला। ये सातों भाई राजा भीम की सेवा करते हुए ठाट-बाट से अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

एक बार भोरा भीम के दरबार में किसी ने यह सूचना पहुंचाई कि मेवाड़ के राजा ने गुजरात पर आक्रमण कर दिया है। यह सुनकर राजा भोरा भीम आग बबूला हो उठा और उसने युद्धभेरी बजवा दी। भोरा भीम की सेना ने मेवाड़ के राजा को युद्धभूमि में दिन में तारे दिखा दिये। शत्रुओं को परास्त कर राजा भोरा भीम ने नदी तट पर डेरा डाला और शिकार खेलने में व्यस्त हो गये। उसी दौरान साहन सिंहार नामक हाथी नदी पर आकर पानी पी रहा था, तो उसने शिकारियों का शोरगुल सुनकर हुड़दंग मचा दिया। इस हाथी ने अपने ऊपर बैठे महावत को सूंड से उठाकर पृथ्वी पर पटक दिया और नदी के दूसरे किनारे पर पानी पीते हुए एक और हाथी से भिड़ने के लिए दौड़ा। उस दौड़ते हुए हाथी के सम्मुख अचानक नदी पार करते हुए घोड़े पर सवार प्रताप सिंह आ गये। क्रोधित हाथी ने प्रताप सिंह के घोड़े को मार गिराया, इसी दौरान प्रताप सिंह घोड़े से गिरकर दूर जा पड़े, लेकिन गिरकर वे तुरंत

संभल गये और हाथी के सिर पर अपनी गदा से कई प्रहार किये। हाथी का सिर खरबूजे की तरह फट गया। इसी दौरान अरिसिंह अपने भाई की सहायता के लिए दौड़ा और उसकी मुठभेड़ दूसरे हाथी से हो गई, जिसे उसने अपने अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से मार गिराया। जब यह समाचार भोरा भीम को मालूम हुआ तो उन्होंने दोनों भाइयों को पुरस्कार देने की बजाय कहा- ''झूठ बोलते हो तुम लोग, तुमने अपनी जान बचाने के लिए उन दो हाथियों को नहीं मारा, बल्कि इसलिए मार दिया कि तुम अपने आपको मुझसे ज्यादा शक्तिशाली साबित करना चाहते हो। मेरे देश में तो कोई भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करता। जिस देश के सभी लोग शाकाहारी हों, उस देश के किसी भी मानव या पशु-पक्षी में बिना वजह क्रोध की भावना भड़क ही नहीं सकती। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि मेरे राज्य की सीमा से इसी समय बाहर निकल जाओ और जीवन भर मुझे अपना मुंह नहीं दिखाना।''

ये सातों भाई भोरा भीम की अहंकार भरी भ्रांतिपूर्ण बातों को सुनकर अत्यंत बेचैन हो उठे और फिर इन्होंने अपना सबकुछ त्यागकर पृथ्वीराज चौहान के दरबार में शरण ली। पृथ्वीराज ने इन सातों चालुक्यवंशी श्रेष्ठ वीरों को अपने हाथ से पट्टा लिखकर उनकी पसंद के कई ग्राम दान में दिये और अपने राज दरबार में इन्हें उचित पदों पर बैठाया।

पृथ्वीराज चौहान के प्रतापी चाचा कन्ह की प्रतिज्ञा है कि जो कोई उसके सामने मूछों पर हाथ फेरेगा वह जीवित नहीं बचेगा। एक दिन पृथ्वीराज के दरबार में प्रताप सिंह का हाथ अनायास ही मूछों पर चला गया, तो कन्ह ने तुरंत अपनी तलवार निकाल ली और प्रताप सिंह पर जानलेवा हमला किया। प्रताप सिंह वहीं धराशायी हो गये, तत्पश्चात् सभा में कोलाहल मच गया, हरिसिंह ने प्रताप सिंह को धरती पर पड़े देखा तो अपनी तलवार निकालकर कन्ह पर वार कर दिया। दोनों वीर एक-दूसरे पर टूट पड़े और पृथ्वीराज मूकदर्शक बना यह तमाशा देखता रहा और फिर महल में चला गया। दरबार में लड़ाई उग्र रूप लेती जा

रही थी। एक-दूसरे के पक्ष में सभी वीरों में घमासान शुरू हो गया। अरिसिंह ने तलवार निकालकर कन्ह के पक्ष में लड़ने वाले नरसिंह का सिर काट दिया और गुर्जर देश के राज़ा के पेट में गदा से प्रहार कर उसे भी मार डाला। चामुंडराय ने जब यह देखा तो वह गुस्से से पागल हो उठा और उसने एक ही झटके में अपनी तलवार से अरिसिंह की गर्दन उड़ा दी तथा गोविंद सिंह को भगा दिया। कन्ह ने भागते हुए गोविंद सिंह पर तलवार से वार कर उसकी भी हत्या कर दी। इस खून-खराबे में सातों भाइयों को मौत के घाट उतार दिया गया। जब यह समाचार चालुक्य नरेश भोरा भीम को मिला तो वह आग बबूला हो उठा और पृथ्वीराज से बदला लेने के लिए अब तक अवसर तलाश रहा है।''

गौरी- ''मीर हुसैन ! भोरा भीम के पास हमारी दोस्ती का फरमान भेज दो और कहो कि हम उसके लिए जान भी देने को तैयार हैं। लेकिन पहले यह बताओ कि पृथ्वीराज ने चौथा और पाँचवां विवाह क्यों रचाया?''

मीर हुसैन- ''परमार कुमारी इच्छिनी से विवाह के एक वर्ष पश्चात पृथ्वीराज ने देश में एकता कायम करने की नीति के तहत चन्द पुण्डीर से उसकी सुंदर कन्या का हाथ मांगा, जिसे चन्द पुण्डीर ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राजकार्य के बढ़ते खर्च को देखते हुए पृथ्वीराज को अधिक धन संपत्ति की जरूरत पड़ने लगी। धर्मात्मा राजा है ना, इसलिए जनता पर ज्यादा कर तो लगा नहीं सकता। सभी जानते हैं कि बयाना धन-संपत्ति में सबसे ज्यादा समृद्ध है, इसलिए पृथ्वीराज ने बयाना के राजा दाहिमराज दायमा से उसकी कन्या का हाथ मांगा। दाहिमराज ने खुशी के साथ स्वीकृति दे दी। बयाना दुर्ग वैभव का भंडार है। २००० सैनिक उसकी धन संपत्ति की रक्षा करते हैं। दाहिमराज के तीन पुत्र व दो पुत्रियाँ हैं। पहला पुत्र चामुण्डराय पहले से ही पृथ्वीराज की सेवा में है। बयानाधिपति ने अपनी दूसरी पुत्री की सगाई मेवाती मुगल से की थी। दोनों का विवाह चैत्र शुक्ल तीन को गोधूलि बेला में साथ-साथ ही

हुआ, परंतु तोरण का दस्तूर पहले पृथ्वीराज ने किया। इसी दाहिनी रानी से पृथ्वीराज को रयणसी देव पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। उसी के कारण रणवास में स्वर्ण थाल बजे और इतना धन दान में दिया गया कि गजनी तक के भिखारी भी माला-माल हो गये।''

गौरी ने गर्जना के साथ कहा- ''बस करो मीर ! हम सोने की चिड़िया भारत को अपनी गुलामी के पिंजरे में कैद करना चाहते हैं। इसके लिए हमें तुम्हारा त्याग और बलिदान चाहिए।''

मीर हुसैन ने आश्वासन देते हुए कहा- ''जहाँपनाह गुलाम के पास जो कुछ है, सब आपका ही दिया हुआ है। आप हुक्म तो करें अगर अपनी गर्दन अपने हाथ से काटकर आपके चरणों में न रख दी तो मेरा नाम मीर हुसैन नहीं?''

गौरी- ''शाबाश मीर हुसैन, हमें तुमसे यही उम्मीद है, हमें आपकी वफादारी पर नाज है, लेकिन हमें आपका सिर नहीं सहायता चाहिए।''

सिर झुकाकर मीर हुसैन ने कहा- ''हुक्म करें जहाँपनाह !''

गौरी- ''तुम पृथ्वीराज चौहान की शरण में चले जाओ और उनसे कह दो कि मुझे शाहबुद्दीन गौरी ने देश निकाला दे दिया है। अगर तुम मुझे शरण दे दोगे तो मैं तुम्हारा अहसान जीवनभर नहीं भूलूंगा। लेकिन ध्यान रहे मीर हुसैन, जब तुम पृथ्वीराज से मिलोगे, तो चित्ररेखा तुम्हारे साथ होनी चाहिए और वह भी परदे में नहीं सोलह श्रृंगार किये हुए तुम्हारे साथ हो। तुम पृथ्वीराज से चित्ररेखा के बारे में इतना ही बताओगे कि यह मेरी बहन है बस ! तुम्हें कुरान-ए-पाक की कसम मीर हुसैन, तुम्हें जिहाद के लिए प्रेमिका को बहन बनाना ही होगा। दिन में भइया तो रात को सईंया बनने की तुम्हें खुली छूट होगी। पृथ्वीराज चौहान बेशक वीर है। लेकिन हम उन्हें बचपन से जानते हैं, औरत की सुंदरता उनकी सबसे बड़ी कमजोरी है। चित्ररेखा की सुंदरता से मोहित होकर वह तुम्हें शरण अवश्य देगा। एक बार पृथ्वीराज ने यदि तुम्हें शरण दे दी, तो वह मेरे मांगने पर तुम्हें मुझे नहीं सौंपेगा, क्योंकि वह

आर्य है, प्राण दे सकता है, वचन नहीं और यही मैं चाहता हूँ। मुझे बस एक बहाना चाहिए उस काफिर पर हमला करने का, फिर तो मैं उसे कैद करने तक बार-बार ललकारता रहूँगा। जाओ तुम आज ही रवाना हो जाओ और भारत भूमि पर इस तरह कदम रखो जैसे परीक्षित के दरबार में कलयुग ने कदम रखा था।''

साम-दाम-दंड-भेद की नीति में निपुण मीर हुसैन चित्ररेखा को लेकर महाराजा पृथ्वीराज के राज दरबार में जा पहुंचा और भारत में शरण देने के लिए प्रार्थना की। भारत भूमि तो है ही दयालु व परोपकारी राजाओं की पवित्र भूमि। यहाँ की सभ्यता व संस्कृति ने तो विश्व को एक परिवार मानकर सबको सुंखी बनाने की कामना की है। फिर भला पृथ्वीराज अपनी संस्कृति कैसे भूलते?

इसी कारण पृथ्वीराज चौहान ने मीर हुसैन को शरण देने के साथ-साथ सुंदर भवन व पेंशन की घोषणा कर दी। इतना ही नहीं हांसी और हिसार के राज्य का पट्टा भी मीर हुसैन के नाम पर दिया गया। वाह री भारत भूमि ! एक म्लेच्छ को शरण तो दी ही, साथ में राजा भी बना दिया। इस घटना को देखकर शाहबुद्दीन गौरी के गुप्तचरों ने गजनी में जाकर शाह के सामने सारा वृत्तांत कह सुनाया। गौरी को तो भारत पर आक्रमण करने के लिए ठोस कारण चाहिए था और उस चालाक लोमड़ी ने ठोस कारण भी खुद पैदा कर दिया। शाहबुद्दीन गौरी ने अपने दूत द्वारा पृथ्वीराज को संदेश भेजा - ''यदि अपने प्राणों को बचाना चाहते हो तो मीर हुसैन को अपने राज्य से निकाल दो।''

गौरी जानता था कि भारतीय राजा वचन के पक्के होते हैं, इसलिए पृथ्वीराज चौहान शरणार्थी मीर हुसैन को कदाचित् भारत भूमि से नहीं निकालेंगे। और यही कारण भारत पर आक्रमण करने के लिए काफी होगा।

पृथ्वीराज चौहान ने गौरी के दूत से कहा- ''हमने याचक को शरण देकर अपने धर्म का पालन किया है। हम शरणार्थी के साथ विश्वासघात

नहीं कर सकते। गौरी से जाकर कह दो कि वह जो करना चाहे कर ले।''

जब शाहबुद्दीन गौरी ने अपने दूत के मुख से पृथ्वीराज चौहान का उत्तर सुना तो अपने वयोवृद्ध बुद्धिमान शेख को बुलाया और उसे ३०० घुड़सवार और रथ दिये तथा पृथ्वीराज चौहान के अधीन नागोर में हुसैन के पास जाने के लिए कहा। अरब शेख को भारत में भेजने का कारण यही था कि शाहबुद्दीन गौरी आक्रमण करने से पहले यह जानना चाहता था कि यदि दिल्ली पर आक्रमण किया जाए तो क्या रास्ते में जाती हुई उसकी सेना को काई टोकेगा या नहीं ? पहले वह शेख नागोर पहुंचा और मीर हुसैन से गुप्त मंत्रणा करने के बाद पृथ्वीराज चौहान से जाकर मिला। पृथ्वीराज को जब शेख के आने की सूचना मिली तो उन्होंने दिल्ली के लाल कोट में अपने सामंतों को उचित मंत्रणा करने के लिए बुलाया। शेख भी मंत्रिपरिषद की बैठक में उपस्थित थे।

शेख ने पृथ्वीराज चौहान से कहा- ''पृथ्वीपति हमारे शाह गौरी ने कहा है कि यदि मीर हुसैन को भारत से नहीं निकाला गया, तो आक्रमण करके दिल्ली को खाक में मिला दिया जाएगा।''

पृथ्वीराज चौहान ने शेख की बात सुन उसमें कहा- ''हमने भी चूड़ियाँ नहीं पहन रखी, घोरी को मच्छर की तरह मसलकर रख देंगे। जाकर कह दो उस घोरी-वोरी से, मीर हुसैन भारत से कभी बहिष्कृत नहीं होगा। शरणार्थी होने के साथ-साथ वह हमारा रिश्तेदार भी बनने वाला है, हम उसकी खूबसूरत बहन चित्ररेखा को अपनी पटरानी बनाना चाहते हैं।''

पृथ्वीराज की बात सुनकर सभा में शेख के मुख से सच निकल ही गया- ''महाराज जिस चित्ररेखा को आप मीर हुसैन की बहन समझते हो, वह उसकी प्रेमिका है।''

इतना सुनते ही पृथ्वीराज की आँखें क्रोध से लाल हो उठी, उसने कहा- ''खामोश......शेख यदि यही बात किसी और ने कही होती तो हम उसकी गर्दन इसी वक्त धड़ से अलग कर देते ! तुम दूत हो इसलिए

तुम्हारी जान बख्श दी। शाहबुद्दीन गौरी से जाकर कह दो......रिश्ते में तो तुम हमारे नाना के बेटे लगते हो। लेकिन हम तुम्हें मामा मानने से इंकार करते हैं, क्योंकि तुम्हारी माँ हमारे नाना की रखेल थी, पटरानी या महारानी नहीं। एक रखेल के बेटे को अपनी हद में रहना चाहिए। राजा-महाराजाओं की दुश्मनी भी बराबरी के योद्धा व सम्राटों से होती है, रखेल के पुत्रों से नहीं।'' अरब शेख पृथ्वीराज चौहान की क्रोधित वाणी को सुनकर दुम दबाकर गजनी भाग गया और शाहबुद्दीन गौरी से सारा वृत्तांत कह सुनाया। सुल्तान गौरी यह सारी बातें सुनकर रात भर जाग कर बड़बड़ाता रहा। सात घडी रात शेष रहने पर उसने उठकर लड़ाई के नगाड़े बजाने की आज्ञा दे दी। नगाड़ों पर युद्ध सूचक तीव्र भयंकर चोट पड़ी। गौरी कवच धारण कर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो अपने घोड़े पर सवार हो गया। सभी खान, मीर, उमराव व सैनिक भी अपने घोड़ों पर सवार हो गये। भयानक भावों से उत्तेजित करते हुए युद्ध के समय बजाने वाले सभी बाजे बजने लगे। गौरी ने अपने हृदय तथा बुद्धि से भली प्रकार मनौतियाँ मनाई, फिर उसकी हृष्ट-पुष्ट नोजवानों की सेना प्रयाण करने के लिए एक जगह एकत्रित हुई। सबने एकसाथ नमाज अदा की और खुदा से हिंदुस्तान पर फतह करने की दुआ मांगी।



गौरी ने सेना को संबोधित करते हुए कहा- "मेरे बहादुर वीरों, आज हम दिल्ली को फतह करने जा रहे हैं, यह युद्ध हमारी निजी महत्वाकांक्षा नहीं, बल्कि हिंदुस्तान पर आक्रमण करने में मेरा मकसद काफिरों के विरुद्ध जिहाद करना है। काफिरों को मुसलमान बनाना और मुहम्मद के असूलों पर चलाना है। भारत के अनेक मत-संप्रदायों को दबाकर उसमें नबी के मजहब की बुनियाद डालनी है। मंदिरों को तोड़कर मस्जिदों में बदलना है और मूर्तियों को मस्जिद की पैड़ियों में सजाना है। ऐसा सब करके हम गाजी और मुजाहिद तथा खुदा के सही बंदे बन सकेंगे। अल्लाह हू अकबर !"

सेना भी जोर से अल्लाह हू अकबर का नारा लगाती है और दिल्ली की तरफ कूच कर देती है।

घोड़ों की पीठ पर लोहे की झालरों के शब्द सुन-सुनकर सेना के सिपाहियों के मुख अरुण कपोलों की तरह वीरता एवं जोश से रक्तिम होते जा रहे थे। गौरी की सेना का भयंकर दल उमड़ता दिल्ली की ओर बढ़ता चला आ रहा था। क्षितिज का रंग कव्वे की तरह काला पड़ गया था, घोड़ों के टापों की वजह से उठी धूल से दसों दिशाएं धूलिसात हो गयी, सबकुछ धुंधला दृष्टिगोचर होने लगा। सूर्य के धूल से ढक जाने के कारण रात प्रतीत होने लगी।

शाहबुद्दीन गौरी की सेना के सामने गीदड़ों का एक समूह दिखाई दिया, जिसने विरोधी मार्ग में चलते हुए सेना का रास्ता काट दिया। ऊपर अगणित गीध आकर मंडराने लगे तथा पंखों को फैलाकर भयंकर रूप में चिल्लाने लगे।

अपशकुन देख तातार खाँ ने गौरी के अरबी घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे ठहराया और फिर सुल्तान से कहा- "आज शकुन अच्छे नहीं हैं शहंशाह! हमें ठहर जाना चाहिए। आज रात यहीं विश्राम करके अच्छा शकुन देखकर लड़ाई के लिए कूच करना हितकारी होगा।"

तातार की बात सुनकर शाहबुद्दीन गौरी ने कहा- "तुम लोग कायर

हो। मृत्यु के भय से तुम्हारा तेज नष्ट हो गया है। पृथ्वीराज भला हमसे किस बूते पर युद्ध करेगा, उसके पास इतना सैन्य बल है ही कहाँ, जो वह हमसे जूझ सकेगा। मैं युद्ध में अकेला ही सभी चौहान सैनिकों को मार डालूँगा, पृथ्वीराज को पकड़कर उसे चौहानो (श्मशान) में पहुंचा दूँगा, तुम अपशकुन के नाम पर क्या शत्रु का भय दिखाते हो, मेरी अपराजेय सेना के सामने पृथ्वीराज टिक ही कैसे सकेगा।''

शाहबुद्दीन गौरी जोश में आकर उछला फिर घोड़े की पीठ पर सवार हो गया तथा नगाड़ों की भयंकर टंकार का शब्द सर्वत्र गूंज उठता है।

सेना के चलने से जल स्थान मिट्टी के उड़-उड़ कर गिरने से कीचड़ में तब्दील हो गये और जहाँ स्थल था, वहाँ वीरों की पदचापों से तथा घोड़ों की टापों के बीच धंसने से थल में पानी निकल आया। सेना की कतार ऊबड़-खाबड़ भूमि पर मार्ग बनाती हुई आगे बढ़ने लगी।

हाथियों की पीठ पर पड़ी लोहे की झालरों तथा गले में बंधे घंटों का भीषण रव छा रहा था। हाथियों के चिंघाड़ने तथा दौड़ने से भयंकर शब्द उत्पन्न हो रहे थे। घोड़े हिनहिनाकर अपनी लगाम कडकने लगे। उनकी पीठों पर बगल में लटकते हुए चांदी के तरकसों से भी खड़खड़ का स्वर फूट रहा था।

गौरी के सभी सैनिकों के पास तलवार भाले तो थे ही, धनुष के साथ अधिक से अधिक संख्या में बाण भी थे। तोपें और बारूद की गोली वाले तमंचे भी उनके पास थे। काले सिर वाले जवान हों या सफेद बाल वाले अधेड़, सभी ने अपने-अपने सिरों पर रंग-बिरंगी पगड़ियाँ बांधी हुई थी।

श्रेष्ठ भटों से सजी हुई अमीरों की सेना के आगे चारण अपनी विरुदावली गाते हुए चल रहे थे। वे हाथों में रंग-बिरंगे झंडे लिए हुए नागों की तरह फुंकारते अपनी तलवारों को झिलमिलाते हुए चल रहे थे।

मोहम्मद गौरी की सेना का यह सारा वृत्तांत सोकर उठे महाभट्ट कैमास को गुप्तचर ने कह सुनाया।

कैमास ने सेना को युद्ध के लिए तैयार होने की आज्ञा जारी की और

दुर्ग में पृथ्वीराज के पास गुप्त मंत्रणा करने चले गये।

इधर शाहबुद्दीन गौरी लड़ाई के लिए मैदान में आकर डट गये थे, तो उधर उसने देखा कि धूल उड़कर आकाश में छा गयी, उसे लगा कोई भयंकर तूफान आ रहा है। लेकिन स्थिति तब स्पष्ट हो गयी, जब उसे पृथ्वीराज चौहान की सेना आती दिखाई पड़ी। शाहबुद्दीन गौरी जो अपनी सेना को विश्व की सबसे बड़ी सेना समझ बैठा था, जब उसने पृथ्वीराज की सेना देखी तो वह होशो-हवास खो बैठा, उसे लगा कि उसकी सेना तो चौहानों की सेना के आगे मुट्ठीभर है। इसलिए उसका व उसके सैनिकों का अंत होना निश्चित है। फिर भी वह सेना का हौसला बढ़ाता हुआ पृथ्वीराज की सेना से जा भिड़ा और दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया।

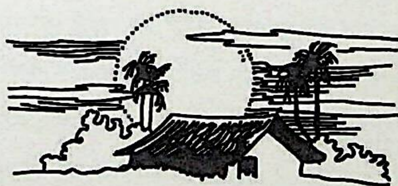
अपनी सेना को गाजर-मूली की तरह कटते देख मोहम्मद गौरी की आशंका यकीन में बदल गयी कि उसकी हार निश्चित है, इसलिए वह जोर से चिल्लाया-''वापस चलो.........मेरे सैनिकों, तुम्हें खुदा का वास्ता........... जान बचानी है तो भागो............ गजनी भागो............''
और इतना सुनते ही गौरी की सेना में भगदड़ मच गयी, लेकिन भागते



हुए गौरी को पृथ्वीराज ने पकड़ लिया और व्यंग्यपूर्वक कहा- "कहिए मेहरबान ! आपको क्या सजा दी जाए ?"

गौरी ने गिड़गिड़ाकर कहा- "मुझे क्षमा करें महाराज ! मैं बहुत शर्मिंदा हूँ, अब भारत माता की तरफ कभी भी आँख उठाकर नहीं देखूंगा। मेरा दिल्ली पर कोई दावा नहीं, क्योंकि मेरी माँ ने दूसरा खसम करके मुझे नया बाप दे दिया, मैं अनंगपाल का उत्तराधिकारी नहीं....... आप ही दिल्ली के वास्तविक सम्राट हैं। आप महान हैं, वीर हैं। महाराज खादिम की गलती पर न जाइये मुझे क्षमा कर दीजिए।"

पृथ्वीराज ने क्रोध से कहा- "जा कमीने दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से! हमसे टक्कर लेने के लिए हमारी छोटी नानी जान का और दूध पीकर आ।"[१] और गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को सिर झुकाकर प्रणाम किया व गजनी को प्रस्थान किया।



१. वंशचरितावली

(५)

गजनी जाकर शाहबुद्दीन गौरी ने दरबार लगाया। दरबार में उच्च सिंहासन पर गौरी तथा उसके पास बड़ा काजी बैठा था। तातार खां, आरब खां, उसका बड़ा भाई मीर जमाम खाँ, कमाम खाँ, खुरासान खाँ, हाजी खाँ तथा तीनों भाइयों समेत मान खाँ, गजनी खाँ, मुहम्मत खाँ, मीर खाँ, रुस्तक खाँ, गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक, कुबाचा, यल्दूज, बख्तियार आदि अपनी-अपनी जगह विराजमान थे। सभी शांत व शोक की मुद्रा में थे कि तभी गुस्से से दांत दबाते हुए व दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भींचते हुए शाहबुद्दीन गौरी ने नश्तर खाँ की तरफ नजरें उठाकर कहा- "मुझे सख्त अफसोस है नस्तर खाँ कि पृथ्वीराज चौहान की वीरता के सामने पराजित होकर जान की भीख मांगकर भय के भूत से दुम दबाकर भागना पड़ा, लेकिन मेरा जमीर अभी भी नहीं कहता कि मैं हार गया हूँ, सोने की चिड़िया हिंदुस्तान का मोह छोड़े से नहीं छूट पा रहा है। उसके नूर की दीदार की चाह ने मुझ पर नशा सा कर दिया है.....(फिर शून्य में देखते हुए प्रसन्न होकर) भारत की संपन्नता, वैभवता और राजसी ठाट-बाट और सबसे बढ़कर दिल्ली का वारिस मेरे सिवाय और कौन हो सकता है ?"

नश्तर खाँ- "आप जी छोटा न कीजिए आलीजाह ! आप तो इस्लाम कबूल करने के बाद अकेले नौ मुसलमानों के बराबर हो गये हैं। अगर हौसला कायम रखेंगे तो एक दिन भारत तो क्या दुनियाभर में आपका साम्राज्य कायम होगा।"

तातार खाँ ने नस्तर खाँ का समर्थन करते हुए कहा- "हम हार के अपमान को नहीं सह सकते आलीजाह ! पृथ्वीराज से दोबारा युद्ध करके उस काफिर को मारना ही होगा।"

तातार खाँ की बात का विरोध करते हुए खुरासान खाँ ने कहा-

"धैर्यपूर्वक विचार करो, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान सशक्त है। हम सभी उनसे एक बार आक्रमण करके अनुभव प्राप्त कर चुके हैं कि चौहान का एक-एक वीर ऐसा पराक्रमी है कि जब वह अपने आराध्य का नाम लेकर भिड़ता है, तो प्रारंभ में वह एक दिखाई देता है, चलते समय पच्चीस, भिड़ते समय सौ और शास्त्राघात करते समय एक हजार सदृश्य दृष्टिगोचर होता है। उनके धड़ बिना मस्तक तलवार चलाते हैं। सिर कटने पर शोषित धारा ऊपर ही जाती है। राजपूत योद्धाओं का तो पराक्रम ही अद्‌भुत है।"

दुश्मनों की वीरता का बखान सुनकर तातार खाँ बोला- "जो असमय रोते हैं, वे मरने के भय से क्यों नहीं डरेंगे ?"

इस पर आरब खाँ ने कहा- 'आप तो लड़ाई के डर से बीमारी का बहाना लेकर खटिया तोड़ने लगे थे। आपने उन्हें अभी देखा ही कहाँ है? वहाँ महामंत्री कैमास का मार्गदर्शन है। कविचंद, ताहर, समर विक्रम सिंह, कन्हराय आदि सामंतों में तेज, बल, इष्ट, स्वामी धर्म में अनुरक्तता आदि अतुलनीय गुण हैं।"

इसी समय गौरी के दरबार में एक गुप्तचर प्रवेश करता है। दरबार में सिर झुकाकर गुप्तचर ने कहा- "आलीजाह का इस्तकबाल बुलंद हो।"

गौरी ने उत्सुकता से पूछा- "क्या खबर लाए हो गुप्तचर ?"

गुप्तचर- "आलीजाह मीर हुसैन ने यह पत्र आपके लिए भेजा है।" और दूत आगे बढ़कर वह गुप्त पत्र गौरी को थमा देता है। गौरी पास बैठे मीर को वह पत्र पढ़ने के लिए दे देता है। मीर पत्र जोर-जोर से पढ़ना शुरू करता है--

शहंशाह गजनी को गुलाम मीर हुसैन का आदाब अर्ज ! सुल्तान आप जल्द से जल्द शाही फरमान जारी कर हिंदुस्तान पर चढ़ाई कर दें, क्योंकि यही मौका है जब आप पृथ्वीराज को सुपुर्द-ए-खाक कर सकते हैं। विस्तृत समाचार इस प्रकार है :-

दिल्ली से पूर्व दिशा में समुद्र शिखर नाम का एक विशाल दुर्ग है। वहाँ का राजा है यादव वंशी विजयपाल। विजयपाल की कन्या पद्मावती अत्यंत सुंदर है। पद्मावती की सगाई कुमायूँगढ़ के कुमुदराय के साथ तय की गयी है, लेकिन यादव कुमारी पृथ्वीराज चौहान की वीरता से मुग्ध होकर अपना हृदय उन्हें दे बैठी है और उसने पृथ्वीराज को संदेश भी भिजवा दिया है कि हे आर्य पुत्र आप श्रीकृष्ण की भाँति मुझ रुक्मिणी का हरण कर पाणिग्रहण करो, मैं आपकी भार्या हूँ।[1]

पृथ्वीराज दिल्ली का दुर्गाध्यक्ष चामुण्डराय को बनाकर पद्मावती के अपहरण के उद्योग में लग गया है। पद्मावती का विवाह ११३० शक संवत अर्थात् इसी वर्ष इसी महीने की शुक्ल पक्ष द्वादशी की तिथि को होना निश्चित हुआ है और इसी दिन प्रातःकाल नगर में स्थित शिव मंदिर में पद्मावती पूजा करने आयेगी, वहाँ से उसका अपहरण करने की योजना पृथ्वीराज ने बनाई है। इस पत्र के साथ संक्षिप्त रास्ते व पृथ्वीराज की गुप्त योजना का संपूर्ण विवरण भी संलग्न है।

शेष कुशल !

आपका गुलाम

मीर हुसैन

शाहबुद्दीन गौरी चारों ओर देखकर फिर राक्षसों की तरह हंसा और तुरंत फरमान जारी किया "अब हमें हिंदुस्तान पर फतह हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता, कूच की तैयारी की जाए।"[2]



१. वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान, पृ.६११

२. वंश चरितावली २५

(६)

सारे समुद्र शिखर में उत्साह छाया हुआ है। सभी लोगों ने अपने-अपने घरों में विचित्र मनमोहक मंडप व वंदनवारों की सजावट की है, क्योंकि आज उनकी प्यारी राजकुमारी पद्मावती का विवाह संस्कार संपन्न होना है। लेकिन लगता है कि पद्मावती इस विवाह से खुश नहीं है, क्योंकि वह चिंतित, डरी हुई व सहमी सी पलंग पर बैठी है, अचानक ही उसकी सहेली रमणी ने आकर कहा- "काश मेरी बारात भी ऐसी ही सज-धज कर आती। दस हजार घुड़सवार, तैंतीस डेरों में पड़ाव डालते हुए पैदल तथा पाँच सौ विशाल हाथी, जिनके गंड स्थल से निरंतर मंद चू रहा है और जिसके काले शरीरों से बाहर निकले श्वेत दांत ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, जैसे काले पहाड़ों पर बगुलों की पंक्तियाँ बैठी हों। बारात के आगे-आगे तीव्र से चलने वाले तौखारी अपूव चल रहे हैं, जिनके सिरों पर कलंगी और गले घुंघरूओं से सजे हुए हैं। अनुपम हीरे-मोतियों से जड़ी कंठियाँ उनके कंठ में पड़ी हैं और उनकी पीठ पर पचरंगी लोहे की ढाल उनके चलने से हिलहिलकर झलक रही है। सभी प्रकार के मंगल सूचक बाजे पंच स्वर में बज रहे हैं, हिरणों को सम्मोहित करने वाली सहस्रों शहनाइयों के स्वर फूट रहे हैं।"

"बस करो रमणी, मुझे तो ये बता मेरे पृथ्वीपति चौहान के क्या समाचार हैं, वे मुझे हरण करने आ गये हैं या नहीं, यदि उन्होंने मेरा हरण करके अपनी महारानी नहीं बनाया तो सच रमणे मैं आत्महत्या कर लूँगी, लेकिन कभी किसी और की बाहों में नहीं जाऊँगी।" -- आँखों में झलकते हुए आँसुओं के साथ पद्मावती ने कहा।

रमणी ने उत्तर दिया- "चिंता न करें राजकुमारी ! आपके आर्य पुत्र प्राणेश्वर पृथ्वीपति चौहान आ गये हैं, वे साधु मंडली के वेश में शिव मंदिर में आपकी राह देख रहे हैं। किसी भी चुनौती से निपटने के लिए

उनके हजारों सैनिक गुप्त वेश में नगर में ही हैं।''

पृथ्वीराज के आने का संदेश सुनकर पद्मावती ने अपने शरीर से मैले वस्त्रों को उतार फेंका और फिर उस चन्द्रमुखी ने स्नान कर नवीन वस्त्र धारण किये और सोलह श्रृंगार किया। आभूषण मंगाकर नख से सिर तक के सभी अंगों को सजाया, जैसे कामदेव ने अपनी सेना को सुसज्जित किया हो।

पद्मावती सोने के थाल को मोतियों से भरकर उसमें जगमगाता हुआ दीपक जलाकर, साथ में एक हजार नवयुवतियों को लेकर रुक्मिणी के समान अपनी मंदमन्थर गति से हँसों का मान-मर्दन करती हुई शिव मंदिर की ओर चली।

शिव मंदिर पहुंचकर पद्मावती ने पार्वती को पूजकर भगवान शंकर का ध्यान किया, फिर शिव-पार्वती की प्रदक्षिणा कर उनको प्रणाम किया और वहाँ पहले से ही मौजूद पृथ्वीराज की ओर संकेत करते हुए कहा- ''हे ईश्वर मैं उन्हें पाना चाहती हूँ, पद्मावती केवल पृथ्वीराज के चरणों की ही दासी बनना चाहती है।''

फिर पद्मावती ने बार-बार पृथ्वीराज की ओर देखा और मुस्कुराकर बार-बार उसके रूप पर मोहित होकर अपने मुख पर लाज का घूंघट डाल लिया। घूंघट डालते ही पृथ्वीराज ने पद्मावती का हाथ पकड़कर घोड़े की पीठ पर चढ़ा लिया और दिल्ली की ओर चल पड़ा।

क्षणभर में ही सारे नगर में खबर फैल गयी कि महाराजा पृथ्वीराज चौहान ने पद्मावती का हरण कर लिया है। पद्मावती के हरण का समाचार सुनते ही समुद्र शिखर में युद्ध के भयानक बाजे बज उठे। घोड़ों पर जीन काठियाँ तथा हाथियों पर हौदे ढाल दिये गये। शस्त्रों से सजे हुए सैनिक चारों दिशाओं में दौड़े और वे जोर-जोर से पुकारने लगे- ''शत्रु को पकड़ लो, शत्रु को पकड़ लो.....''

आगे-आगे पृथ्वीराज चौहान पद्मावती को लिये जा रहा था, तो पीछे-पीछे राजा विजयपाल और कुमुदराय की सारी सेना उसका पीछा

कर रही थी। शत्रु की सेना को पीछा करते और समीप आया देखकर पृथ्वीराज चौहान ने अपने घोड़े की लगाम को उलटा मोड़ दिया। दोनों पक्षों में युद्ध छिड़ गया। गगनचारी सूर्य युद्ध भूमि में योद्धाओं की गति तथा घोड़ों की टापों से उड़ी धूल के आवरण से ढककर फीका पड़ गया। सभी सामंत और शूरवीर युद्ध में महाकाल जैसा भयंकर रूप धारण किये हुए थे और अपनी तलवारों से एक-दूसरे पर भीषण प्रहार कर रहे थे। धनुषों से अनगिनत बाण छूट रहे थे। तलवार की धार की तरह पैने तीर कवचों से ढके शरीरों में घुस रहे थे। बड़ा घमासान युद्ध हुआ। बड़े-बड़े योद्धा भी सदा के लिए रणभूमि में सो गये, खून की धारा युद्धभूमि में बह चली और उससे रंगकर वहाँ की मिट्टी भी लाल हो गयी।

पृथ्वीराज की सेना ने कुमुदराय की बारात के सभी योद्धाओं को मार गिराया। शत्रु के कटे सिरों तथा कबन्धों से युद्धभूमि पट गयी।

रण क्षेत्र में शत्रुओं की लोथे पड़ी छोड़कर विजयी होकर पृथ्वीराज चौहान ने अपना रुख दिल्ली की ओर किया, लेकिन पृथ्वीराज कुछ ही दूर चले थे कि उनसे युद्ध करने के लिए शाहबुद्दीन गौरी की सेना आ अड़ी। एक और आफत आगे आई देख पृथ्वीराज चौहान ने अपने हाथ में तलवार पकड़ी और गौरी की सेना पर टूट पडे।

गौरी के सैनिक तो गाजर-मूली की तरह कटने ही लगे, पृथ्वीराज की सेना ने हाथियों के कुम्भस्थलों को अपनी तलवार से चीर दिया। हाथी अपनी सूंड कट जाने के कारण चिंघाड़ मारकर भागने लगे। सेना की हलचल तथा हाथियों के भागने से वहाँ इतनी धूल उड़ी कि रात्रि जैसा वातावरण हो गया और दिशाओं का ज्ञान अंधेरे में खो गया। आँखों से कुछ भी नहीं दीख पड़ता था। अवसर का लाभ उठाते हुए पृथ्वीराज चौहान ने गौरी की गर्दन में अपना धनुष डालकर उसे पकड़ लिया।

गौरी को कैद कर पृथ्वीराज चौहान दिल्ली के निकट अष्टभुजा देवी के मंदिर में पहुंचे। पृथ्वीराज ने दुर्गा मंदिर में पद्मावती से वैदिक पद्धति

से विवाह रचाया और योगी व संन्यासियों को दान व प्रसाद का वितरण करने लगे। तभी जंजीरों में जकड़े हुए गौरी ने पृथ्वीराज से कहा- ''महाराज आप तो कर्ण से भी बढ़कर दानी हैं, वीर हैं, विश्व विजेता हैं। शुभ विवाह के अवसर पर आप इतना दान कर रहे हैं, क्या मुझ फकीर की झोली में थोड़ी जकात नहीं डालेंगे?''

पृथ्वीराज ने कहा- ''कहो-कहो गजनीपति, आज हम बहुत खुश हैं, मांगो तुम्हें क्या चाहिए ?''

गौरी ने आशा भरी दृष्टि से कहा- ''महाराज मुझे कैद से मुक्ति चाहिए।''

इतना सुनते ही पृथ्वीराज ने गरजकर कहा- ''फिर से उत्पात मचाने के लिए...असंभव ! धूर्त मैं तुम्हें कई बार जीवनदान दे चुका हूँ, लेकिन तुम बार-बार मेरी ही पीठ में छुरा घोंपने की कोशिश करते हो।''

गौरी- ''मगर महाराज आप वचन दे चुके हैं और राजपूत प्राण देकर भी वचनों का पालन करते हैं, फिर आप तो राजपूतों के सम्राटों के भी सम्राट हैं।''

पृथ्वीराज ने मुट्ठी भींचते हुए कहा- ''वचन-वचन-वचन ! हाँ हम वचन दे चुके हैं, तुम्हें मुक्त करते हैं, लेकिन युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिए तुम्हें साठ हजार सुंदर सुस्वस्थ घोड़े हमें देने होंगे?'

गौरी ने खुशी के साथ उत्तर दिया- ''जो आज्ञा सम्राट !''

शाहबुद्दीन गौरी को मुक्त कर पृथ्वीराज ने अपने दुर्ग में प्रवेश किया। उनके योद्धा, सामंत और परिजन अत्यंत हर्षित हुएं। दूर-दूर तक भीषण स्वर में विजय के नगाड़े बज उठे। चंद्रमुखी मृगनयनी नवयुवतियाँ अपने सिर पर मंगल सूचक स्वर्ण कलश लेकर स्वागत के लिए राजा के सम्मुख आ उपस्थित हुई। सोने के थालों में नाना प्रकार के मोतियों को सजाकर वे चन्द्रमुखी श्रेष्ठ नगर रमणिया सुखपूर्वक आनंद बरसाती हुई अपने मधुर कंठों से गीत गाने लगी। पृथ्वीराज चौहान के सिर पर मुकुट पहनाया गया, पुष्पों की वर्षा के बीच मस्तक पर तिलक लगाया गया और सेवकगण चंवर ढुलाने लगे।

(७)

गजनीपति शाहबुद्दीन गौरी पृथ्वीराज चौहान से बार-बार मात खाने के बाद भी अपने दरबारियों से विचार-विमर्श कर रहे थे कि दिल्ली पर कैसे फतह हासिल की जाए ? तभी उसके दरबार में मीर हुसैन का दूत प्रवेश करता है, गौरी को प्रणाम करते हुए उसने कहा- "शहंशाह-ए-जहान का इस्तकबाल बुलंद हो, जन्नत की हूरें आलीजाह की गुलामी करने को बेजार हैं।"

"क्या पैगाम लाए हो दूत।"

"आलीजाह पृथ्वीराज ने देवगिरि को भी अपने राज्य में मिला लिया है।"

"यह पैगाम है या हमारे जले पर नमक छिड़कना ?"

"आलीजाह आप सारी बातें कहने की इजाजत तो दें ?"

"कहो जो कहना चाहतो हो।"

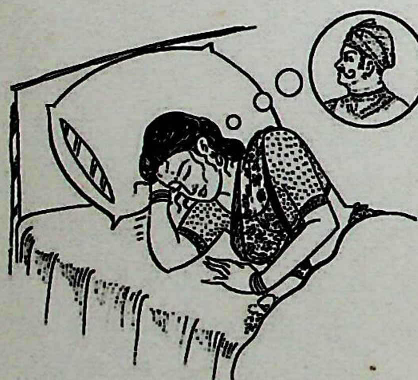
"आलीजाह ! एक बार पृथ्वीराज के दरबार में एक नर्तक आया। जो देवगिरि का निवासी था। उस नट ने तँवरपाल की कुँवरी शशिवृत्ता के रूप लावण्य की पृथ्वीराज से चर्चा की। सम्राट को नट से शशिवृत्ता का वृत्तांत सुनकर स्रोता अनुराग उत्पन्न हो गया। नट ने सम्राट को विश्वास दिलाया कि वह इस बात का प्रयत्न करेगा कि शशिवृत्ता सम्राट की अर्धांगिनी बने, लेकिन कुछ दिन बाद पृथ्वीराज को पता चला कि शशिवृत्ता की सगाई उसके शत्रु जयचंद राठौड़ के भाई वीरचंद से तय की गई है। शशिवृत्ता को अपनाने की इच्छा से पृथ्वीराज चौहान ने चतुरंगिनी सेना सहित इसी वर्ष माघ कृष्ण पंचमी शुक्रवार को देवगिरि की ओर प्रस्थान किया। उसने शिवपूजा करती हुई शशिवृत्ता का अपहरण कर लिया। लेकिन इस दौरान उसे जयचंद की सेना से भयंकर युद्ध करना पड़ा। दुर्भाग्य से जयचंद हार गया और पृथ्वीराज माघ शुक्ल त्रयोदशी को अपनी अब्याही परिणिता शशिवृत्ता को लेकर दिल्ली पहुंचा।

गौरी हंसमुख मुद्रा में- "वाह दूत वाह ! पृथ्वीराज के दो शत्रु और बढ़े अर्थात हमें दो मित्र मिले। नारी आसक्ति एक दिन पृथ्वीराज के पतन का कारण बनकर रहेगी, पृथ्वीराज नारी को भोग विलास की वस्तु समझ बैठा है, जबकि नारी भोग-विलास की वस्तु नहीं, वंशवृद्धि की अमर बेल होती है।"

दूत- "आलीजाह अभी असली बात तो मैंने कहनी शुरू ही नहीं की?"

गौरी ने उत्सुकता से निर्देश दिया-- "कहो दूत कहो ! सब कुछ कहो! कुछ भूल गये हो तो याद करके कहो ! बस इतना ध्यान रहे हम पृथ्वीराज की वीरता नहीं, उसकी कमजोरियों को जानना पसंद करते हैं, क्योंकि कोई भी योद्धा दुश्मन की कमजोरियों का लाभ उठाकर ही विजय पाता है।"

दूत सिर झुकाकर फिर ऊपर करता है और अपनी बात पूरी करने लगता है- "सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने देवगिरि देवास के यदुवंशी राजा भानूराय को रणथम्भौर के दुर्ग में शरणागत के रूप में रखा हुआ है, क्योंकि उसकी बड़ी पुत्री का विवाह पृथ्वीराज के साथ होने के पश्चात पड़ोसी राजा उसकी दूसरी कन्या हँसवती के हरण की योजनाएँ बना रहे थे। शिशुपाल के वंशज चंदेरी राज पंचायन ने रणथम्भौर भानूराय के पास दूत भेजकर हँसवती का हाथ मांगा, परंतु भानूराय ने स्पष्ट ना करते हुए कहा- "मेरी कन्या ने अपने हृदय में पृथ्वीराज को बैठा लिया है, वह जाग्रत अवस्था में ही नहीं, बल्कि सवप्न में भी हमेशा पृथ्वीराज चौहान का ध्यान करती है। चौहान को वह अपना परमेश्वर मान बैठी है। इसलिए मैं कन्या की इच्छा के विपरीत यह संबंध तय



नहीं करूंगा। क्षत्रिय की कन्या से कोई बलात ब्याहने की इच्छा करे, उससे क्षत्रिय मुकाबला ही करते हैं, संपर्क नहीं, यह चन्देरी राज को ज्ञात होना चाहिए।'' कुछ विराम के बाद फिर दूत ने कहा- ''आलीजाह! शत्रु का शत्रु मित्र होता है, इसलिए मीर हुसैन के कहने पर मैं चन्देरी राज का भी पैगाम लाया हूँ।''

शाहबुद्दीन गौरी ने खुशी से कहा- ''वाह ! दूत वाह ! भारत में आपसी फूट आज अंगद के पैर की तरह जड़ लगाकर वह विशाल वृक्ष बन बैठी है। भारतीयों की अवनति का सबसे बड़ा कारण आपसी फूट ही है। कहो देशद्रोही चन्देरी राज का क्या पैगाम है दूत !''

दूत ने पुनः कहा- ''आलीजाह चन्देरी राज भानूराय तथा पृथ्वीराज से जंग लड़कर हँसवती यदुवानी से विवाह रचाना चाहता है। उन्होंने पैगाम भेजा है कि यदि युद्ध में आप हमारा साथ देंगे, तो इस बार पृथ्वीराज की हार पक्की है और आपके लिए दिल्ली का तख्ते-ताज इंतजार कर रहा है। पृथ्वीराज ने सारंगीपुर के राजा भीम परमार की पुत्री इन्द्रावती से भी विवाह पक्का किया है और जब पृथ्वीराज इन्द्रावती को ब्याहने जाएगा, तो चन्देरी व गजनी की सेना रणथम्भौर पर आक्रमण कर हँसवती का अपहरण कर लेंगी, पृथ्वीराज हँसवती की कदाचित मदद नहीं कर सकता, क्योंकि जिस घड़ी में वह इन्द्रावती से विवाह रचा रहा होगा, उसी घड़ी में चालुक्य भीम चित्तौड़ पर हमला करेगा। चारों तरफ संकटों से घिरे पृथ्वीराज का पतन निश्चित है।''

गौरी ने खुशी से कहा- ''वाह ! दूत वाह ! इतना शुभ पैगाम हमने आज तक नहीं सुना ! तातार ! दूत को पुरस्कार में सजा-ए-मौत दी जाए, क्योंकि दूत की जात भी काफिर है। यथा राजा तथा प्रजा ! लगता है भारत में गद्दारों की नस्ल पैदा हो रही है। जो अपने वतन के प्रति वफादार न हो सका, वह हमारे प्रति कैसे वफादार होगा और जंग की तैयारी की जाए, हम कल ही हिंदुस्तान कूच करेंगे।''

(८)

"क्या पृथ्वीराज चौहान ने हमारी पुत्री इन्द्रावती से विवाह रचाने के लिए खड़ग भेजी है ? खुद नहीं आए दुल्हे राजा।"- कवि चन्द पर गरजते हुए सारंगीपुर के राजा भीम परमार ने कहा।

कछवाहा परवनराय के नेतृत्व में खड़ग के साथ पृथ्वीराज चौहान की बारात लेकर सारंगीपुर पहुंचे चंद्रबरदाई ने सिर झुकाकर उत्तर दिया- "क्षमा करें महाराज! पृथ्वीराज विवाह हेतु स्वयं ही आ रहे थे, परंतु एकाएक उनके बहनोई रावल समर विक्रम का संदेश मिला कि चालुक्य भीम द्वारा चित्तौड़ पर हमला कर दिया गया है, इसी कारण रण निमंत्रण पाकर उन्हें चित्तौड़ जाना पड़ा और गुप्तचरों के मुताबिक चन्देरी व गजनी के प्रशासक रणथम्भौर पर हमला करने के लिए कूच कर चुके हैं। इसलिए रणथम्भौर पर दुश्मनों के आक्रमण से पहले चित्तौड़ की रक्षा करना जरूरी है और रणथम्भौर को बचाना भी दिल्ली के स्वाभिमान का सवाल है।"

राजा परमार भीम ने पुनः गरजते हुए कहा- "मैं बराबर का संबंधी हूँ। पृथ्वीराज और उसके सामंतों को शाहबुद्दीन गौरी को बार-बार बंदी बनाने से अभिमान हो गया है, इसीलिए वे अन्य किसी को अपने समान नहीं समझते, लेकिन भूल गये कि अभिमान अष्टधातु के अजेय दुर्ग को भी रेत के किले में बदल देता है, जो फूंक मारते ही ढह जाता है। दुल्हे के स्थान पर खड़ग से विवाह रचाना सारंगीपुर के परमारों का अपमान होगा, इसलिए मैं अपनी कुमारी का विवाह अब अन्यत्र ही करूंगा।"

चन्द्रकवि ने विनम्रता के साथ याचना की- "जिद छोड़ दीजिए महाराज ! हम सामंतों की लाज आपके हाथ में है। मैं सच कहता हूँ सम्राट पृथ्वीराज जंग में व्यस्त हैं। भीमदेव चालुक्य को मैं स्वयं समझाने गया था कि शत्रुता त्यागकर मित्रता कर लें और राष्ट्र की उन्नति में साधक बने बाधक नहीं।"

परमार ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा- ''कवि तो होते ही मूर्ख हैं, फिर किस भाषा में तुमने उन्हें समझाया होगा ?''

चन्द कवि ने कहा- ''महाराज मैंने भीमदेव को कवि की भाषा में ही समझाने का प्रयास किया था, मैं भीमदेव के दरबार में गले में जाल डाले, नसेनी, कुदाल, दीपक व काला त्रिशूल लिए पहुंचा था, जब भीमदेव ने मेरे स्वांग का कारण पूछा तो मैंने उन्हें बताया कि महाराजा पृथ्वीराज का कहना है यदि भीमदेव जल में घुसेगा, तो इस जाल से उसे पकड़ लूंगा, यदि आकाश में चढ़ जाएगा, तो इस नसेनी पर चढ़कर उसे पकड़ लूंगा, यदि वह पाताल में छिपेगा, तो इस कुदाल से खोदकर निकाल लूंगा यदि वह अंधेरे में छिप जाएगा, तो इस दीपक से उसे ढूंढ़ लूंगा और उसको इस अंकुश से वश में करके त्रिशूल से उसका वध करूंगा।''

चन्द कवि ने भीम परमार को बहुत समझाया, लेकिन वह खड़्ग के साथ विवाह करने को तैयार नहीं हुए। विवश होकर पृथ्वीराज के सामंतों को उसके साथ युद्ध करना पड़ा पड़ा। युद्ध में पृथ्वीराज के सामंतों को विजय मिली और वे पृथ्वीराज चौहान की खड़ग से इन्द्रावती के विवाह की रस्म अदा कर दहेज में दिये गये एक सौ हाथी तथा दो हजार घोड़ों के साथ इन्द्रावती को लेकर दिल्ली के लिए रवाना हुए।

बेटी की विदाई के बाद भीम परमार अपने आंसू नहीं रोक पा रहे थे कि तभी एक गुप्तचर ने आकर उन्हें प्रणाम करते हुए कहा- ''महाराज की जय हो।''

''क्या समाचार है गुप्तचर।'' - भीम परमार ने आंसू पोंछते हुए पूछा।

दूत ने कहा- ''जवाई राजा ने पहले चालुक्य भीम को पराजित किया और फिर रावल समर के साथ मिलकर रणथम्भौर में चन्देरी के राजा पंचायन व शाहबुद्दीन की संयुक्त सेना को धूल चटाकर नानी याद दिला दी।''

भीम परमार ने मुस्कान बिखेरते हुए कहा- ''औरत और युद्ध तो वीरों

की शान होती है। हे गुप्तचर ! मोहम्मद गौरी का हमारे जंवाई राजा ने क्या किया?"

गुप्तचर ने उत्तर दिया- "महाराज शाहबुद्दीन गौरी ने हर बार की तरह इस बार भी गिड़गिड़ाकर क्षमा मांग ली और दयालु पृथ्वीराज चौहान ने उसे उसी तरह मुक्त कर दिया, जैसे पहले करते आये हैं।"

भीम परमार ने मुट्ठी भींचते हुए- "पृथ्वीराज ! पुत्र तूने एक बार फिर गलती कर दी, अति किसी भी चीज की अच्छी नहीं, चाहे दया ही क्यों न हो। तुम यह भूल रहे हो कि दया वीरों का आभूषण तो है, लेकिन दुष्ट को दंड देना भी वीरों का ही धर्म है।"[१]



१. वंशचरितावली, २६

(९)

"महाराज आपने जो राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया है, उसके कारण देश-देशांतर के राजा-महाराजा आपके सामने आकर नत-मस्तक हो रहे हैं। वे सब अपने-अपने मुकुटों की चमक से आपके श्री चरणों की शोभा बढ़ा रहे हैं, लेकिन.."

सुमति नामक मंत्री द्वारा बात अधूरी छोड़ देने पर कन्नौज के राजा जयचंद ने पूछा- "लेकिन क्या ? बात अधूरी क्यों छोड़ दी सुमति ?"

सुमति ने नजरें झुकाकर कहा- "यज्ञ के लिए जो-जो सामग्रियाँ अपेक्षित हैं, वे सब एकत्र हो गयी हैं। भारत के सभी राजा-महाराजा भी आपकी सेवा में उपस्थित हो गये हैं, लेकिन पृथ्वीराज चौहान का अभी तक कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ है।"

जयचंद के मुखमंडल पर रोष की छाया उदित हो जाती है, उसने कर्कश स्वर से कहा- "अन्यायपूर्वक दिल्ली के सिंहासन पर कब्जा करने वाला वह धूर्त दो-चार छोटी-मोटी लड़ाइयाँ जीतकर अपने अहंकार में अंधा हो गया है, वह अतिथि बनाने का नहीं दंड देने का अधिकारी है।"

जयचंद के रोष को शांत करने का प्रयास करते हुए सुमति ने कहा- "महाराज निरुपाय हो जाने के बाद ही दंड देना उचित होता है, फिर भी एक बार दूत के हाथों निमंत्रण भेजकर उन्हें यज्ञ में सम्मलित होने का अवसर देना ही चाहिए, नीति तो यही कहती है।"

जयचंद ने और ज्यादा रोषपूर्ण शब्दों में कहा- "उस दुष्ट को निमंत्रण नहीं मैंने आज्ञापत्र दिया था।" तभी एक दूत राजा जयचंद के पास आकर सिर झुकाकर अभिवादन करता है- "महाराज की जय हो।"

जयचंद- "दूत हमने तुम्हें पृथ्वीराज को राजसूय यज्ञ में बुलाने के लिए आज्ञा पत्र देकर भेजा था, वह कायर घुटनों के बल चलता हुआ आ रहा है या नहीं ?"

दूत- ''क्षमा करें महाराज ! जब मैंने आपका आज्ञा पत्र पृथ्वीराज को दिया, तो पत्र पढ़ने के बाद उन्होंने उत्तेजित होकर कहा, ''दूतवर जो इस पत्र में लिखा है, क्या जयचंद ने अपने होश-हवाश में लिखा है, क्या जयचंद का संदेश उसके शांत चित्त की उपज है ? क्या वाकई जयचंद ने राजसूय यज्ञ करने का निश्चय किया है ?''

''पृथ्वीराज के इन प्रश्नों का तुमने क्या प्रतिवाद किया दूत।'' -- जयचंद ने अपने दूत से पूछा।

दूत ने बताया- ''महाराज मैंने पृथ्वीराज से शांत स्वर में विनम्र होकर कहा कि क्षमा करें महाराज ! मेरे स्वामी ने अपने बल, बुद्धि व पराक्रम में अपने आपको संतुष्ट पाकर ही यह शुभकार्य करने का निश्चय किया है। अतः मेरा आपसे निवेदन है कि आप शांत चित्त व विवेक से निर्णय करते हुए इस निमंत्रण को स्वीकारें। मेरे उत्तर पर पृथ्वीराज कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करते उससे पहले ही कविचंद ने आवेश में आकर कहा, ''दूतवर तुम्हारे महाराज को अपने बल, बुद्धि व पराक्रम में संतुष्टि का भ्रम हुआ है।''

''फिर तुमने क्या जवाब दिया दूत।'' - जयचंद ने पूछा

दूत ने कहा- ''महाराज मैंने तो कवि महोदय से इतना ही कहा कि परंतु आपको भी भ्रम हो सकता है कविवर ? मेरी इस बात पर कविचंद ने मुझे बहुत बुरा-भला कहा। सेवक हूँ ना कोई कुछ भी कह सकता है, मैं अपने अपमान की तो घूंट भरकर पी गया, लेकिन आपका जो अपमान किया, वह भगवान भोलेनाथ के विष की तरह अभी तक मेरे गले में अटका हुआ है।''

''शांत दूतवर शांत ! आपके अपमान के लिए मुझे खेद है, लेकिन विष भरी बातें उन्होंने जो मेरे बारे में कही उन्हें निगलना नहीं उगल दो।'' -- जयचंद ने दूत को निर्देश दिया।

तब दूत ने लंबी आह भरते हुए कहना शुरू किया- ''महाराज कविचंद ने कहा है कि यदि उन्हें भ्रम नहीं होता दूतवर तो वे ऐसा

अविवेकपूर्ण निर्णय लेते ही नहीं। कायर जयचंद ने अपनी शक्ति का अनुचित आकलन कर व्यर्थ की आफत अपने सिर मोल ले ली है। राजसूय यज्ञ कोई गवाल या बच्चों का खेल नहीं ? द्वापर युग के अंत में जब महाराजा युधिष्ठिर ने यह यज्ञ रचाया था तो भगवान श्रीकृष्ण के सहारे से सफल हो पाये थे, उसके बाद किसी ने राजसूय यज्ञ करने या सोचने की आज तक हिम्मत नहीं की। जयचंद शायद पिछले युद्धों के घावों व मार को भूल गया, जो राजसूय यज्ञ कराने की ठानी है।''[१]

दूत के मुख से पृथ्वीराज व चन्द कवि द्वारा अपनी आलोचना सुनकर जयचंद गुस्से में भर जाते हैं-- ''बस करो दूत बस ! जाओ मेरे भाई वालुकराय से कह दो कि इसी वक्त सेना को लेकर दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान करें। अब तो दिल्ली जीतने के बाद ही राजसूय यज्ञ किया जाएगा और राजसूय यज्ञ के दौरान ही देश-विदेश के सब राजा-महाराजाओं की उपस्थिति में मेरी पुत्री संयोगिता का स्वयंवर संस्कार समारोह का आयोजन होगा।''[२]



१. वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान, ३३
२. वंशचरितावली, २७

(१०)

"महाराज विग्रहराज के वंशज नागार्जुन का दमन तो पहले ही हो चुका है। भन्डानकों का मान भी धूल में मिला दिया गया, शाहबुद्दीन गौरी को भी कई बार नानी-याद दिला दी, चालुक्य शासक ने तो मुंह में दाब दबाकर अपनी जान की भीख प्राप्त की, देवगिरि के शासक का घमंड भी मिट्टी में मिला दिया और जयचंद के भाई वालुकराय को युद्धभूमि में सुलाकर जयचंद का राजसूय यज्ञ भी स्थगित करा दिया। इस प्रकार प्राचीन भारत से चली आ रही-राज्य विस्तार की प्रथा दिग्विजय करके आपने खूब निभाई। सूर्यवंशी राम और समुद्रगुप्त की तरह सारे भारत को जीतकर आप यशकाय हो चुके हैं। देश में सर्वत्र शांति व एकता कायम हो चुकी है, इसलिए अब थोड़ी मौज-मस्ती भी कर ली जाए। आप रेवा तट पर चलने की इच्छा करें तो उस वन में अपूर्व हाथियों के झुण्ड मिलेंगे।" - चामुण्डराय ने पृथ्वीराज से प्रार्थना की।

पृथ्वीराज ने मुस्कुराते हुए कहा- "अच्छी बात है चामुण्डराय ! और क्या-क्या विशेषता है रेवा तट की।"

चामुण्डराय ने बताया- "हे चौहान पृथ्वीराज ! सुनिए ! रेवा तट पर स्थित वन को हाथियों के समूह ने रमणीक बना दिया है। रेवा तट के चारों ओर बड़े-बड़े दांत वाले हाथियों के सुंदर समूह हैं, वहाँ आप कोतूहल वर्धक शिकार खेल सकते हैं, दिल्ली के मार्ग में भी सिंह समूह मिलते हैं, उनके भी शिकार का आप आनंद उठा सकते हैं। हे चौहान! आप वहाँ पर जलाशय, पर्वत, कस्तूरी हिरण, वन के सब पक्षी और कबूतर तो काफी संख्या में देखेंगे ही, किंतु हे नृपति, दक्षिण के सुंदर मार्ग का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता।"

पृथ्वीराज थोड़े गंभीर स्वर में बोले- "चामुंडराय आप जानते हैं पशु-पक्षी हमारे मित्र हैं, शिकार के बहाने इनकी हत्या करना घोर पाप है, हम शिकार तो नहीं खेलेंगे और न ही शिकार के नाम पर मूक प्राणियों

की हत्या किसी को भारत भूमि पर करने देंगे, लेकिन वन विहार को चलेंगे अवश्य।"

देवगिरि के पंगुराज पर विजय प्राप्त करने के रंग में रंगा पृथ्वीराज चामुंडराय के कहने पर रमणीक स्थान को देखने की इच्छा से घोड़े पर चढ़कर चल पड़ा।

वीर महाराज पृथ्वीराज के दक्षिण-पूर्वी दिशा में सुसज्जित होकर गमन करने पर मार्ग में पड़ने वाले सभी प्रदेशों के राजा चौहान के चरण स्पर्श के लिए झुके। राजा भान दल-बल सहित उनसे आकर मिला, दलगढ़ का राजा खट्ट मिला, नदिपुर का राजा मिला और रेवा का राजा भी स्वयं आकर मिला। वन में अनेक हिरणों और हाथियों के समूहों ने भी महाराज पृथ्वीराज को दर्शन दिये, क्योंकि पशु-पक्षियों के प्रति उनका व्यवहार मित्रवत था।

भयंकर जंगल में महाराजा पृथ्वीराज डेरा जमाये हुए थे, तभी एक अपरिचित वनवासी ने आकर कहा- "महाराज आप यहाँ से चले जाइये, क्योंकि यहाँ पास ही सिंह गुफा है, उसमें बब्बर शेर छिपा हुआ है, यदि वह बाहर आ गया तो आप पर हमला कर सकता है।"

पृथ्वीराज ने हंसकर वनवासी की बात का जवाब दिया- "वह तो शेर ही है, हम तो शेरों के भी सम्राट हैं। चलो वनवासी ! हम तुम्हारे साथ चलकर शेर से मल्लयुद्ध करेंगे।"

पृथ्वीराज चौहान, चन्द कवि व वनवासी गुफा के पास आये। महाराज की आज्ञा से गुफा में धुआं कर दिया गया, ताकि शेर बाहर निकल आये। धुआं करने पर उस गुफा से सिंह के स्थान पर एक ऋषि निकला और उसने क्रोधित होकर पृथ्वीराज को शाप दिया- "पृथ्वीराज ! जिस प्रकार तुमने मेरी आँखों को पीड़ा पहुंचाई है, उसी प्रकार तुम्हारा शत्रु तुम्हारी आँखों को पीड़ा पहुंचाएगा।"

शाप को सुनकर पृथ्वीराज ने ऋषि से क्षमा मांगते हुए कहा- "क्षमा करें ऋषिवर ! यह सब कुछ अज्ञानवश हो गया।"

पास खड़े हुए चंद कवि भी ऋषि के चरणों में गिरकर गिड़गिड़ाए - "क्षमा-क्षमा-क्षमा ऋषिवर क्षमा ! पृथ्वीराज हिन्दू धर्म के रक्षक व भारतीय संस्कृति के पोषक हैं, अगर आपने शाप वापस नहीं लिया तो देश का बहुत बड़ा अनिष्ट हो जाएगा।"

ऋषि ने द्रवित हृदय के साथ कहा- "मेरा शाप झूठा तो नहीं हो सकता, किंतु इतना वरदान अवश्य दे सकता हूँ कि पृथ्वीराज जो शत्रु तुम्हें पराजित करके अंधा करेगा, तुम चंद कवि की मदद से मृत्यु से कुछ क्षण पहले उस शत्रु को उसी की राज सभा में मारकर विजेता बन जाओगे, अर्थात तुम एक पराजित विजेता के नाम से संसार में जाने जाओगे ! तथास्तु।" इतना कहकर ऋषिवर वापस गुफा में चला गया। और इसी वक्त लाहौर का शासक चंदपुण्डीर पृथ्वीराज के पास आ पहुंचा। झुककर प्रणाम करते हुए उसने कहा- "पृथ्वीपति की जय हो ! पृथ्वीपति शाह गौरी के सेनापति तातार मारुफ खाँ ने शाह के हाथ से युद्ध के लिए पान का बीड़ा ले लिया है, उन्होंने चौहानी का उखाड़ फेंकने की कसमें खाई है। वह चतुरंगिनी सेना के साथ लाहौर पर आक्रमण करने के लिए कूच कर चुका है, मैंने अपनी सेना युद्ध के लिए पहले से ही तैयार कर ली है, लेकिन आपकी मदद के बिना गौरी की सेना को पराजित करना असंभव है।"

वीर चंदपुण्डीर की बात सुनकर पृथ्वीराज चौहान शांत मुद्रा में कुछ सोच-विचार में डूब जाते हैं, तभी पृथ्वीराज के साले मज्जूनराव ने सलाह दी- "जीजाजी शांत रहना किसी भी समस्या का समाधान नहीं है, शाहबुद्दीन गौरी ने विचारपूर्वक हमसे दस गुणी चतुरंगिनी सेना तैयार की है, इस समय उसके सामने लाहौर की सेना व हमारी दोनों संयुक्त रूप से मुट्ठी भर है। इसलिए हम युद्ध करने की स्थिति में नहीं हैं, अतः इस समय मेरी सलाह यही है कि शांति की नीति ग्रहण कीजिए और गौरी से कुछ ले-देकर समझौता कर लेते हैं। बार-बार युद्ध में निर्दोष सैनिकों की बलि चढ़ा देना अच्छा नहीं।"

पृथ्वीराज ने रोष से कहा- "चुप साले, कायर कहीं का ! हमेशा तो अपनी वीरता की डींगें मारता है, किंतु जब तलवारों की खटाखट से आग निकलने लगती है, तो भय के कारण पेड़ के पत्ते की तरह हिलने लगता है, तू नहीं जानता कि भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य है कि शरीर धारण किये रहने की अपेक्षा मुक्ति अच्छी है।"

पृथ्वीराज अपने सामंतों से मंत्रणा कर ही रहे थे कि तभी एक गुप्तचर ने आकर कहा- "पृथ्वीपति की जय हो ! क्षमा करें पृथ्वीपति ! लेकिन सिंहों के साथ छेड़छाड़ छोड़कर गौरी शाह की ओर ध्यान दीजिए, क्योंकि वह आठ हजार हाथी और अट्ठारह लाख घोड़ों के साथ नौ बजे यहाँ से चौदह कोस की दूरी पर देखा गया है।"

गुप्तचर की बात सुनकर हिन्दू दल में कोलाहल मच गया। पृथ्वीराज युद्ध का आदेश दे पाते कि उससे पहले सबने अपने-अपने कवच कस लिए। सब राजपूतों के हाथों में तलवारें चमकने लगी और शत्रु को कष्ट देने के लिए नगाड़े बज उठे। तभी एक गुप्तचर और आता है और उसने बताया- "महाराज सुभट गौरी सुसज्जित सेना के साथ चिनाव नदी के करीब आ पहुंचा है।"

इतना सुनते ही तैयार सेना युद्ध के लिए कूच कर देती है और इसके साथ मिल जाते हैं लाहौर के हिंदू वीर सैनिक भी।

धूलयुक्त विषैली वायु के समान भारतीय सेना के चलने से अंधेरा छा गया, मानो बादलों ने सूर्य को ढक लिया हो और शीघ्र ही हर हर महादेव......जय श्रीराम के नारों से आकाश गूंज उठा और आक्रमण - आक्रमण - मारो - मारो की आवाज के साथ हिन्दू वीर म्लेच्छ सैनिकों से लोहा लेने लगे।

चारों ओर तलवार से तलवार बजने लगी। आर्य सामंतों और शूर वीरों द्वारा फेंके गये अस्त्र-शस्त्र गौरी की सेना की ओर चलते हुए दिव्यास्त्र के समान दिखाई देते थे।

तलवारों से तलवारें बजकर धड़ कटने लगे, अनेकों म्लेच्छ हड्डियाँ

टूटने से घायल होकर गिर पड़े। पृथ्वीराज तथा उसकी सेना का अद्‌भुत पराक्रम देखकर गौरी का साहस टूट गया, तभी उसे तातार खां ने सांत्वना दी- "आलीजाह ! मेरे रहते हुए आप पर संकट नहीं आयेगा।" लेकिन तातार खां का हौंसला क्षण भर में ही रेत के किले की तरह ढह गया और गौरी की फौज की पदाति सेनाएं पीछे लौटने लगी और आगे बढ़ने लगे तो बस हिंदू वीर सैनिक।

युद्ध तीसरे दिन में प्रवेश कर गया था और इसी दिन गौरी की मदद के लिए हजारों सैनिक गजनी से और आ पहुंचे। गौरी का हौंसला बुलंद हो गया, उसने अपने धनुष से रघुवंशी वीर गुंटाई का वध कर दिया, दूसरा बाण छोड़कर भीम भट्टी को भी मार डाला, चंद पुण्डीर को कैद करने से तो उसका हौंसला और ज्यादा बढ़ा। और उसने एक प्राणघातक बाण पृथ्वीराज पर छोड़ दिया। विषयुक्त बाण से पृथ्वीराज का आधा शरीर तुरंत सुन्न् हो गया। पृथ्वीराज चौहान घोड़े से नीचे उतरकर शरीर में धंसे हुए बाण को निकालने लगे। अवसर का लाभ उठाने के लिए गौरी घोड़े से उतरकर भूमि पर खड़े हुए जीवन और मौत के बीच जूझ रहे पृथ्वीराज को गिरफ्तार करने दौड़े। विजयश्री गौरी के कदम चूमने ही वाली थी कि तभी पृथ्वीराज के अंगरक्षक रघुवंशी गुर्जरराय ने गौरी की गर्दन पर अपनी तलवार रख दी और युद्ध का पांसा ही पलट गया। गौरी ने अपने सब अस्त्र-शस्त्र गिरा दिये और आत्मसमर्पण कर दिया।

गुर्जरराय ने जोर-जोर से पुकार कर कहा- "मोहम्मद गौरी को बंदी बना लिया गया। खाँ हुसैन मारा गया। तातार निरति खाँ को झोली बनाकर बांध लिया गया। हिंदूवीरों गौरी के चमर, छत्र, रसद सब लूट लो।"

पृथ्वीराज चौहान बंदी गौरी को हाथी से बांध कर दिल्ली ले आये। शाहबुद्दीन गौरी पृथ्वीराज की जेल में एक महीना तीन दिन पड़ा रहकर कष्ट झेलता रहा। तब एक दिन पृथ्वीराज को द्वारपाल ने सूचना दी- "महाराज कोई अमीर आपसे मिलना चाहता है।"

पृथ्वीराज ने कहा- "हम किसी म्लेच्छ से सीधे भेंट नहीं करते, उस अमीर का हमसे मिलने का प्रयोजन क्या है ?"

द्वारपाल ने उत्तर दिया- "महाराज अमीर नौ हजार अमूल्य घोड़े, सात सौ ऐराकी घोड़े, आठ श्वेत हाथी व नये माणिक्य आपको भेंट करना चाहता है।"

पृथ्वीराज- "वह अमीर इस मेहरबानी के बदले क्या चाहता है?"

द्वारपाल - "महाराज वह शाहबुद्दीन गौरी की रिहाई चाहता है।"

पृथ्वीराज ने कुछ विचार करके कहा- "ठीक है, हम इन उपहारों के बदले शाहबुद्दीन गौरी को छोड़ देंगे, लेकिन उनको कहो कि वे अपने स्वामी को समझाएँ कि अब दोबारा कभी भारत भूमि की तरफ आंख उठाकर भी न देखे।"

और इस प्रकार शांतिपूर्वक संधि करके पृथ्वीराज चौहान ने गजनी नरेश को नवीन वस्त्रों से सुसज्जित करके आदर-सत्कार के साथ गजनी भेज दिया।[१]



१. मास एक दिन तीन, साह संकट में रुंधौ
करी अरज उमराऊ, दंड हय मंगिय सुद्धौ ।।
हय अमोल नव सहस, सत से दीन ऐराकी ।
उज्ज्वल दंतिय अट्ठ, बीस मुरु ढाल सु जक्की ।।
नग मोतिय माणिक नवल, करि सलाह समेलकरी ।
पहिराइ राव मनुहार करि, गज्जनैन पठयौ सुघर ।।
-पृथ्वीराज रासौ ३/१४९

(११)

पृथ्वीराज के ह्रदय की यह आंतरिक कामना थी कि वह किसी न किसी तरह जयचंद को वश में करे। इसलिए उनका भेद लेने का प्रयत्न निरंतर करते रहते थे। इसी उधेड-बुन में वे अपने कमरे में इधर से उधर टहल रहे थे। इतने में द्वारपाल ने पहुंचकर कहा- "अन्नदाता की जय हो! अन्नदाता कोई परदेशी द्वार पर खड़ा आपसे मिलने की जिद कर रहा है।"

पृथ्वीराज ने आज्ञा दी- "उसे अतिथि गृह में भेज दो, हम उनसे वहाँ मुलाकात करेंगे।"

"पृथ्वीपति की जो आज्ञा।" - कहकर द्वारपाल चला गया।

कुछ देर बाद पृथ्वीराज चौहान अतिथि गृह में प्रवेश करते हैं, तो वहाँ पहले से मौजूद परदेशी ने प्रणाम करते हुए कहा- "समस्त भूमंडल के सम्राट पृथ्वीराज की जय हो। (फिर हाथ जोड़ते हुए) महाराज दास का प्रणाम स्वीकार करें।"

उत्सुकता के भाव व्यक्त करते हुए पृथ्वीराज चौहान ने पूछा- "आपका स्वागत है वीर । कहो आपका क्या नाम है ? कहाँ से आये हो? और किस प्रयोजन से यहाँ तक आने का कष्ट किया है।"

परदेशी ने उत्तर दिया- "महाराज इस दास का नाम जोधमल है और कन्नोज से आपके नाम एक गुप्त संदेश लाया हूँ।"

पृथ्वीराज- "कहो जोधमल क्या गुप्त संदेश लाये हो ?"

जोधमल- "महाराज दिल्ली के युद्ध में राजा जयचंद के भाई वालुकराय को वीरगति को प्राप्त हो जाने के पश्चात जयचंद ने राजसूय यज्ञ का विचार तो त्याग दिया, किंतु राजकुमारी संयोगिता के स्वयंवर का निश्चय अभी तक वे नहीं त्याग सके हैं, वह जल्द से जल्द राजकुमारी संयोगिता का पाणिग्रहण संस्कार संपन्न कराना चाहते हैं लेकिन......."

"रुक क्यों गये जोधमल आगे कहो।"- पृथ्वीराज ने जोधमल को

बात पूरी करने का निर्देश दिया।

जोधमल ने आगे कहा- "राजकुमारी संयोगिता का शरीर मृणाल के समान कोमल तथा कमनीय है, खिले हुए कमल के समान सुंदर उसके नेत्र हैं, उसके मुख से निरंतर जो सुगंधी निकलती है, उसके लोभ से भौरों का दल उसके आसपास मंडराता रहता है। इस प्रकार वह कमलिनी सी लगती है। महाराज ! रूप लावण्य की यह जीवित प्रतिमा संयोगिता अपना हृदय आपको दे बैठी है।"

पृथ्वीराज ने उत्सुकता से पूछा- "क्या कहते हो जोधमल ? क्या यह सही है।"

जोधमल - "मैं सच कहता हूँ महाराज ! आपकी वीरता की चर्चा के सामने संयोगिता अपना हृदय हार गयी है।"

और जोधमल संयोगिता के हाथ का लिखा हुआ एक पत्र पृथ्वीराज को थमा देता है। पृथ्वीराज उत्सुकतापूर्वक उस पत्र को खोलकर स्वयं ही पढ़ने लगते हैं---

प्रतिष्ठा में,

हे क्षत्रिय कुल भूषण वीर शिरोमणि पृथ्वीपति,

अपने चरणों में इस निर्बल, असहाय अबला का प्रणाम स्वीकारें।

हे भारत के भाग्य विधाता ! आपको शायद पता ही होगा कि मेरे पिताश्री ने मेरा स्वयंवर किया जाना तय किया है। हे नाथ ! मैं जानती हूँ कि मेरे पिताश्री आपके कट्टर शत्रु हैं, इसलिए आप मेरे स्वयंवर समारोह में नहीं आएंगे, परंतु नाथ ! इस समय मेरा जीवन मंझधार में फंसा हुआ है, जिसे आप ही बचा सकते हैं। इस धरा पर कहीं ईश्वर हैं, तो बस आप ही हैं।

मैंने आपको मन से अपना आराध्य देव मान लिया है और आपके सिवाय किसी पर पुरुष का पति के रूप में वरण कभी न करूंगी, इसलिए मैंने प्रतिज्ञा की है कि यदि आपने मुझ दासी को स्वीकार नहीं किया तो मैं अग्नि में भस्म होकर अपना जीवन समाप्त कर लूंगी। अतः

हे प्राणेश ! यह जीवन अब आपके हाथ में है, चाहे तो इसे बचा लें, चाहे तो मिटा दें।

चैत्र शुक्ल सप्तमी   आपकी चरणरज अभागिनी दासी
                                        कुंवरि संयोगिता

पत्र पढ़ने के बाद पृथ्वीराज का मन चंचल हो उठा। उन्होंने मन ही मन कहा- "भगवान कुसुमायुद्ध की महिमा कोई नहीं समझ सकता।" और फिर पृथ्वीराज ने दो ताली बजाई। तालियां बजते ही तुरंत एक दासी हाथ जोड़कर सिर झुक़ाकर उनके सामने चुपचाप उपस्थित हो गयी। पृथ्वीराज ने दासी को आदेश दिया- "चंद कवि को हमारे सामने तुरंत उपस्थित करो।"

और थोड़ी ही देर में चंद कवि उपस्थित हो गये ।

चंद कवि- "पृथ्वीपति की जय हो ! क्या आज्ञा है सम्राट !"

पृथ्वीराज के चेहरे पर खुशियाँ इस प्रकार झलक रही थी कि मानो कोई अनमोल वस्तु मिल गयी हो। उन्होंने चंद कवि से कहा- "कविचंद आप तुरंत सेना की एक टुकड़ी तैयार कीजिए, हम कल ही कन्नौज के लिए प्रस्थान करेंगे और एक बात और सुनो चंद कवि ! गुप्तचरों ने सूचना दी है कि शाहबुद्दीन गौरी कैमास की मौत की बात सुनकर समझ बैठा है कि पृथ्वीराज की शक्ति क्षीण हो गयी है, इसलिए वह एक बार फिर आक्रमण करने के लिए दिल्ली की तरफ बढ़ा चला आ रहा है। वीर समरसिंह को कहो कि उन्हें हमारी आज्ञा है कि यवन राज के भावी आक्रमण से देश की रक्षा का भार अपने ऊपर लें। हम अत्यंत शुभ कार्य के लिए कन्नौज जा रहे हैं, इसलिए खून-खराबा या निर्दोष सैनिकों की हत्या या विधवाओं की हाय अपने सिर के ऊपर नहीं लेना चाहते। समरसिंह से कहना कि शाहबुद्दीन गौरी को युद्ध में पराजित करके उसको क्षमादान देकर गजनी भेज दें। गौरी खून के रिश्ते से हमारा मामा लगता है, हम एक और विवाह रचाने जा रहे हैं, विवाह में मामा को भात देने की रस्म अदा करनी पड़ती है, इसलिए गौरी को एक बार फिर

पराजित कर क्षमा करना ही हम भात की रस्म अदा हुई समझ लेंगे।"

कविचंद - "बुरा न मानना महाराज ! एक बात कहूँ ?"

पृथ्वीराज- "कहो मित्र कविचंद, आप तो हमारे बाल़ सखा हैं, इसलिए आपकी बात का बुरा कदाचित नहीं मानूंगा।"

कविचंद- "आपने कैमास को छिपकर मार दिया अच्छा नहीं किया, इतना ही तो अपराध था महावीर कैमास का कि वह दासी कर्णाटकी को हृदय दे बैठे थे।[१] घर के भेदी ने लंका ढा दी थी महाराज ! हमारे सब भेदों से अवगत कर्णाटकी न जाने किस दुश्मन की शरण में चली गयी।"[२]

पृथ्वीराज ने रोष से निर्देश दिया- "तुम्हें जितना कहा जाए, उतना ही किया करो कविचंद, राजा के व्यक्तिगत मामलों में किसी भी सामंत का हस्तक्षेप करना उचित नहीं होता।"[३]

"जो आज्ञा महाराज।" - इतना कहकर कविचंद चले गये और पृथ्वीराज फिर चिंतन में खो जाते हैं।'



---

१. राज चित्त कैमास । चित्त कैमास दासि गय ।।
नीर चित्त बर कमल । कमल चित्त बर भान गय ।।
-संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, ९५

२. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, १८१, वंशचरितावलि, २७

३. वंशचरितावली, २७

(१२)

कविचंद ने पंगुराज जयचंद की राजसभा में प्रवेश किया और पृथ्वीराज भी वेश बदलकर उनके सेवक के रूप में साथ थे। चंद ने सेवक वेशधारी राजा का नाम जलधर रखा था।

कविचंद का स्वागत करते हुए राजा जयचंद ने कहा- "कविवर आप महानुभाव ने जो मेरी इस सभा में आने की कृपा की है, मैं इसके लिए हृदय से आभारी हूँ।"

जयचंद के संकेत पर आसन पर बैठते हुए कविचंद ने कहा- "महाराज मैं देशाटन पर निकला हूँ। आपकी कीर्ति और महिमा सुनकर एक याचक के रूप में उपस्थित हुआ हूँ।"

जयचंद- "यह तो आपका बड़प्पन है कविचंद ! वैसे तो सच यही है कि आप हमारे जिस शत्रु का नमक खाते हैं, उनकी भी वीरता के चर्चे हमसे कम नहीं हैं। सुना है कविवर आप बहुत अच्छी कविता करते हैं, हम भी आपका कविता पाठ सुनने की इच्छा रखते हैं।"

कविचंद ने मुस्कुराकर उत्तर दिया- "क्यों नहीं महाराज ! हम बेटी संयोगिता के स्वयंवर में ऐसा कविता पाठ करेंगे कि आप जीवनभर याद रखेंगे।"

जयचंद- "जो आपकी इच्छा कविचंद।" फिर जयचंद ने रायचंद की तरफ देखते हुए उन्हें आज्ञा दी- "चंद भारत वर्ष के सबसे योग्य कवि हैं, इसलिए हमारे यहाँ की परंपरा के अनुसार हमारी रानियों की और से कर्णाटकी दासी के हाथों कविराज के सम्मान में ताम्बूल भेजा जाए।"

"जो आज्ञा महाराज।"- ऐसा कहकर रायचंद प्रस्थान कर गया।

कविचंद ने सहदेव की तरफ देखते हुए उत्सुकता से पूछा- "कर्णाटकी दासी?"

कविचंद की शंका का समाधान करते हुए जयचंद के सामंत वीर सहदेव ने बताया- "हाँ कविवर कर्णाटक दासी ! यह दिल्ली राज्य की



वही कर्णाटकी दासी है, जो मंत्री कैमास की हत्या के बाद भाग कर हमारे महाराज की शरण में आ गई है।''

तभी उपस्थित होते हुए रायचंद ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा- ''और कर्णाटकी ने महाराजा जयचंद से आज्ञा प्राप्त कर ली है कि वह पृथ्वीराज चौहान के अतिरिक्त किसी अन्य से घूँघट नहीं करेगी और हमेशा खुले मुंह ही रहेगी।''

सहसा ताम्बूल लेकर कर्णाटक दासी उपस्थित हो गयी, लेकिन अचानक ही कविचंद के सहयोगी बने जलधर भेषधारी पृथ्वीराज को देखकर अपना घूँघट खींच लेती है। फिर संभलते हुए उसने जयचंद से कहा- ''क्षमा करें महाराज ! सम्राट पृथ्वीराज चौहान जिस कवि का गुरुतुल्य सम्मान करते हैं, उनके प्रति सम्मान प्रकट करना और घूँघट निकालना मेरा धर्म है।''

तभी सुमति ने चंद कवि के सेवक की ओर संकेत करके जयचंद के कान में कहा- ''महाराज जहां तक मैं समझता हूँ जलधर के वेश में महाराजा पृथ्वीराज स्वयं यहाँ उपस्थित हुए हैं। ऐसा तेजस्वी पुरुष कवि का कदाचित सेवक नहीं हो सकता और कर्णाटकी का जलधर के सामने

घूँघट निकालना मेरी शंका को सत्य प्रमाणित करता है।''

जलधर की ओर ध्यानपूर्वक देखकर जयचंद ने सुमति के मत का समर्थन करते हुए उसके कान में कहा- ''अत्यंत रूपवान ह्रष्ट-पुष्ट तथा दीर्घकाय यह व्यक्ति अवश्य पृथ्वीराज ही है।''[१]

इसके बाद जयचंद व सुमति में तनिक देर तक कानाफूसी होती रही। सुमति का विचार था कि जलधर वेशधारी पृथ्वीराज को इसी समय बंदी बना लिया जाए, किंतु जयचंद को ऐसा करना युक्तिसंगत प्रतीत नहीं हुआ, उन्होंने सुमति से कहा- ''इस समय यह हमारे अतिथि हैं। हम दुश्मनी के कारण अपनी परम्परा नहीं भूल सकते कि अतिथि ईश्वर के समान होता है। इसलिए संयोगिता स्वयंवर के बाद पृथ्वीराज को गिरफ्तार करने पर विचार करेंगे।''[२]



१. ढंकित केस लषी भयभूपह । दिन दिन दिस्स कहाँ राई मह ।
कविवर सथ्थ प्रथी नृप आयौ । सौ लच्छित बर दासि बतायौ ।।
-संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, १२१

२. संयोगिता स्वयंवर, १५

(१३)



संयोगिता के स्वयंवर के लिए मंडप सजा हुआ था। देश-विदेश के राजा-महाराजा व वीर-योद्धा आसनों पर विराजमान थे। राजा जयचंद मुख्य स्थान पर बैठे थे। संयोगिता बुझे मन से एवं व्यथित होकर हाथों में जयमाला लिए इधर-उधर चक्कर लगा रही थी। साथ में राजभट्ट संयोगिता को हर वीर के बारे में गाकर बता रहा था। यकायक संयोगिता ने राज भट्ट से कहा- "हे राज भट्ट ! मैं इस स्वयंवर मंडप के चारों ओर चक्कर लगा आई, परंतु द्वार पर खड़ी इस प्रतिमा में जो ओज एवं तेज देखने को मुझे मिला मैं उससे अत्यंत प्रभावित हूँ।"

राजभट्ट ने उत्तर दिया- 'राजकुमारी आप जानती हैं कि दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज हमारे कट्टर शत्रु हैं, सुनने में आया है कि वह भी भेष बदलकर यहीं कहीं हैं, उसी को नीचा दिखाने के लिए आपके पिताश्री जयचंद ने स्वयंवर मंडप के द्वार पर उनकी यह मूर्ति बनवाकर रख दी है।"

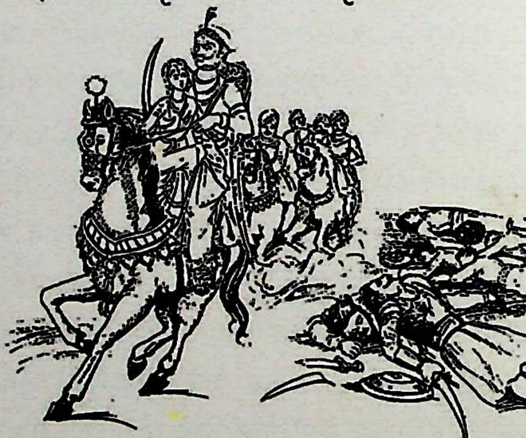
राजभट्ट से इतना सुनते ही पृथ्वीराज की प्रतिमा को जयमाला पहनाते हुए संयोगिता ने कहा- "हे हृदयेश्वर ! इस अनुचरी को अपने चरणों की दासी स्वीकार कर उद्धार कीजिए।"

यह दृश्य देखकर सब अवाक रह गये। जयचंद कुछ प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाते कि इतने में वहाँ छिपे पृथ्वीराज प्रकट हो गये और संयोगिता का हाथ पकड़ते हुए उन्होंने कहा- "हे हृदयेश्वरी ! मैं ही तुम्हारा सपनों का महाराजा पृथ्वीराज चौहान हूँ, चलो मेरे साथ।" संयोगिता ने झटके



के साथ पृथ्वीराज से अपना हाथ छुड़ा लिया और फिर उसे ध्यान से निहारा। अपने प्राणेश्वर को निहारते-निहारते संयोगिता की आँखों में आँसू भर आये। फिर उसने पृथ्वीराज के चरण स्पर्श करते हुए कहा- "स्वामी आने में इतनी देर ! दासी का तनिक भी ध्यान न आया। मुझे अपने चरणों में स्थान देकर कृतार्थ करें।" और तभी मंडप के द्वार पर कन्ह पृथ्वीराज का घोड़ा लेकर आ जाते हैं। पृथ्वीराज चौहान संयोगिता को उठाकर अपने साथ घोड़े पर बैठा लेता है।

जयचंद स्वयंवर मंडप में केवल ललकारता रह जाता है -- "हे मेरे बहादुर शेरों...... पकड़ लो इस कायर पृथ्वीराज को।" पृथ्वीराज जयचंद के सैनिकों को काटता हुआ आगे बढ़ने लगता है और भयंकर युद्ध छिड़ जाता है। लेकिन जयचंद की विशाल सेना पृथ्वीराज को न पकड़ सकी और स्वयंवर मंडप से हरी गयी संयोगिता वापस नहीं लाई जा सकी। इस युद्ध में पृथ्वीराज के कन्ह जैसे अनेक महान योद्धा रणभूमि में सदा-सदा के लिए सो गये।



(१४)

पृथ्वीराज चौहान की तमाम कमजोरियों से अवगत शाहबुद्दीन गौरी ने ११७८ में पंजाब, मुल्तान व सिंध पर अचानक धावा बोलकर इन क्षेत्रों को अपने अधीन कर लिया। पृथ्वीराज इन प्रदेशों को भारत माता का अभिन्न अंग मानकर अपने अधीन करना चाहता था, इसलिए उसने गौरी के अधिकार क्षेत्र के सरस्वती व सरहिन्द के किलों पर अधिकार कर लिया। गौरी ने ११८९ में पुनः सरहिंद पर अधिकार किया और १२००० सैनिकों को मलिक जियाउद्दीन के अधीन सरहिन्द में छोड़कर लौट गया। पृथ्वीराज को जब यह पता चला कि गौरी ने सरहिन्द को वापस जीत लिया है, तो वह सरहिन्द के किले को वापस जीतने के लिए आगे बढ़ा। उसने सरहिन्द के किले में गौरी के सूबेदार मलिक जियाउद्दीन को घेर लिया। अपने जीते हुए राज्य व सेनापति की रक्षा के लिये मोहम्मद गौरी वापस लौट आया। पृथ्वीराज इस समय अनहिलवाड़ा पट्टन जीतकर लौटा था। मुसलमान आक्रमणकारियों को उसने बाहर निकालने के लिए अपने बहनोई चित्तौड़ के राजा समर सिंह से सहायता मांगी, दिल्ली का राजा गोविंदपाल भी इस युद्ध में पृथ्वीराज के साथ था। पृथ्वीराज ने गोविंदराज के पुत्र चंद्रराव को आक्रमणकारियों का समाचार लाने भेजा। चंद्रराज ने पृथ्वीराज चौहान से आकर कहा- ''गौरी ने देश को लूटा और जला दिया है, नारियों का अपमान किया और उनकी बहुत दुर्दशा की है। अनेक राजपूत घराने और उनके सामंत नष्ट हो गये हैं, या जान बचाकर भाग गये हैं।''

पृथ्वीराज यह वृत्तांत सुनकर बहुत दुःखी हुआ और उसने समर सिंह को गौरी का मुकाबला करने भेजा। पृथ्वीराज की सेना ने रावी के तट पर गौरी की सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कई दिनों के भीषण संग्राम के बाद भी कोई परिणाम नहीं निकला। पृथ्वीराज स्वयं आगे बढ़ा और थानेश्वर से १४ मील दूर सरहिन्द के किले के नजदीक करनाल व

थानेश्वर के बीच तरावडी के मैदान में पृथ्वीराज व शाहबुद्दीन गौरी के बीच भयंकर लड़ाई हुई।

गौरी की सेना में भगदड़ मच गई। राजपूत वीरों का उत्साह बढ़ा और गौरी को युद्ध भूमि में गिरफ्तार कर लिया गया। गौरी को हाथी से बांधकर दिल्ली के लालकोट में लाया गया।

पृथ्वीराज चौहान ने अपना दरबार लगाया और जंजीरों में जकड़े हुए शाहबुद्दीन गोरी को दरबार में पेश किया गया।

पृथ्वीराज ने व्यंग्य से कहा- "आइये.....आइये मेहरबान ! हमारे दरबार में आपका स्वागत है। हमारे लिए कोई खिदमत हो तो बखान करें।"

शाहबुद्दीन गौरी नजरें झुकाए खामोश रहता है। उसकी खामोशी तुड़वाने के लिए पृथ्वीराज ने पुनः व्यंग्य के बाण चलाए- "क्या खूब रही मामा घोरी, आप अकेले ही तशरीफ लाए हैं, हमारी नानी को साथ नहीं लाए, हम भी उनके दीदार कर लेते।"

शाहबुद्दीन गौरी ने हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाकर कहा- "महाराज मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मुझे अपने किये पर पूरा पछतावा है। मैं जयचंद के बहकावे में आ गया था। खादिम की गलती पर न जाइये, मुझे क्षमादान दीजिए। बेशक मैं परिस्थितियों के कारण मुसलमान हूँ, लेकिन खून के रिश्ते में तो तुम्हारा मामा हूँ भांजे। माऽमा अर्थात दो माता के बराबर।"

गौरी की बात सुन पृथ्वीराज ने क्रोध से कहा- "चुप रह कमीने ! तू तो कंस और शकुनि से भी चार कदम आगे निकल गया। मैंने तेरी खूनी रिश्तों की दुहाई की बातों में आकर तुझे अब तक सोलह बार जीवनदान दिया। एहसान फरामोश तूने हर बार लौटकर वापस मुझ पर ही आक्रमण किया। तू क्षमा के योग्य है ही नहीं, अपने कर्मों को याद कर और खुद ही बता तेरे साथ क्या सलूक किया जाए?"

शाहबुद्दीन पैरों में गिरते हुए गिड़गिड़ाया- "दुहाई है महाराज, दुहाई है। मुझे बार-बार क्षमा करने से संसार में आपकी ही कीर्ति बढ़ी है। क्षमा

आप जैसे कीर्ति पुरुष का आभूषण है महाराज। वह कमीना जयचंद ही मुझे आपसे भिड़ने के लिए बार-बार उकसाता रहा, वरना मैं तो आपकी बहादुरी का कायल था और हूँ।"

पृथ्वीराज ने कुछ पसीजते हुए कहा- "तुम्हारा कोई दीन-धर्म नहीं है मामा घोरी। तुम पर भरोसा करें भी तो कैसे करें, जो बचपन में ही अपनी जन्मभूमि व बाप को मुसीबत में छोड़कर गजनी भाग गया हो, जो अपने वतन व बाप का ही न हुआ हो, उस पर कैसे भरोसा किया जा सकता है। मामा घोरी! अगर तू बहादुर होता तो गजनी भागने की बजाए पृथ्वीभट्ट से लोहा लेता और दिल्ली का सम्राट तू ही होता कंस के अवतार घोरी मामा।"

शाहबुद्दीन गौरी ने कुछ आशान्वित होते हुए कहा- "मैं मक्कार हूँ, कमीना हूँ, मेरी फिदरत ही कुत्ते जैसी है, फिर भी मेरी बात पर यकीन कीजिए, भांजे अब मैं आइंदा कभी लौटकर न आऊँगा और तुम्हारी नानी की सेवा में ही यह जीवन खफा दूंगा।"

पृथ्वीराज चौहान कुछ सोच-विचार करने लगे। उनके चेहरे पर दया भाव उभरते हुए देख वीर सामंत धीर पुण्डीर ने कहा- "क्षमा करें महाराज ! जो क्षमा की भीख चाहता है, उसे एक अवसर और देना धर्मानुकूल निर्णय होगा।"

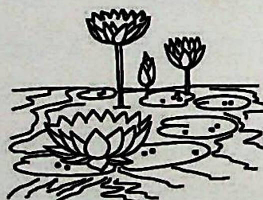
धीर पुण्डीर की बात का प्रतिवाद करते हुए गुरु रामपुरोहित ने कहा- "'महाराज घर में लगी अग्नि, शयन कक्ष में सांप और युद्धभूमि में पकड़े गये शत्रु को नष्ट कर देना चाहिए, नीति तो यही कहती है।"

चामुण्डराय ने राम पुरोहित का समर्थन करते हुए कहा- "मेरे ख्याल से इन्हें रिहा कर देना उचित नहीं महाराज, क्योंकि यह छूटते ही बाहर जाकर फिर उत्पात मचाएगा।"

सबकी बात सुनने के पश्चात पृथ्वीराज ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा- "आपका कहना ठीक है गुरुदेव व चामुण्डराय जी ! लेकिन जब यह क्षमादान मांग ही रहा है तो इसे एक अवसर और दिया जा सकता

है। (फिर धीर-पुण्डीर की ओर मुखातिब होकर) इस कमीने का कसूर तो मामा कंस से भी बड़ा है, परंतु मैं तो श्रीकृष्ण नहीं, जो इसकी हत्या कर दूं। यह तो धर्मांतरण करके सब रिश्ते-नातों को भूल गया, लेकिन खून का रिश्ता धर्म बदलने से समाप्त नहीं होता। अगर हमें अपनी बहिष्कृत नानी के बुढ़ापे का ख्याल न होता......तो हम इस कमीने को सजा-ए-मौत देते, लेकिन यह सब गहन चिंतन के बाद हमारा आदेश है कि इससे तीस हाथी और पाँच सौ घोड़े दंड के रूप में लेकर छोड़ दिया जाए। (फिर गौरी की और मुखातिब होकर) जाओ मामा.....जाओ असली राजपाट तो माँ-बाप के चरणों में होता है, इसलिए जाकर नानी की सेवा करो और फिर कभी मेरी आँखों के सामने न आना।''[१]

इशारा पाते ही धीर पुण्डीर ने गौरी के बंधन खोल दिये और गौरी जुग-जुग जिओ बेटा कहते हुए चला गया।[२]



१. वंशचरितावलि, २८
२. वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान, ६८

(१५)

शाहबुद्दीन गौरी के राज दरबार में इस तरह खामोशी छायी हुई थी, जैसे किसी की मौत का मातम मनाया जा रहा हो। सभी दरबारी चिंतनशील थे। तभी द्वारपाल ने प्रवेश किया और झुककर कहा- "आलीजाह का इस्तकबाल बुलंद हो! आलीजाह आर्यावर्त्त की पाक भूमि से जयचंद नामक कोई व्यक्ति आया है। अपने आपको कन्नौज का राजा बताने वाला वह व्यक्ति आपसे अभी मिलना चाहता है।"

इतना सुनते ही गौरी के मुरझाये चेहरे पर रौनक लौट आयी और उसने द्वारपाल को आज्ञा दी- "राजा जयचंद को बड़े अदब के साथ हमारे हुजूर में पेश करो।"

"जैसी इजाजत !" - ऐसा कहकर द्वारपाल चला गया और थोड़ी ही देर में जयचंद गौरी के दरबार में उपस्थित हो गया।

शाहबुद्दीन गौरी ने जयचंद का स्वागत करते हुए कहा- "आइये दिल्ली के भावी सम्राट । हमारे राजदरबार में आपका स्वागत है।"

जयचंद झुककर सलाम करते हैं- "असलाम वालेकुम ।"

शाहबुद्दीन - "वालेकुम असलाम।"

शाहबुद्दीन के संकेत पर जयचंद ने बैठते हुए कहा- "यह तो आपकी जर्नावाजी है शहंशाह-ए-जहान ! जो इस नाचीज को दिल्ली का सम्राट बताकर मेरी शान में चार चांद लगा रहे हैं। बंदे की खुशकिस्मती होगी, जो आपके किसी काम आ सके।"

शाहबुद्दीन ने उत्सुकता से पूछा- "बताइये राजा साहब यहाँ तक आने की क्यों तकलीफ उठायी, किसी गुलाम को भेज दिया होता, हम स्वयं ही आपके दरबार में उपस्थित हो जाते।"

जयचंद- "शहंशाह जी ! आप जानते ही हैं कि पृथ्वीराज चौहान मेरा कट्टर शत्रु है, उसने मेरी पुत्री का अपहरण करके चौहान वंश को भी कलंकित कर दिया है, क्योंकि रिश्ते में संयोगिता उस दल पंगुल उपाधि

धारक की बेटी लगती है। मामा घोरी मैं हर कीमत पर पृथ्वीराज का वध चाहता हूँ। युद्ध भूमि में आप ही केवल उसे जिंदा दफन करने की हिम्मत रखते हैं, अन्य कोई नहीं, मैं भी नहीं।''

शाहबुद्दीन ने मुट्ठी भींचकर अपने ही माथे में मारते हुए कहा- ''हम पृथ्वीराज से हार गये जयचंद। एक-दो बार नहीं पूरे सत्रह बार चारों खाने इस तरह चित हुए कि अब तो पृथ्वीराज का नाम सुनते ही हमारी रूह कांपने लगती है। आपके प्रस्ताव का शुक्रिया, लेकिन हम क्षमा चाहते हैं।''

जयचंद ने हौंसला बढ़ाने का प्रयत्न करते हुए कहा- ''दिल छोटा न करें शहंशाह ! इस बार आपकी जीत निश्चित है, क्योंकि पृथ्वीराज के सबसे शक्तिशाली कन्ह सामंत को हमने संयोगिता हरण के समय हुए युद्ध में मार गिराया। विनाशकाले विपरीत बुद्धि, इसीलिए तो वीर कैमास जैसे नीतिवान व बहादुर व्यक्ति को पृथ्वीराज ने स्वयं ही मिटा दिया है। अपने साले महावीर चामुण्डराय को कैद में डाल दिया है। कन्नौज और महोबा की संयुक्त सेना ने पृथ्वीराज की सारी सेना का सर्वनाश कर दिया है। हमने युद्धभूमि में पृथ्वीराज को मरा समझकर मूर्छा अवस्था में छोड़ दिया था। बस यही एक गलती हो गयी हमसे। उस स्वामी भक्त संयमराय ने अपने प्राण देकर पृथ्वीराज को चमत्कारित ढंग से जीवित कर दिखलाया।''

शाहबुद्दीन गौरी ने आश्चर्य से पूछा- ''क्या पृथ्वीराज चौहान युद्धभूमि में मरकर जीवित हो उठा ? वाह ! ऐसे वीर की वीरता के आगे तो मेरा भी सिर सत्रह बार झुका है, इसलिए मुझे कोई अफसोस नहीं।''

जयचंद- ''शहंशाह आप तो दुश्मन पृथ्वीराज का ही गुणगान करंने लगे।''

शाहबुद्दीन- ''तुम्हारा कहना ठीक है जयचंद ! लेकिन दुश्मन से पहले तेरी तरह वह भी मेरा भांजा है। और भांजे से पहले पृथ्वीराज एक सच्चा वीर और भारत मां का सजग रक्षक है। इसीलिए हिंदुस्तान पर फतह

कर पाना इतनी आसान बात नहीं है। कन्ह, कैमास, चामुण्डराय या संयमराय नहीं रहे, तो क्या हुआ ? भारत का तो बच्चा-बच्चा ही दिलेर है और पृथ्वीराज (फिर प्रशंसात्मक रूप से आंखे मूंदकर खोलते हुए) वाह ! वाह ! वह तो शेरों का भी शेर......काल का भी काल और दानवीरों का भी दानवीर प्राणदान वीर है। उसके सभी साथी व सैनिक देश पर मर-मिटने को तैयार हैं। (फिर अफसोस करते हुए) काश ! हमारे सैनिकों में भी ऐसी भावना होती, हम अब तक दुनिया को फतह कर चुके होते। हमारे अंगरक्षक यदि संयमराय जैसे होते तो हम कदाचित् पृथ्वीराज के हाथों सत्रह बार बंदी न बनाए जाते।"

जयचंद भी गौरी की हाँ में हाँ मिलाते हुए इस तरह रंग बदल गया जैसे खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है और फिर उसने कहा- "हाँ शहंशाह ! संयमराय के अपूर्व त्याग व स्वामिभक्ति के सामने तो मैं भी नतमस्तक हूँ। मैंने अपने सैनिकों के मुख से उसके आत्म बलिदान का आंखों देखा हाल सुना है।"

शाहबुद्दीन ने उत्सुकता से कहा- "अच्छा ! संयमराय के अपूर्व त्याग के बारे में हमारे मीरों को भी तो कुछ बताओ (फिर मीरों की ओर देखकर) ताकि इन लोगों में भी त्याग व बलिदान की भावना भर सके।"

जयचंद- "शहंशाह ! युद्धभूमि में मेरी व महोबा की संयुक्त सेना पृथ्वीराज से लड़ने को तैयार खड़ी थी। हमारी विशाल सेना के आगे भी पृथ्वीराज सीना ताने हुए युद्ध के शंखनाद की प्रतिक्षा कर रहा था, तभी संयमराय ने पृथ्वीराज से कहा कि महाराज बुंदेलखंड की राजधानी महोबा में आम नागरिक नहीं बसते। महोबा तो आल्हा-ऊदल जैसे वीरों[१] की नगरी है। महोबा के राजा परिमाल से युद्ध में जीत पाना उतना आसान नहीं है, जितना हम समझते हैं, खुद ही देख लो ! महोबा की सेना के साथ-साथ युद्धभूमि में कन्नौज की सेना भी हमसे लोहा लेने के

१. बड़े वीर हैं महोबे वाले, उनकी मार सही न जाए ।
आल्हा-ऊदल दोनो से, धरती क्या अंबर थर्राए ।। -आल्हा खंड

लिए तैयार खड़ी है।" तब पृथ्वीराज ने प्रतिवाद स्वरूप संयमराय का हौंसला बढ़ाते हुए कहा- "इस धरती पर अभी तक कोई ऐसा योद्धा पैदा नहीं हुआ, जो अनंगपाल की पुत्री कर्पूरी के पुत्र पृथ्वीराज के रक्त की एक बूंद भी पृथ्वी पर गिरा सके।"

पृथ्वीराज व संयमराय भावी युद्ध के बारे में चर्चा कर ही रहे थे कि तभी सूर्य देव उग आए। सूर्य के निकलते ही महोबाराज परिमाल ने युद्ध के लिए शंख बजा दिया। शंख बजाने के बाद पराक्रमी परिमाल आल्हा-ऊदल व अपने सब सैनिकों के साथ-साथ अपने झंडे तले कन्नौज की सेना को लेकर पृथ्वीराज की सेना पर टूट पड़े। पृथ्वीराज की रोषपूर्ण आज्ञा सुनकर उसके सैनिकों ने भी तोपों से आग बरसानी शुरू कर दी।[१] बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। महोबे की सेना युद्ध में मारी गयी। परिमाल भी खेत रहे और इस युद्ध में भाग लेने वाली दिल्ली की सारी सेना का भी सफाया हो गया। पृथ्वीराज भी मूर्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़े थे। युद्ध में कौन जीता-कौन हारा यह निर्णय आज तक न हो सका। युद्ध की हलचल दूर हो चुकी थी तथा वहाँ झुंड के झुंड गीध आकाश से उतर पड़े। वे मरे हुए व घायल सैनिकों को नोच-नोचकर खाने लगे। उनकी आँखें और आंतें निकालने लगे। गीधों के आक्रमण से सैनिक चीखने व चिल्लाने लगे, लेकिन किसी में भी इतनी शक्ति व साहस ही कहां था कि उन गीधों को भगा सके।

पृथ्वीराज चौहान भी मूर्छित अवस्था में दूसरे घायलों के बीच पड़े थे। गीधों का एक झुण्ड उनके पास भी आया और आस-पास के लोगों को नोच-नोच कर खाने लगा।

पृथ्वीराज के वीर सामंत संयमराय भी अपने सम्राट के पास ही पड़े हुए थे। अचानक ही संयमराय की मूर्छा दूर हो गयी, किंतु वे इतने घायल थे कि उठ नहीं सकते थे। युद्ध में संयमराय पृथ्वीराज के

---

१. गुस्सा हुइके पृथ्वीराज तब, तुरतै हुकम दियो करवाय ।
बत्ती दे देऊ सब तोपन में, आल्हा ऊदल को देउ उडाय ।। -आल्हा खंड



अंगरक्षक नियुक्त किये गये थे। जब संयमराय ने पड़े-पड़े देखा कि गीधों का झुण्ड महाराजा पृथ्वीराज की ओर बढ़ता जा रहा है, तो वे संभवतः सोचने लगे- "पृथ्वीराज चौहान मेरे स्वामी हैं, उन्होंने अनेकों बार विदेशी आक्रांता गौरी को हराकर भारत माता का सर गर्व से ऊँचा किया है। उन्होंने सदा मुझ पर कृपा की है। ऐसे वीर की रक्षा के लिए प्राण दे देना ही तो मेरा कर्तव्य था और मैं युद्ध में उनका अंगरक्षक भी था, मेरे देखते-देखते गीध महाराजा पृथ्वीराज के शरीर को नोच कर खा लें, तो मेरे जीवन को धिक्कार है।"

संयमराय ने हाथ में तलवार लेकर उठने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन सब निष्फल रहा। अंत में उन्हें एक उपाय सूझ ही गया। वे अपने शरीर का मांस काट-काट कर गीधों की ओर फेंकने लगे। गीधों को मांस की कटी बोटियाँ मिलने लगी, तो वे उनको झपट्टा मारकर लेने लगे। घायल सैनिकों की देह को नोचना गीधों ने बंद कर दिया।

तभी अचानक पृथ्वीराज की मुर्छा भी टूट गयी। उन्होंने देखा कि संयमराय उनकी रक्षा के लिए अपना मांस काट-काटकर गीधों को खिला रहे हैं। इतने में पृथ्वीराज के कुछ सैनिक भी वहाँ आ गये। वे पृथ्वीराज और उनके दूसरे घायल सामंतों व सैनिकों को उठाकर ले जाने लगे, किंतु संयमराय अपने शरीर का इतना मांस काट-काटकर गीधों को खिला चुके थे कि उनको बचाया नहीं जा सका। और इस प्रकार कर्तव्य के पालन में अपनी देह का मांस अपने ही हाथों से

काटकर गीधों को खिलाने वाला वह वीर रणभूमि में सदा के लिए सो गया।''

संयमराय के अपूर्व त्याग की गाथा सुनकर शाहबुद्दीन गौरी ने कहा- ''वाह ! संयमराय वाह ! तुम निश्चय ही धन्य हो और धन्य है वह पवित्र भारतभूमि जिस पर तुमने जन्म लिया।''

गौरी के दरबार के सभी मीर जयचंद व शाहबुद्दीन का वार्तालाप बड़े ध्यान से सुन रहे थे, तभी काजी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा- ''शाहबुद्दीन गौरी ! खून ने आखिर अपना रंग दिखा ही दिया, तेरे अंदर काफिर अनंगपाल का खून है, इसीलिए तू आज काफिरों का ही गुणगान करने लगा। मैंने तुम्हें इसलिए गजनी का सम्राट बनवाया था कि लोहा ही लोहे को काटता है, इसलिए मूर्तिपूजक हिंदू काफिरों के विरुद्ध लड़ने व मंदिरों को तोड़ने की लालसा तुम्हारे अंदर भरी थी, लेकिन धिक्कार है तेरे जीवन को, जो तू काफिरों की विरुदावलि गा रहा है। अब तू गजनी के तख्त का अधिकारी तभी होगा, जब तू हिंदुस्तान के तमाम मंदिरों की लूट और हिंदुओं की रत्न राशि से गजनी को समृद्ध कर पाक दामनी का यह पुरस्कार देगा। तुझे कसम कुरान-ए-पाक की, दिल्ली की शानो-शौकत धूल में मिलानी ही होगी और सभी काफिरों को इस्लाम कबूल कराना होगा।''

शर्मिंदगी महसूस करते हुए गौरी ने तख्त से खड़े होकर काजी को सलाम कर माफी मांगते हुए कहा- ''काजी साहब ! जब तक आपकी आज्ञा को मैं अंजाम न दे दूंगा, मिट्टी के बर्तन में खाना खाऊँगा और धरती पर ही सोऊँगा।''

और इस प्रकार काजी की आज्ञा का पालन करते हुए शाहबुद्दीन गौरी ने अपने दूत 'किवाम-उल-मुल्क' को पृथ्वीराज के पास भेजा और उसे अधीनता व इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए पत्र लिखा। पृथ्वीराज चौहान कट्टर हिन्दू थे, अतः इस्लाम कबूल करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। उसने गौरी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। पृथ्वीराज के



जवाब से अवगत हो गौरी ने मजहब और जेहाद के नारे बुलंद किये। और वह एक लाख बीस हजार सैनिकों की विशाल सेना लेकर तराइन की तरफ बढ़ा। पृथ्वीराज इन सब बातों को अनजान करते हुए राजकाज और सबसे मिलना-जुलना छोड़कर संयोगिता के साथ आमोद-प्रमोद व नृत्य-गान में डूबा हुआ था, इससे शासनिक व्यवस्था चरमरा गयी और उधर शाहबुद्दीन गौरी आक्रमण के लिए बढ़ा आ रहा था। इसकी सूचना पृथ्वीराज को दी गयी, किंतु उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया।

सभी सामंत परेशान थे कि बिना सम्राट के नेतृत्व में युद्ध कैसे किया जाए ? अंत में गुरु रामपुरोहित के नेतृत्व में सभी सामंतों ने मिलकर चंद कवि को पृथ्वीराज को सतर्क कर युद्ध के लिए तैयार करने का कार्य सौंपा। चंद ने निम्न पंक्तियाँ लिखकर पृथ्वीराज के पास पहुंचा दी-

कमार अप्पह राज कर, मुख जंपह इह बत्त ।
गौरी स्त्री तुम धरनि, तूं गोरी रस रत्त ।।

चंद कवि द्वारा लिखी गयी पंक्तियों को पढ़ते हुए पृथ्वीराज का वीर भाव जाग्रत हो गया। वे कामिनी का संग छोड़कर राज्य की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो गये। गौरी को हराने की योजना बनाने लगे।

पृथ्वीराज ने अपने बहनोई व मित्र समर सिंह को युद्ध में भाग लेने के

लिए संदेश भेजा। समर सिंह ने चित्तौड़ का राज्यभार कर्ण सिंह को सौंप दिया और स्वयं पूरी तैयारी के साथ पृथ्वीराज की मदद करने को आ गया। पृथ्वीराज की सेना में तीस हजार घोड़े और तीन हजार हाथी थे, पैदल सेना इससे कहीं अधिक थी, भारत के कई अन्य राजाओं ने भी उनकी मदद की, लेकिन जयचंद गौरी के साथ ही रहा।

युद्ध के लिए तैयार रणक्षेत्र में शाहबुद्दीन गौरी के साथ जयचंद खड़ा हुआ था। शाहबुद्दीन ने जयचंद से कहा- ''आपकी हमदर्दी का शुक्र गुजार हूँ राजा साहब ! आपने हमें जो सहयोग दिया है एवं गजनी पर जो एहसान किया है, उससे गजनी का बच्चा-बच्चा आपका एहसानमंद है महाराज।''

जयचंद ने झेंपते हुए कहा- ''यह तो आपकी जर्रानवाजी है शहंशाह! जो इस नाचीज को सर-आँखों पर बैठा रहे हो।''

फिर शाहबुद्दीन ने कहा- ''हमारे तो सभी सैनिक जंग के लिए तैयार हैं, युद्ध शुरू करने के लिए आपके सैनिकों की तरफ से देर किस बात की है।''

जयचंद ने कुटिलता से कहा- ''कोई देर नहीं है शहंशाह, परंतु......''

शाहबुद्दीन ने कहा- ''परंतु क्या राजा साहब ! आप कोई संकोच न करें, हमसे स्पष्ट कहें।''

जयचंद ने नजरें नीची करते हुए कहा- ''अगर गुस्ताखी माफ हो आलीजाह ! अपने दरम्यान जो शर्तें तय हुई थीं, उनको एक बार फिर दोहराना चाहता हूँ।''

गौरी ने मुस्कुराकर कहा- ''आप निश्चिंत रहे राजा साहब। हम दोनों के बीच जो शर्तें तय हुई थीं, मैं उन पर अटल हूँ। युद्ध में विजय के उपरांत मुझे पृथ्वीराज चौहान चाहिए। दिल्ली की हुकूमत मैं आपको ही सौंप दूंगा, उसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं, अब आप अपने सैनिकों को युद्ध करने की आज्ञा दीजिए।''

युद्ध के मैदान के दूसरे भाग में पृथ्वीराज चौहान अपने सैनिकों को

उद्‌बोधित कर रहे थे- ''हे भारत माता के वीर शेरों ! आज तुम्हारी परीक्षा का दिन आ गया है। आज वह कायर शाहबुद्दीन युद्ध के लिए एक बार फिर आ गया है। हमने उसे सत्रह बार दया करके जीवन दान दिया, परंतु इस बार उस देशद्रोही जयचंद ने उसको सैनिक सहायता दी है। मेरे वीरों ! युद्ध में हमें बहादुरी से लड़कर दुश्मन के दांत खट्टे कर देने हैं।''

पृथ्वीराज के सेनापति ने कहा- ''आप चिंता न करें महाराज ! आपके इशारे भर की देर है।''

सूर्य ने पृथ्वी पर ज्यों ही सुनहरी किरणों को बिखेरा, त्यों ही दोनों ओर की सेनाओं के सेनापतियों ने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया- ''आक्रमण.......आक्रमण......आक्रमण......मारो......मारो........''

दो दिन तक भीषण मार-काट होती रही। गौरी ने बार-बार अपनी पराजय से सबक सीखा था। अतः उसने तीसरे दिन युद्ध के नियमों के विरुद्ध जब प्रातः काल राजपूत सेना नित्यकर्म में व्यस्त थी, अपनी सेना को दस-दस हजार के चार दलों में विभक्त किया और उसके घुड़सवारों ने चारों ओर से राजपूतों पर हमले किये। परंतु राजपूतों का बाल भी बांका न हुआ। उनकी फौलादी दीवार जैसी की तैसी खड़ी रही और जैसे समुद्र की तरंग पहाड़ी चट्टान से टकराकर टूट जाती है, शाहबुद्दीन की सेना भी राजपूतों की लौह दीवार पर टकरा कर बिखर गयी और गौरी उनकी शक्ति से घबरा उठा। पर इस बार वह किसी प्रकार की गफलत करने को तैयार न था और न उसे व्यर्थ का शौर्य प्रदर्शन ही अभीष्ट था, उसने सहसा भागने का उपक्रम किया और चालाकी से पीछे हटा। उसकी सेना को ये सारे पैंतरे बता दिये गये थे। सधी-सधी वह पीछे हटी और राजपूतों पर पठानों के झूठ का जादू चल गया, उन्होंने समझा कि पठान इस बार भी भागे और अपनी पंक्तियाँ छोड़ बिखर कर उन्होंने पठानों का पीछा किया। पठानों ने जैसे ही राजपूतों को बिखरते देखा तो वे लोटे और उन्होंने जमकर मार शुरू कर दी। स्वयं शाहबुद्दीन

आफत के लड़ाके चुने हुए लोहे के वर्ण पहने १२,००० घुड़सवारों को लेकर बिजली की भांति बिखरी हुई राजपूत पंक्तियों पर टूट पड़ा। राजपूत सेना विशाल थी, एक बार जो वह हिली तो विशाल भवन की भांति हिलकर गिर ही पड़ी और अपने ही भग्नावशेषों में खो गई।

समर सिंह, अपने पुत्र कल्याण सिंह और तेरह हजार राजपूत सैनिकों तथा सामंतों के साथ युद्ध में शहीद हो गया, फिर भी बचे हुए राजपूत लड़ते रहे, लेकिन अचानक ही गौरी ने पृथ्वीराज की सेना के हाथियों पर बारुद के गोले बरसवाना शुरू कर दिया, इससे क्रुध होकर पृथ्वीराज के हाथियों ने राजपूती सेना को ही कुचलना शुरू कर दिया और इसी दौरान दिल्ली का राजा गोविंदपाल अपने ही हाथी द्वारा पटक कर मार दिया गया। हाथियों पर अंकुश कसने की कवायद में पृथ्वीराज भी घायल हो गये।

पृथ्वीराज के सैनिक सामंत उसे घायल अवस्था में लेकर चले, किंतु मुसलमानों ने उनका पीछा किया और सिरसा के पास घायल पृथ्वीराज की एक बार फिर शाहबुद्दीन गौरी से मुठभेड़ हो गयी। मुठभेड़ से कुछ ही दूरी पर सैकड़ों गौएं घास चर रही थी, जब गौरी ने अपनी पराजय होते देखी तो वह गायों की ओर भागा। गौरी के घोड़े के पीछे पृथ्वीराज ने भी अपना घोड़ा दौड़ा दिया, लेकिन गौरी और उसके मीर गौओं के झुण्ड में जाकर खड़े हो गये और सबने अपनी-अपनी तलवारें निर्दोष गौओं की गर्दनों पर रख दीं। और फिर गौरी ने पृथ्वीराज से कहा-"पृथ्वीराज यदि तुमने आत्मसमर्पण नहीं किया, तो इन सारी गौओं को कत्ल कर दिया जाएगा। तुम भारतवर्ष के सम्राट हो और पवित्र भूमि पर होने वाली गौ हत्याओं का कलंक अपने माथे पर लेकर कैसे जीवित रह पाओगे। हम तो मुसलमान हैं, हमें गौ हत्या करने में गुनाह नहीं सबाब मिलेगा।"

घायल पृथ्वीराज घोड़े से उतरा, एक हाथ में भारत की पवित्र मिट्टी व दूसरे हाथ में तलवार लेकर गौमाताओं को प्रणाम करते हुए उसने



कहा- "हे गौमाताओं ! मैं तुम्हारी रक्षा के लिए दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर रहा हूँ! ईश्वर से प्रार्थना करो कि भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रक्षा के लिए यहाँ वीर हर युग में जन्म लेते रहें।"

गौमाताओं के प्राण बचाने के लिए पृथ्वीराज व उसके सामंतों ने अपने अस्त्र-शस्त्र फेंक दिये और इस प्रकार अनंगपाल के बहिष्कृत पुत्र घोरी अर्थात शाहबुद्दीन गौरी के सामने पृथ्वीराज चौहान ने आत्मसमर्पण कर दिया। गौरी ने पृथ्वीराज को बंदी बनाकर अजमेर के लिए प्रस्थान किया।[१]

१. वंशचरितावलि

(१६)

गुलाम सरदार कुतुबुद्दीन ऐबक शाहबुद्दीन गौरी के आदेश पर दिल्ली की ओर बढ़ा चला जा रहा था, उसने रास्ते में पड़ने वाले गांवों को खूब लूटा, मंदिर और भवन भी गिरा दिये।

कानपुर के पास किसोरा नामक एक हिन्दू राज्य था। उसके राजा का नाम था सज्जनसिंह। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं। राजकुमार का नाम लक्ष्मणसिंह और राजकुमारियों का नाम ताजकुंवरि व कृष्णा था। राजा सज्जनसिंह ने अपनी बड़ी पुत्री को भी पुत्र के समान ही घोड़े पर चढ़ने और तलवार, भाला आदि चलाने की शिक्षा दी थी। कृष्णा मात्र आठ साल की थी।

कुतुबुद्दीन ऐबक भारतवर्ष में तबाही मचा रहा था। उसके सैनिक कहीं भी बिना कारण ही हिंदुओं पर आक्रमण कर रहे थे। इसी दौरान एक दिन राजकुमार लक्ष्मणसिंह और राजकुमारी ताजकुँवरि घोड़ों पर चढ़कर शिकार खेलने निकले। वन में बारह-चौदह मुसलमान एक झाड़ी में छिपे कुछ सलाह कर रहे थे। जब उन लोगों ने देखा कि एक लड़का और एक लड़की घोड़े पर बैठे जा रहे हैं और उनके साथ सैनिक नहीं हैं, तो वे लोग लाठियाँ लेकर दोनों पर टूट पड़े। लक्ष्मणसिंह और ताजकुँवरि ने भी अपनी तलवारें खींच ली और वे दोनों उन लोगों का सामना करने लगे। लक्ष्मणसिंह ने थोड़ी देर में पाँच आक्रमणकारियों के सिर काट फेंके। ताजकुँवरि ने उस समय तक तीन को मार दिया था, किंतु वह भाई से पीछे नहीं रहना चाहती थी, उसने बड़ी शीघ्रता से तलवार चलाकर दो शत्रुओं को और मार दिया। दस के मारे जाने पर जो आक्रमणकारी बचे; वे भाग गये। वे भागे हुए पठान कुतुबुद्दीन ऐबक के पास पहुँचे। उन लोगों ने गुलाम कुतुबुद्दीन को जाकर उभाड़ा कि ताजकुँवरि बहुत सुंदर तथा बड़ी ही वीर बालिका है। उसे वह या तो अपनी बेगम बना ले या गजनी में काजी के हरम में भेज दें। कुतुबुद्दीन

ने उन लोगों की बात मान ली। कुतुबुद्दीन की सेना ने किसोरा का किला घेर लिया। उस छोटे से राज्य के थोड़े से राजपूत सैनिक किले से बाहर निकले और शत्रुओं पर टूट पड़े।

किले के कँगूरे पर से राजकुमार और राजकुमारी युद्ध देख रहे थे। उन्होंने देखा कि बहुत बड़ी मुसलमानी सेना के सामने राजपूत वीर एक-एक करके मारे जा रहे हैं। किसोरा की सेना घटती चली जा रही है। भाई-बहिन ने सलाह की और वीर-वेष में घोड़े पर चढ़कर तलवारें खींचे युद्ध के लिये चल पड़े। युद्ध में उन दोनों की तलवारें शत्रुओं को मूली की भांति काटने लगीं।

कुतुबुद्दीन दूरबीन लगाये दूर से युद्ध देख रहा था। उसने ताजकुँवरि को युद्ध करते देखा तो अपने सिपाहियों से चिल्लाकर बोला- "जो कोई उस लड़की को जीवित पकड़कर मेरे पास ले आयेगा, उसे मुँह माँगा इनाम दिया जाएगा।"

ऐबक की घोषणा सुनकर अनगिनत मुसलमान सैनिक इनाम के लोभ में राजपूतों पर टूट पड़े। राजा सज्जनसिंह और उनके साथी राजपूत सैनिक युद्ध में मारे गये। जब ताजकुँवरि ने देखा कि मुसलमान सैनिक उसके पास आते जा रहे हैं तो उसने लक्ष्मणसिंह से कहा- "भैया ! अपनी बहिन को बचाओ।"

लक्ष्मणसिंह की आँखों में आँसू आ गये। उन्होंने कहा- "बहिन ! अब तुम्हें बचाने का क्या उपाय मेरे पास है ?"



ताजकुँवरि ने भाई को ललकारा— "राजपूत होकर रोते हो भैया ! अरे, मेरा शरीर तो कभी-न-कभी मरेगा ही, तुम मेरे आर्य धर्म को बचाओ। मुसलमानों के



अपवित्र हाथ तुम्हारी बहिन को छूने न पावें।"

लक्ष्मणसिंह की समझ में बात आ गयी। उसने तलवार के एक झटके से ताजकुँवरि का सिर शरीर से अलग कर दिया। इसके बाद वह शत्रुओं पर साक्षात यमराज के समान टूट पड़ा। कितने शत्रु के सैनिकों को मारकर वह गिरा, इसकी कुछ गिनती नहीं। कुतुबुद्दीन महल में जा घुसा, अब उसे वहाँ रोकने वाला ही कौन था। उसे महल में कुछ नहीं मिला, लेकिन महल के पिछले हिस्से में जाकर उसने देखा कि ताजकुँवरि की छोटी बहन कृष्णा व उसकी दादी विद्योत्मा कुछ विचार-विमर्श कर रही थी। जैसे ही उनकी तरफ बढ़ा कृष्णा ने कहा - "ठहरो! म्लेच्छ तुम हमें जीते-जी छू नहीं सकते।" और इतना कहकर पहले से ही तैयार जहर का कटोरा उठाकर कृष्णा गटागट पी गयी तथा विद्योत्मा ने छाती में कटार मारकर शरीरान्त कर लिया। कुतुबुद्दीन विजयी तो हुआ, पर विजय में उसे मिली लाशें और किसोरा का सूना किला। इसी तरह हिन्दुओं पर अन्याय ढाता हुआ कुतुबुद्दीन आगे बढ़ा जा रहा था।



(१७)

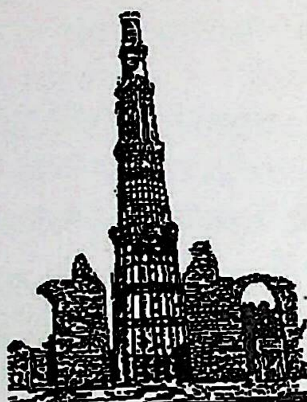
कुतुबुद्दीन ने दिल्ली पहुंचकर वहाँ भी खूब कत्लेआम मचाया और लालकोट पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ा। लालकोट[1] के चारों ओर गहरी खायी थी, जिसमें यमुना का पानी होकर बहता था। जैसे ही संयोगिता को यवनों का लाल कोट की तरफ कूच करने का समाचार मिला, उसने राजपूतों से खायी के ऊपर बना पुल तुड़वा दिया और फिर समरसिंह की रानी पृथा और अन्य रानियों के साथ संयोगिता जलती चिता में कूदकर सती हो गयी।



कुतुबुद्दीन ने जब पुल टूटा पाया, तो उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी-- "गुलाम बनाये गये सब काफिरों को इस खायी में फेंककर किले तक पहुंचने का रास्ता बना दिया जाए।"

फिर क्या था यवनों ने बेबस हिंदुओं को खायी में फेंककर उसे मानव शरीरों से भर दिया और लाशों के पुल पर कुतुबुद्दीन की सेना आगे बढ़ी। लेकिन अंदर से बंद किले के दरवाजे को लाख प्रयत्न करने के बाद भी कुतुबुद्दीन नहीं तोड़ पाया, कुछ यवनों ने सीढ़ियाँ लगाकर किले पर चढ़ने का प्रयास किया, तो किले में तैनात राजपूतों ने उन्हें मार गिराया। कुतुबुद्दीन ने किले का फाटक तोड़ने के लिए हाथी आगे बढ़वाया, परंतु फाटक में नोकदार कीले लगी थी, हाथी उन पर टक्कर नहीं मार

१. वंशचरितावलि व कई इतिहासकारों के अनुसार लालकोट (लालकिला) पृथ्वीराज के समय भी मौजूद था। अतः यह दावा कि इसे मुगलों ने बनाया, सरासर गलत है।



सकता था। कुतुबुद्दीन ने कुछ विचार करने के बाद अपने परम सहायक जयचंद के पुत्र धीरचंद को किले के फाटक से बांधकर महावत को उसकी छाती पर हाथी से टक्कर मरवाने की आज्ञा दी।

'हाथी हूलों' की आवाज के साथ दांत पर दांत दबाकर महावत ने हाथी को अंकुश मारा। हाथी ने पूरे जोर से चिंघाड़ मारकर धीरचंद की छाती पर अपने सिर से टक्कर मार दी। धीरचंद का देह फाटक के कीलों में छिदकर उसमें चिपक गया, किंतु किले का फाटक चरमरा कर टूटा और गिर पड़ा। कुतुबुद्दीन को किले के अंदर जलती हुई चिताओं के सिवाय कुछ न मिला, निराश होकर उसने आर्यों के ज्ञान एवं विज्ञान के सब केंद्रों को नष्ट करवा दिया। सम्राट विक्रमादित्य के आदेश पर राजा सन्दिल[1] द्वारा बनवायी गई मिहिरावली की प्राचीन गगन चुंबी मीनार की मूर्तियों को तोड़कर उसी पर उलटा चिनवा दिया।[2]

दिल्ली के भव्य भवनों को खँडहर में परिवर्तित करने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने वहाँ एक आलीशान मंदिर में थोड़ी तोड़-फोड़ करके उसका

---

१. ज्यौतिष वेधशाला च सण्डिलेन विनिर्मिता ।
सण्डिलपुरमुक्तं तदिन्द्रप्रस्थं च तेन वै ।।
-वंशचरितावलि

१. इन्द्रप्रस्थेऽधिकारोऽभूच्यह्वणानामित स्ततः ।
हतः स द्वादशे वर्षे त्वनङ्गपुत्र घोरिणा ।।
तेनापि कुतुबुद्दीन आर्यावर्त्त नृपः कृतः ।
खचुम्बी मिहिराल्ल्यां स्तम्भस्तेन निपातितः ।।
तन्निर्माणः कृतः पश्चातद य इल्तुतमिशेनवै ।
सप्ताष्टाक्षिधरावर्षे मीनारो नाम पूरितः ।।
वराहमिहिरस्याऽयं वेधशालाऽस्ति ज्योतिष ।
बुधनाम्नैव तत्स्थानं मिहिरावलिरूच्यते ।।
-वंशचरितावलि, अध्याय ३

नाम ''कुब्बल-उल-इस्लाम' मस्जिद रख दिया और दिल्लीवासियों की सुख-शांति में आग लगाकर हिंदुओं पर कहर ढाता हुए कुतुबुद्दीन ऐबक अजमेर जा पहुंचा। अपने आका शाहबुद्दीन गौरी के आदेश पर अजमेर में भी उसने ऐसा कोहराम मचाया कि जनता धार्मिक स्थलों की शरण में जाकर ईश्वर की मूक मूर्तियों के सामने त्राहि-त्राहि करने लगी। कुछ लोग एकत्र होकर ज्योतिषराज जगन्नाथ के पास गये, तो उन्होंने लोगों से स्पष्ट कहा- ''हम क्या कर सकते हैं ? यह तो कलयुग है। भविष्य पुराण में कलयुग में म्लेच्छों व शूद्रों का राजा बनना लिखा है। अब तो दुष्टों का नाश केवल भगवान ही कर सकते हैं।''

जगन्नाथ की बातें सुनकर आम जनता तो क्या राजपूत भी हथियार डालकर मंदिरों में भजन-कीर्तन करने लगे।

राजपूतों की अंध ईश्वर भक्ति का फायदा उठाकर कुतुबुद्दीन ऐबक ने सब मंदिरों व भव्य भवनों को ढ़ाई दिन में ही झोपड़ों में परिवर्तित कर दिया। इतना सब होने पर भी जगन्नाथ अपने चेलों को यही समझा रहे थे कि आप निश्चिंत रहिए महादेव जी भैरव या वीरभद्र को भेज देंगे, वे सब म्लेच्छों को मार डालेंगे या अंधा कर देंगे। हनुमान, दुर्गा व भैरव ने स्वप्न देकर स्वयं कहा है कि पापियों का नाश वे खुद कर देंगे, राजपूतों की चढ़ाई का तो मुहूर्त ही नहीं है।

जगन्नाथ अपने चेलों को राजकीय मंदिर में अंध श्रद्धापूर्ण उपदेश दे ही रहे थे कि उनका प्रतिवाद करते हुए उनकी पुत्री रेणुका ने कहा- ''पिताश्री, भोले-भाले लोगों को क्यों बहका रहे हो ? म्लेच्छ सरेआम मंदिरों को भ्रष्ट कर रहे हैं और आप भगवान पर भरोसा रखने की झूठी दिलासा दिला रहे हैं। आपने ही मुझे पढ़ाया है कि भगवान की भक्ति श्रद्धा से करनी चाहिए। श्रद्धा शब्द का निर्माण दो शब्दों ''श्रत्'' तथा ''धा'' से हुआ है। श्रत् यानी सत्य, धा यानी धारण करना। मानव की वह प्रवृत्ति जो उसे उसके जीवन में सत्य धारण करने की ओर प्रेरित करे श्रद्धा है। राम, कृष्ण, दुर्गा, शिवादि के गुणों को धारण करना ही

उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है। भगवान श्रीराम की ही बात लें, भले ही वे भगवान विष्णु के अवतार हों, लेकिन उन्होंने वनों में विभिन्न कष्ट सहते हुए अपने बाहुबल से राक्षसों को मारकर पृथ्वी पर सुख व शांति स्थापित की थी। आज तुम कह रहे हो कि भगवान पर भरोसा रखो, यह तो ठीक है, लेकिन भगवान भक्ति से प्रसन्न होकर म्लेच्छों का नाश कर देंगे, ऐसा कदाचित नहीं हो सकता, क्योंकि शास्त्र कहते हैं कि जो अपनी रक्षा स्वयं करते हैं, भगवान भी उन्हीं की रक्षा करते हैं। इसलिए अभी भी वक्त है कि लोगों को समझाओ कि जिस प्रकार भगवान राम ने राक्षसों को मार गिराया था, उसी प्रकार तुम भी अपने बाहुबल से म्लेच्छों का नाश कर दो, माँ भवानी स्वयं सूक्ष्म शरीर धारण कर तुम्हारे अंदर प्रविष्ट कर गयी है, अतः जीत तुम्हारी ही होगी।"

धर्मनिष्ठ व देशभक्त बालिका रेणुका अपने पिता को उपदेश दे ही रही थी कि तभी वहाँ पर कुतुबुद्दीन की सेना आ धमकी और उसने उस स्थल को तोड़ने तथा वहाँ मौजूद जगन्नाथ व अन्य लोगों को गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया, तब जगन्नाथ ने उन्हें खजाने के पास ले जाकर कहा-- "तीन करोड़ स्वर्ण मुद्रा ले लो, लेकिन यह धर्म स्थल न तोड़ो।"

कुतुबुद्दीन ने प्रतिवाद करते हुए कहा- "हम बुतपरस्त नहीं, किंतु 'बुतशिकन' अर्थात् मूर्तिपूजक नहीं, किंतु मूर्तिभंजक हैं, तुम तीन करोड़ का लालच क्या देते हो, सारे हिन्दुस्तान की धन संपत्ति हमारी है, जेहाद के बदले खुदा ने यह हमें पुरस्कार में प्रदान की है।"[१]

देखते ही देखते मुसलमानों ने सारा खजाना ऊंटों पर लाद लिया और वहाँ मौजूद लोग मूकदर्शक बनकर तमाशा देखते रहे, लेकिन रेणुका से यह सब सहन नहीं हो पा रहा था, उसने कुछ चूड़ियाँ अपने हाथ से निकाली और लोगों की ओर फेंकते हुए कहा- "थू, कायर कहीं

---

1. The Muslim were eager to obtain wealth and destroy religious passion which they could excite. -Dr. Ishwari Prasad.



के, लो इन चूड़ियों को पहन लो।'' फिर उसने मन ही मन भगवान को पुकारा और बाएँ हाथ से अपने जूड़े में से छुरी निकालकर उसे कुतुबुद्दीन की छाती में भोंक दिया।

छुरी बहुत छोटी थी, इसलिए वह कुतुबुद्दीन के प्राण न ले सकी और रेणुका को गिरफ्तार कर लिया गया।

घायल कुतुबुद्दीन ऐबक ने रेणुका से कहा- ''नादान लड़की तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुमने मेरे ऊपर हमला किया, तुम्हें तो मैं अपनी बेगम बनाकर जीवन भर गुलामों की तरह जीने को मजबूर कर दूंगा।''

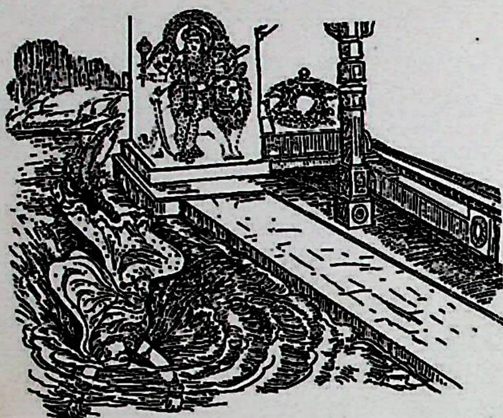
बंदी रेणुका ने चतुरतापूर्ण बातों के साथ उत्तर दिया- ''अगर तुम यह कत्लेआम करना बंद कर दो, तो मैं तुम्हारी बेगम बनना भी अपना सौभाग्य समझूँगी।''

रेणुका के आत्मसमर्पण को देख ऐबक ने आश्चर्यचकित होकर पूछा- ''अगर तुम सचमुच मेरी बेगम बनने को तैयार हो, तो कसम कुरान-ए-पाक की, मैं हिन्दुओं का कत्लेआम बंद कर दूंगा और इन लोगों को भी मुक्त कर दूंगा।''

''हाँ, लेकिन बेगम को कैद करके नहीं पालकी में ले जाया जाता है।''

''ठीक है, हम अभी सुंदर पालकी मंगवाते हैं।''

कुतुबुद्दीन ने एक सुंदर पालकी मंगवाई, रेणुका सोलह-श्रृंगार करके उसमें बैठकर चली, जब पालकी एक तालाब के किनारे पहुंची तो रेणुका ने कहा- ''मुझे बहुत प्यास लगी है, यह तालाब हमारे सम्राट पृथ्वीराज



चौहान का बनवाया हुआ है, मैं अंतिम बार इस तालाब का पानी अपने हाथों से पीना चाहती हूँ।"

पालकी रुक गयी। रेणुका अकेली तालाब पर गयी। तालाब के किनारे एक छोटा सा दुर्गा का मंदिर था। रेणुका ने देवी को प्रणाम किया और वह तालाब में कूद पड़ी। बहुत देर होने पर कुतुबुद्दीन वहाँ आया, लेकिन अब वहाँ क्या धरा था। कुतुबुद्दीन ने तालाब में जाल डलवाया, लेकिन रेणुका का मृत शरीर भी उसके जाल में नहीं आया और वह खाली हाथ चला गया। बाद में मंदिर के पुजारी ने तालाब में जैसे ही जाल डलवाया, वैसे ही रेणुका का शरीर उस जाल में आ गया। तालाब के किनारे ही उस वीर बालिका की देह चिता पर रखी गयी, जिसने प्राण देकर धर्म की लाज बचाई।



(१८)

अजमेर में शाहबुद्दीन गौरी का दरबार लगा हुआ था। राजदरबार में गौरी के मीरों के अलावा अपने सामंतों के साथ बंदी अवस्था में पृथ्वीराज भी थे। राजदरबार की कार्रवाई देखने के लिए नगर के लोगों को भी आमंत्रित किया था। ज्योतिष व पंडे-पुजारी भी उपस्थित थे, सभी की आंखें गौरी की तरफ लगी हुई थी कि पता नहीं किसके भाग्य का कैसा फैसला करेगा ? सबसे पहले राज दरबार में जगन्नाथ ज्योतिष को बंदी की अवस्था में लाया गया।

गौरी ने जगन्नाथ से कहा- "जगन्नाथ तुमने मेरे पिता अनंगपाल को बहकाकर मुझे व मेरी माँ को हिन्दू धर्म से बहिष्कृत करवा दिया था, क्या तुम अपना अपराध कबूल करते हो ?"

जगन्नाथ ने गिड़गिड़ाकर कहा- "शहंशाह यदि मैं ऐसा न करता, तो आज आप दिल्ली व अजमेर के शासक कैसे बनते ! दिल्लीश्वरो वा जगदीशवरो वा.....आप तो दिल्ली के ही ईश्वर नहीं, बल्कि ईश्वरों के भी ईश्वर हैं, आप पच्चीसवें अवतार हैं, ज्योतिष विद्या कहती है कि आप दिल्ली पर सौ वर्ष तक राज करेंगे।"

गौरी ने हंसकर कहा- "मूर्ख यदि मैं बहिष्कृत न होता तो दिल्ली का उत्तराधिकारी तो मैं तब भी होता......अच्छा यह बताओ ज्योतिष के हिसाब से तुम कितने वर्ष जीवित रहोगे।"

जगन्नाथ ने अंगुलियों पर कुछ गिनती करने के पश्चात कहा- "शहंशाह ज्योतिष के हिसाब से मेरी आयु अभी २५ वर्ष शेष है।"

गौरी- "क्या तुमने ठीक प्रकार से हिसाब-किताब लगा लिया।"

जगन्नाथ- "हाँ शहंशाह ! मेरी ज्योतिष गणना कभी गलत साबित नहीं हो सकती।"

गौरी ने फिर रोष में आकर कहा- "कुतुबुद्दीन ! इस ज्योतिष जगन्नाथ का धड़ अभी शरीर से अलग कर दिया जाए। इसको बड़ा घमंड है

अपनी ज्योतिष विद्या पर।"

आज्ञा पाते ही जल्लाद ने भरे दरबार में जगन्नाथ का धड़ शरीर से अलग कर दिया। और इसके बाद जयचंद को बंदी अवस्था में पेश किया गया।

गौरी ने जयचंद से कहा- "जयचंद तुमने निजी स्वार्थ के लिए मेरी मदद कर अपनी भारत माता के साथ गद्दारी की है (फिर कुतुबुद्दीन की तरफ देखकर) ऐबक ! मुकदमों की लंबी-चौड़ी कार्रवाइयों के लिए हमारे पास वक्त नहीं है, इस देशद्रोही को भी इसी वक्त सजा-ए-मौत दी जाए,, क्योंकि जो अपने वतन का न हुआ, उससे हम किस वफादारी की उम्मीद कर सकते हैं।"

कुतुबुद्दीन का इशारा पाते ही जल्लाद ने तुरंत जयचंद को फांसी के फंदे पर लटका कर मार डाला। इसके बाद बंदी अवस्था में पृथ्वीराज चौहान को अदालत के कटघरे में खड़ा किया गया।

तब गौरी ने कहा- "कुतुबुद्दीन ऐबक ! पृथ्वीराज ने अपने नयनों के तीर से १९ राजकुमारियों को घायल किया है, तुरंत इसकी दोनों आंखें फोड़ दी जाएँ, हम इसे अंधा बनाकर गजनी अपने साथ ले जाएंगे।"[१]

गौरी का इशारा पाते ही कुतुबुद्दीन ने स्वयं भभकती आग से लोहे की दो नुकीली सलाखें निकालकर पृथ्वीराज की आंखों में ठूंस दी। इंतना होने के बावजूद भी चौहान ने आह तक न की। इसके बाद बंदी अवस्था में पृथ्वीराज के पौत्र बालक उभयपाल को लाया गया। बच्चे की मासूमियत पर तरस खाकर गौरी ने आदेश दिया- "इस बालक की हथकडियां खोल दी जाएं, यह बालक तो फरिश्ता है।"

और फिर तख्त से उठकर उभयपाल को गोद में उठाकर गौरी ने पूछा- "बेटे तुम बड़े होकर क्या बनोगे?"

---

१. घोरी मोहमदो गौरी पृथ्वीराजं गृहीतवान् ।
युद्धे विजितवान् पृथ्वीं कारागारे स क्षिप्तवान् ।।
-वंशचरितावलि ४-१९

बालक ने निर्भय होकर उत्तर दिया-- "तुम जैसे यवनों से जंग जीतकर आर्यावर्त्त का सम्राट बनूंगा।'''

इतना सुनते ही गौरी ने बालक को गोद से नीचे फेंक दिया, फिर मन ही मन सोचा- "जिस देश के बालक ही इतने देशभक्त हों, उसे गुलाम बनाना आसान नहीं।"

फिर गौरी ने कुतुबुद्दीन को शाही फरमान लिखने का आदेश दिया- "ऐबक शाही फरमान तैयार करो कि दिल्ली के सम्राट उभयपाल होंगे और इनके चाचा गोविंद अजमेर की गद्दी पर बैठेंगे और कुतुबुद्दीन तुम स्वयं लाहौर के तख्त-ए-ताज पर बैठोगे, लेकिन प्रतिवर्ष दिल्ली व अजमेर की आय का ९० प्रतिशत भाग कर के रूप में वसूल कर गजनी हमारे हुजूर में पेश करोगे। आज से भारत वर्ष में जो भी सिक्के ढलेंगे, उन पर पृथ्वीराज चौहान के साथ मेरा नाम अर्थात मुहम्मद बिन साम भी अंकित किया जाएगा। जब तक पृथ्वीराज चौहान गजनी में हमारी कैद में रहेगा, तब तक सिक्कों पर इनका नाम बराबर अंकित किया जाए।" फिर मन में विचारता है यदि ऐसा न करूंगा तो जनक्रांति भड़क सकती है,[1] क्योंकि यहाँ का तो बच्चा-बच्चा भी देशभक्त व बहादुर है, इसलिए सीधे अपने नाम की मुद्रा चलाना आफत को निमंत्रण देना होगा।[2]

कुतुबुद्दीन ऐबक ने सिर झुकाकर कहा- "जो हुक्म मेरे आका ।" और फिर शाही फरमान तैयार करने लगा।



---

१. जनक्रांतिभयान्म्लेच्छैरिन्द्रप्रस्थे प्रशासिते।
पृथ्वीराजनाममुद्रा बहुवर्षाणि चालिता ।।
कालाक्षिकाल भूवर्षे विक्रमाब्दे हिघोषितम् ।
यशःपालचह्वाणेन स्वातंत्र्यंम्लेच्छशासनात् ।।
तं निगृहीतवान् राजा गयासुद्दीन तुगलकः ।
प्रयागेन्यक्षिपद् दुर्गे करायां स मृतस्ततः ।।
-वंशचरितावलि, अध्याय ३

२. हजारों की संख्या में प्राप्त मुहम्मद बिन साम के सिक्कों पर पृथ्वीराज का नाम भी अंकित है।

(१९)

"आओ गौरी आओ ! हमें तुम पर नाज है कि तुमने हिन्दुस्तान पर फतह कर इस्लाम का नाम रोशन किया है, कहो सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान के कितने पर कतर कर लाये हो।"— गजनी के सर्वोच्च काजी निजामुल्क ने मोहम्मद गौरी का स्वागत करते हुए कहा।

गौरी ने सलाम करने के बाद काजी की बात का उत्तर देते हुए बताया- "काजी साहब मैं हिन्दुस्तान से सत्तर करोड़ दिरहम मूल्य के सोने के सिक्के, पचास लाख चार सौ मन सोना व चांदी, इसके अतिरिक्त मूल्यवान आभूषणों, मोतियों, हीरा, पन्ना, जरीदार वस्त्र व ढाके की मलमल लूट-खसोट कर भारत से गजनी की सेवा में लाया हूँ। मंदिरों को लूटकर १७००० सोने व चांदी की मूर्तियाँ लायी गयी हैं, २००० से अधिक कीमती पत्थर की मूर्तियाँ व शिवलिंग को भी लाया गया है, उनके टुकड़े-टुकड़े करके उनसे जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ बनाने का हुक्म दे दिया गया है। आपके आदेशानुसार मंदिरों को नेष्था व आग से जलाकर जमीदोज कर दिया गया है और उनकी जगह मस्जिदों व सूफियों के मठों के भवन बनाने क़ा कार्य शुरू करवा दिया गया है। ब्राह्मणों और क्षत्रियों को कत्ल कर दिया गया है और उनकी सुंदर औरतों व बच्चों को बंदी बनाकर गजनी लाया गया है।"

काजी ने बीच में टोकते हुए कहा— "जन्नत की कितनी हूरों को बंदी बनाकर लाये हो?"

गौरी ने उत्तर दिया— "गुलाम बनाई गई सुंदर युवतियों व महिलाओं की संख्या का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक-एक गुलाम दो-दो या तीन-तीन दिरहम में बिक रहा है। अब तो गजनी में बंदियों की सार्वजनिक बिक्री की जा रही हैं। अब रौननाहर, इराक, खुरासान आदि देशों के व्यापारी गजनी से गुलामों को खरीदकर ले जा रहे हैं।"

गौरी की बात सुनकर काजी ने जोरदार ठहाका लगाया और फिर मंद-मंद मुस्कान के साथ बड़बड़ाए-- "गोरे और काले, धनी और निर्धन गुलाम बनने के प्रसंग में सभी भारतीय एक हो गये हैं। जो भारत में प्रतिष्ठित समझे जाते थे, आज़ वे गजनी में मामूली दुकानदारों के गुलाम बने हुए हैं। भारत के राजा-महाराजा, धन्ना सेठों की बीबी-बच्चे हमारे यहाँ गुलाम बन आटा पीस रहे हैं, हमारे घोड़ों के लिए घास खोद रहे हैं, हमारा मल-मूत्र उठा रहे हैं और खाने में मिलते हैं मुट्ठीभर चने (जोर से ठहाका लगाने के बाद फिर गंभीर मुद्रा में) कुरान-ए-पाक में सही ही लिखा है कि इस्लाम की राह पर चलने वाला गरीब से गरीब मुसलमान भी अमीर से अमीर काफिर की अपेक्षा ऊँचा दर्जा रखता है। हम तुमसे बहुत खुश हुए गौरी बेटे ! सोने की चिड़िया भारत की कृपा से धन-संपत्ति व गुलाम तो सभी गजनी वालों के पास हैं, लेकिन हमारे लिए कोई खास तोहफा लाये हो या नहीं ?"

गौरी ने उत्तर दिया-- "लाया हूँ ना काजी साहब।"

"क्या ?"

"जन्नत की हूरों से भी सुंदर जयचंद की पौत्री कल्याणी व पृथ्वीराज चौहान की पुत्री बेला।"

"तो फिर देर किस बात की है।"

"बस आपके इशारे भर की।"

"माशा अल्लाह ! आज ही खिला दो ना हमारे हरम में नये गुल।"

"इंशा अल्लाह।"

काजी की इजाजत पाते ही शाहबुद्दीन गौरी ने कल्याणी व बेला को काजी के हरम में पहुँचा दिया। कल्याणी व बेला की अद्‌भुत सुंदरता को देखकर काजी अचम्भे में आ गया, उसे लगा कि स्वर्ग से अप्सराएँ आ गयी हैं। उसने इन सुंदर हिन्दू कुमारियों को मात्र भोग-विलास की वस्तु बनाना ही उचित नहीं समझा, बल्कि शादी करके अपनी बेगम बनाने का ख्याल उसके मन में घर कर गया, ताकि उसके यहाँ भी आर्य नस्ल की

संतान पैदा हो सके। काजी ने दोनों राज कुमारियों से विवाह का प्रस्ताव रखा तो बेला बोली- "काजी साहब इस्लाम कबूल करना व आपकी बेगमें बनना तो हमारी खुशकिस्मती होगी, लेकिन हमारी दो शर्तें हैं ?"

काजी ने उत्सुकता से पूछा- "क्या शर्तें हैं, तुम्हें बेगम बनाने के लिए तो हमें हर शर्त मंजूर होगी।"

बेला ने कहा- "पहली शर्त तो यह है कि शादी होने तक हमें अपवित्र न किया जाए ? क्या आपको मंजूर है ?"

काजी- "हमें मंजूर है, दूसरी शर्त क्या है तुम दोनों की ?"

फिर कल्याणी ने दूसरी शर्त का खुलासा करते हुए कहा- "हमारे यहाँ प्रथा है कि लड़की के लिए लड़का और लड़के के लिए लड़की के यहाँ से विवाह के कपड़े आते हैं। अतः दूल्हे का जोड़ा हम भारत भूमि से मंगाना चाहती हैं ?"

काजी ने मुस्कुराते हुए कहा- "मुझे तुम्हारी दोनों शर्तें मंजूर हैं।"

और फिर बेला व कल्याणी ने कविचंद के नाम एक रहस्यमयी खत लिखकर भारत भूमि से शादी का जोड़ा मंगवा लिया। काजी के साथ उनके विवाह का दिन निश्चित हो गया। रहमत झील के किनारे बनाये गये नये महल में विवाह की तैयारी शुरू हुई।

कविचंद्र द्वारा भेजे गये कपड़े पहनकर काजी साहब विवाह मंडप में आये। कल्याणी व बेला ने भी काजी द्वारा दिये गये कपड़े पहन रखे थे। बाहर जनता की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। तभी बेला ने काजी साहब से कहा- "हमारे होने वाले सरताज, हम कलमा व निकाह पढ़ने से पहले जनता को झरोखे से दर्शन देना चाहती हैं, क्योंकि विवाह से पहले जनता को दर्शन देने की हमारे यहाँ रस्म है और फिर गजनी वालों को भी तो पता चलना चाहिए कि आप जन्नत की सबसे सुंदर हूरों से शादी रचा रहे हैं। फिर तो जीवनभर हमें बुरका ही पहनना है, उसके बाद तो हमारी सुंदरता का होना न के बराबर होगा।"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं।" -काजी ने उत्तर दिया और फिर वह कल्याणी व



बेला के साथ राजमहल के कंगूरे पर गया, लेकिन वहाँ पहुंचते-पहुंचते ही काजी साहब के दाहिने कंधे से आग की लपटें निकलने लगी, क्योंकि कविचंद्र ने कल्याणी व बेला के रहस्यमयी खत का अर्थ समझकर बड़े तीक्ष्ण विष से सने हुए कपड़े भेजे थे। काजी साहब विष की ज्वाला से पीड़ित हो पागलों की तरह इधर-उधर भागने लगा, तब बेला ने उससे कहा-- "तुमने ही गौरी को भारत पर आक्रमण के लिए उकसाया था ना, हमने अपने देश को लूटने का बदला ले लिया है। हम हिन्दू कुमारियाँ हैं समझे, किसमें साहस है जो जीते जी हमारे शरीर को हाथ भी लगा देगा।"

कल्याणी ने कहा- "म्लेच्छ ! बहुत बड़े मजहबी बनते हो, इस्लाम को शांतिप्रिय धर्म बताते हो, पाँच वक्त नमाज पढ़ने का ढोंग रचते हो और करते क्या हो। जेहाद का ढोल पीटने के नाम पर लोगों को लूटते हो, सुख-शांति से रहने वाले लोगों पर जुल्म ढाहते हो, थू ! धिक्कार है तुम पर व तुम्हारे धर्म पर।"

इतना कहकर उन दोनों वीर बालिकाओं ने महल की छत के बिल्कुल किनारे खड़ी होकर एक-दूसरी की छाती में विष बुझी कटार जोर से भोंक दी और उनके प्राणहीन देह उस ऊँची छत से नीचे लुढ़क गये। पागलों की तरह इधर-उधर भागता हुआ काजी भी तड़प-तड़प कर मर गया।



(२०)

गजनी स्थित गौरी की जेल में बंद पृथ्वीराज चौहान मनस्ताप करता हुआ काल कोठरी में कभी बैठता था, कभी उठता था तथा कभी इधर-उधर घूमता था, क्योंकि उसका मन अत्यंत अशांत था। सहसा एक साधु





ने प्रवेश किया और पृथ्वीराज से कहा- "हे प्रभु जो कल तक सबका राजा था, जिसके सिर पर भारतवर्ष का ताज था आज उसकी ग्रे दुर्दशा। जिन आंखों के डर से बड़े-बड़े प्रतिद्वंद्वी भी कांपते थे, आज उनकी दिव्य ज्योति म्लेच्छों ने छीन ली है।"

पृथ्वीराज ने चिंतन मुद्रा छोड़कर प्रश्नचित्त होकर दोनों हाथों से टटोलते हुए कहा- "कौन कवि ! कहाँ हो तुम ।"

वह जैसे ही गिरने को हुआ है साधु बने चन्द्रकवि ने उन्हें अपने बाहों में थाम लिया, पृथ्वीराज ने उन्हें सीने से लगा लिया, फिर अलग करते हुए कहा- "हे कविराय ! भले ही मेरी नेत्र ज्योति इन कायरों द्वारा छीन ली गयी हो, परंतु मैं आपके चेहरे के देशभक्ति के भाव व मातृभूमि की दुर्दशा में उद्भित क्रोध की लकीरें देख सकता हूँ, मित्रवर (फिर सहज होते हुए) कहो कविचन्द्र आप इतना जोखिम उठाकर यहाँ तक कैसे पहुंचे।"

इधर-उधर देखते हुए धीरे से कविचंद्र ने कहा- "शाह गजनी ने आम लोगों के साथ-साथ साधु-संतों को भी गुलाम बना लिया था। राजपूती केसरिया बाने में साधु समझ मैं भी गिरफ्तार कर लिया गया था। मुझसे

प्रभावित होकर दिल्ली व अजमेर से वार्षिक कर लाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गयी है, वही लेकर आया हूँ।''

पृथ्वीराज ने दुखित मन से कहा- ''जिस दिल्ली को पूरी दुनिया उपहार के रूप में धन देती थी, आज वह दिल्ली ही कर अदा रही है, गौरी के सैनिकों द्वारा लूटी जा रही है, बहू-बेटियों की आबरू पर म्लेच्छ सरेआम हाथ डाल रहे हैं, उन्हें कोई रोकने-टोकने वाला नहीं रहा। यह सब मेरी करनी का फल है, कवि चन्द मेरी करनी का ! राजा के कुकर्मों का फल उसकी प्रजा को भोगना ही पड़ता है। बहुपत्निकता का मुझे ऐसा रोग लगा कि पूरे ही देश का सर्वनाश हो गया।

हाय ! इस बहुपत्निकता का विषाक्त कीड़ा यदि आर्यों के क्षत्रिय वर्ण में न घुसा होता, तो आज भारतवर्ष का इतिहास स्वर्णाक्षरों में दिव्य छाया प्रकाशित करता। बहुपत्निकता के चक्कर में पड़कर यदि मैं संयोगिता के आकर्षण के कारण कामलोप न होता, तो अपने इतने अनेक सामंतगण, सैन्यबल व राजबल को गौरी के हाथों नष्ट न करवा देता।

मैंने ग्यारह विवाह कुमारियों से विधिवत रचाये और आठ पर स्त्रियों का बलात्कार कर उनसे राक्षस विवाह रचाया और कोई भी विवाह ऐसा न हुआ, जिसमें दो-चार हजार वीरों की प्राण हानि न हुई हो। क्या औरतों के लिए इतना प्राणनाश करना उचित था, कदाचित नही कविवर कदाचित नहीं...... यह आज मेरी समझ में आया है। बहुपत्निकता के इस रोग ने भारत को दुर्दशाग्रस्त बनाने में बहुत बड़ा उद्योग किया है और कविवर ! रही-सही कसर आपसी फूट व बहिष्कृत नीति ने पूरी कर दी। हमारे ही रिश्तेदार जयचंद ने आपसी फूट के कारण देशद्रोह करके गौरी का साथ दिया और पूरे देश को म्लेच्छों का गुलाम बनवा दिया। गौरी भी तो अपना ही मामा था, पर उसे देश व धर्म से निकालने वाले हम हिंदू ही तो थे। जो समुदाय किसी को अपनी सभ्यता, संस्कृति व धर्म से बहिष्कृत करता है, वही समुदाय बहिष्कृत व्यक्ति के कुकर्मों का जिम्मेदार होता है। हाय ! यह अपसी फूट और बहिष्कृत नीति न जाने

कब खत्म होगी या पापिनी आर्यों को ही खत्म करके छोड़ेगी।''

पृथ्वीराज की पश्चातापपूर्ण बातें सुनकर कविचंद का गला भर आया। पर उसने सहज होते हुए कहा- ''महाराज अब आप शोक और संताप छोड़िये। आप बहादुर हैं, अतः अब बहादुरी के प्रदर्शन का और अपने दुश्मन गौरी से बदला लेने का अवसर आ गया है।''

निःश्वास छोड़ते हुए पृथ्वीराज ने विवशता से कहा- ''कैसी बहादुरी! कैसा बदला कविराय ! आज हम दृष्टिहीन हैं, अपने वतन से दूर पराये देश में कैद हैं, हम हर तरफ से लाचार हैं कविराज लाचार.......''

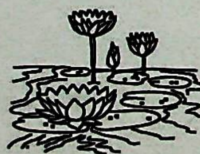
कविचंद ने धीरज बंधाते हुए कहा- ''आप चिंता न करें महाराज मैंने एक युक्ति सोची है।''

पृथ्वीराज ने उत्सुकता से पूछा- ''कैसी युक्ति कविराज?''

कविचंद्र ने कहा- ''महाराज ! मैंने गौरी को बताया है कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान शब्दवेधी बाण चलाना जानते हैं, आप किसी तरह उनसे यह विद्या सीख लें। गौरी मेरी बातों में आ गया है। उसने आपकी तीर अंदाजी देखने की ठान ली है। मैंने ऐसा प्रबंध करा लिया है महाराज! किले के मैदान में सारी जनता कल आपका यह जौहर देखने को एकत्र होगी। वहीं पर दुष्ट शाहबुद्दीन गौरी भी होगा। बस यही मौका है महाराज गौरी से बदला लेने का।''

पृथ्वीराज ने कविचंद्र की पीठ थपथपाते हुए कहा- ''धन्य हो कविचंद, तुम धन्य हो। भारत माता को तुम जैसे सपूतों पर गर्व पर है, अब मैं निश्चिंत होकर उस कायर गौरी से बदला ले सकूंगा ! जाओ मित्र जाओ और आगे की तैयारी करो।''

और पृथ्वीराज के आदेश पर चन्द्रकवि वहाँ से प्रस्थान कर गये।



(२१)

गौरी के किले के मैदान में पृथ्वीराज चौहान के शब्दवेधी बाण का जौहर देखने के लिए भीड़ जमा हो चुकी थी, मोहम्मद गौरी सबसे ऊँचाई पर बैठा था। दरबार में सात तवे समानांतर रेखा में टंगवा दिये गये, जिनकी ऊँचाई पांच फिट के लगभग थी, तभी बेडियों से जकड़े हुए पृथ्वीराज चौहान को मैदान में लाया गया। कविचंद भी उनके साथ उपस्थित थे।

शाहबुद्दीन गौरी ने पृथ्वीराज से कहा- "शहंशाह-ए-हिंद पृथ्वीराज चौहान ! आप तो बड़े बहादुर हैं। सुना है आप शब्दवेधी बाण चलाने की कला में पारंगत है। हमारी सारी जनतां व सैनिक भी आपका कमाल देखना चाहते हैं।"

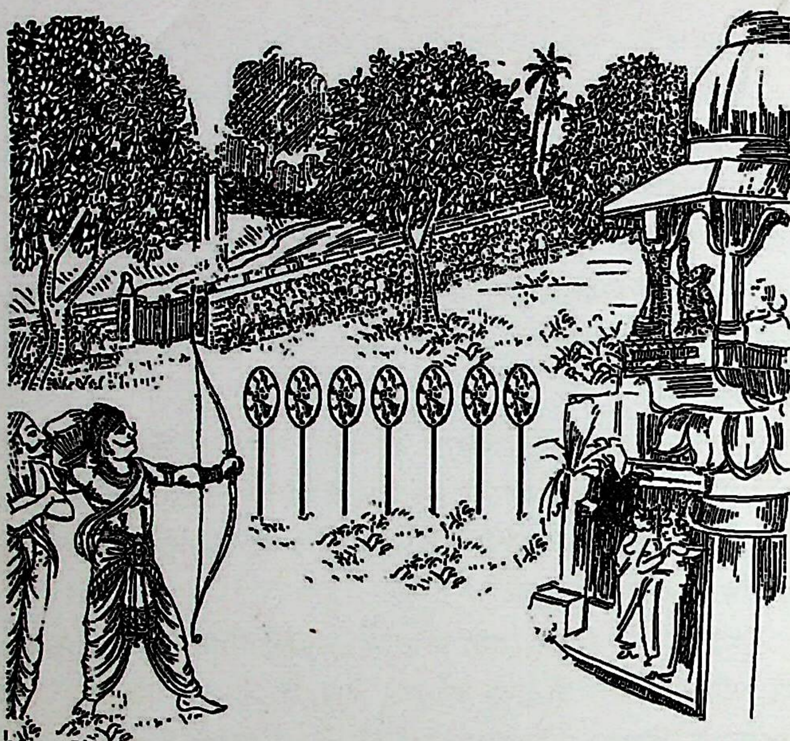
पृथ्वीराज ने कहा- "क्या करूं मामा घोरी ! एक महात्मा ने मुझसे यह जौहर दिखाने के लिए वचन ले लिया है, अतः मैं मजबूर हूँ, वरना ईश्वर के सिवाय मैंने आज तक किसी के सामने यह मस्तक नहीं झुकाया है। आप मेरे पावों-हाथों की बेडियां खुलवा दें और मेरा तीर-कमान मंगवा दें, तो मैं अवश्य ही यह जौहर दिखा सकता हूँ।"

तभी गौरी ने अपने सिपाहियों से कहा- "महाराज पृथ्वीराज के हुक्म की तामील हो ?"

गौरी का हुक्म सुनते ही सैनिकों ने पृथ्वीराज की बेडियां खोल दीं और उन्हें भारत में निर्मित तीर-कमान लाकर दे दिये।

तब अचानक ही अनिष्ट की शंका भरी नजरों से देखते हुए नश्तर खान ने गौरी से कहा- "गुस्ताखी माफ आलीजाह ! अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। मेरी सलाह मानिये और यह बखेड़ा खड़ा न कीजिए। पृथ्वीराज बड़ा ही बहादुर व बुद्धिमान है। इसे पुनः बेडियों में जकड़ने का हुक्म दे दीजिए, अन्यथा कुछ भी अनर्थ हो सकता है।"

क्रोध में आकर गौरी ने नश्तर खान को डांटते हुए कहा कहा-



"तुम्हारा दीमाग तो ठिकाने पर है नश्तर खान। यह अंधा और लाचार हमारा बिगाड़ ही क्या सकता है।"

गौरी व नश्तर खान के वार्तालाप में बाधा डाले हुए चन्द्रकवि ने शाहबुद्दीन से कहा- "महाराज आप किसी तवे पर आवाज करवा के, उस पर चौहान को बाण छोड़ने का हुक्म दीजिए, जनता यह जौहर देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रही है।"

गौरी जहाँ बैठा था, वह मंच पृथ्वीराज से चार बांस दूर और २४ गज ऊँचा था। मंच पर बैठे हुए गौरी ने हुक्म दिया- "हरे रंग के तवे पर आवाज की जाए।" तभी पृथ्वीराज का दाहिना कंधा थपथपाते हुए कवि चन्द्रबरदायी ने कहा-

सावधान चौहान हो, राख लाज और कान ।
ध्यान धरो भगवान का, लेकर हाथ कमान ।।

ऊँच-नीच का मैं तुम्हें देऊँ ठीक प्रमाण ।
लक्ष्य तेरा है जहाँ, सुन ले ठीक निशान ।।
चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण ।
ता ऊपर सुलतान, मत चूकै चौहान ।।

और इतना सुनते ही पृथ्वीराज के धनुष से बाण निकलकर सीधा अनंगपाल के बहिष्कृत पुत्र घोरी अर्थात शाहबुद्दीन गौरी की छाती में जा लगा, उसने खड़ा होकर बाण निकालने का प्रयत्न किया, लेकिन बाण की पीड़ा के कारण सफल न हो सका और लुढ़क कर जमीन पर जा गिरा। दरबार में भगदड़ मच गयी। गौरी के अंगरक्षक मीर व खान सम्राट पृथ्वीराज चौहान व चन्द्रकवि को पकड़ने दौड़े, लेकिन उन दोनों ने आपस में एकं-दूसरे को कटार मारकर शरीरान्त[1] करते हुए कहा- "आर्यावर्त्त की जय हो।"

।। इति समाप्तम ।।



---

१. ग्रहिय तीर गोरिस्स । कीन बिन इच्छ अप्प कर ।।
काल अन्त पल प्रेम । बुद्धि मग्गिय समोह झर ।।
दिषि नंष्यौ दिल्लीस । धरिय सज्जै सुसीस कबि ।।
कर दीनौ चाहुआंन । प्रान बद्धयौ सुईस तब ।।
तामंस रज्ज तन तामतन । धन बीरत्त उभार भर ।।
सुरतान प्रान कारन प्रलय । जनु जम सज्ज्यौ दंड कर ।।
भयौ वियौ फुरमान । ताँनि रष्यौ श्रवनंतरि ।।
तियौ भयौ अनभयौ । हरयौ पीतसाहि धरंतरि ।।
लैदसन रसन तालु असघन । सीस फट्टि दह दिसि गबन ।।
सुरतान परयौ षां पुक्करै । भयौ चंद राजन मरन ।।
मरन चंद बरदाइ । राज पुनि सुनिग साहि हानि ।।
पुहपंजलि असमान । सीस छोड़ी सुदेव तनि ।।
मेछ अवद्धित धरनि । धरनि सब तीय सोह सिग ।।
तिनहि तिनह संजोति । जोति जोतिह संपातिग ।।
रासौ अलंभ नव रस सरस । चंद छंद किय अमिय सम ।।
श्रृंगार बीर करुना बिभछ । भय अद्भुत हसंत सम ।।
-पृथ्वीराज रासो

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ् सूची

हमने इस पुस्तक को लिखने के लिए लगभग २० प्राचीन व अर्वाचीन ग्रंथों का गहन अध्ययन किया है और इस कथा का सपूर्ण सारांश इन्हीं पुस्तकों पर आधारित है। फिर भी यह कोई शोध ग्रंथ नहीं, केवल उपन्यास है। प्रमुख आधार ग्रंथ इस प्रकार हैं :-

संस्कृत ग्रंथ

१. संयोगिता - स्वयंवरम् : मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक, १९६३

२. वंशचरितावलि - पं. विश्वनाथ मिश्र, १८५०

राजस्थानी : डिंगल/पिंगल ग्रंथ

४. पृथ्वीराज रासो - चन्द्र बरदाई कृत, संस्करण १९०४

५. प्रिथीराज रासउ - चन्द्रबरदायी, संस्करण १८८५

६. संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो - संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी व नामवर सिंह, संस्करण २००३

७. पृथ्वीराज रासो : तीन अध्याय (समीक्षा व व्याख्या सहित) -प्रो. देशराज सिंह भाटी व प्रो. लक्ष्मण दत्त गौतम, संस्करण, १९६३

८. पृथ्वीराज विजय - जयानक भट्ट, १९१५

९. आल्हा खंड - जगनिक भट्ट, १९५०

हिन्दी ग्रंथ

१०. हमारी विरासत - तेजपाल सिंह धामा, संस्करण २००३

११. संगीत पृथ्वीराज चौहान - यशवंत सिंह वर्मा टोहानवी, १९४८

१२. बड़ों के जीवन से शिक्षा - सं. हनुप्रसाद पोद्दार, २००४

१३. भारतीय इतिहास के आलोक स्तंभ - भाग-२, किताब महल, इलाहाबाद, संस्करण १९५१

१४. वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान - डॉ. कैलाशचंद्र शर्मा, २००५

१५. वीर बालिकाएं, गीता प्रेस गोरखपुर, संस्करण सं. २०११

उपन्यासकार का परिचय

महर्षि पौलस्त्य और दधिमाता की संतान दाहिम्म (धामा) के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है। जोधपुर जिले के गोठ और मांगलोद के बीच आज भी धामाओं की आदि माता दधिमाता का मंदिर है। इस कारण यह क्षेत्र दधिमति क्षेत्र कहलाता है।[1] इसी वंश के वीर पुरुष कैमास को पृथ्वीराज का सेनापति होने का गौरव प्राप्त हुआ।[2]

पृथ्वीराज ने किसी कारणवश कैमास को मृत्यु दंड दे दिया था, तब उसके परिवार वाले पहले बयाना और फिर दक्षिण दिशा में चले गये। लेकिन जब पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी का अंतिम युद्ध हुआ तो कैमास के परिजनों ने इन्द्रप्रस्थ का रूख किया और स्त्री व बालकों छोड़कर परिवार के समस्त पुरुष पृथ्वीराज की सेना में भर्ती हो गये। पृथ्वीराज के बंदी बनाये जाने के बाद इन्हें भी बंदी बना लिया और एक टुकड़ी के साथ गुलाम बनाने के लिए विदेश ले जाया जा रहा था, तब सिकंदरपुर नामक गांव में दाहिमाओं ने विद्रोह करके मुस्लिम आक्रांताओं को मार गिराया। सिकंदरपुर की भी सारी आबादी मुस्लिम थी, इसलिए धामाओं ने वह सारा गांव भी जलाकर राख कर दिया और वहाँ से एक घनघोर जंगल में चले गये। जिस जंगल को इन्होंने आबाद किया, कालांतर में वह बेहठा गांव के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जब इस स्थल की कुछ आबादी बढ़ गयी तो उसके तीन वीरों मुंडाला, रूद्ध और ददवाड़िया ने वहाँ से 20-22 किलोमीटर दूर खेकड़ा नामक गांव बसाया और खेतीबाड़ी करने लगे। यहाँ भी इन्हें संघर्ष करना पड़ा और मुस्लिमों के साथ कई बार जंग हुई। मुस्लिमों ने खेकड़ा में स्थित भरने कूप के पास धतिमाता के मंदिर को तोड़कर वहाँ जामा मस्जिद स्थापित कर दी, तब इन्होंने बेहठा से शूमसिंह, धातीसिंह आदि को मदद के लिए बुलाया और भयंकर मारकाट हुई। अंत में मुस्लिमों से समझौता हो गया और दोनों समुदाय

के लोग वहाँ रहने लगे। धामाओं के मुख्य नेताओं ने वहाँ गाँव को सात पट्टियों में बांट दिया और जमीन का बंटवारा करके खेती-बाड़ी करने लगे। वर्तमान में बागपत जिले के इसी खेकड़ा ग्राम में साहित्यकार तेजपाल सिंह धामा का जन्म विक्रमी संवत 2028 में पट्टी रूध में हुआ। श्रीधामा को अत्यल्प काल से ही पिताश्री श्रीपाल आर्य के आमवतादि रोग से पीड़ित होने के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क़िन्तु फिर भी लगन एवं मेहनत से श्री धामा ने स्नातकोत्तर तक की शिक्षा प्राप्त की। बचपन में श्री धामा ने स्वदेश प्रेम और समाज सुधार की भावनाओं से प्रेरित होकर 'वैदिक बाल संस्था' नामक सामाजिक संगठन बनाया तथा युवा अवस्था में कई शहरों और गांवों में सामाजिक संगठन 'युवा विकास परिषद' की स्थापना की।

अपने महान शोधपूर्ण ग्रंथ हमारी विरासत के माध्यम से विश्व के जिज्ञासुओं में भारतीय संस्कृति का जयघोष करने वाले तेजपाल सिंह धामा आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं।[3] इनका 'हमारी विरासत' ग्रंथ इतना तथ्यपूर्ण है कि आंध्र प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर सुरजीत सिंह बरनाला[4] और तत्कालीन केंद्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय[5] जैसे साहित्यप्रेमी राजनीतिज्ञों के अलावा अनेकों साहित्यकारों ने इसे निश्चय ही दशकों तक के गहन अनुसंधान का परिणाम बताया है।[6]

इन्होंने 'ग्रामीण पृष्ठभूमि' मासिक पत्रिका और हैदराबाद से प्रकाशित राष्ट्रीय दैनिक 'स्वतंत्र वार्ता' में एक दशक से अधिक समय तक वरिष्ठ उप-सम्पादक के रूप में कार्य किया।

दुर्व्यसन, अस्पृश्यता, पशु-पक्षी हत्या, परावलंबन और प्रकृति के साथ छेड़छाड़ इत्यादि कुछ ऐसी बुराइयां हैं, जिनके कारण समाज को आर्थिक, सामाजिक एवं प्राकृतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समाज में व्याप्त इन व्याधियों को जड़ से मिटाने के लिए श्री धामा ने कुशलतापूर्वक दुर्व्यसनमुक्ति आंदोलन चलाया[7] और दुर्व्यसनमुक्तवाद[8] का सूत्रपात कर हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की।

डॉ. ऋषभदेव शर्मा के अनुसार, श्री धामा ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जो भारतीय जीवनशैली के प्रति दृढ़ आस्था रखते हैं तथा वेद,

उपनिषद और धर्म शास्त्रों के आधार पर अपने लेखन द्वारा सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन करने के लिए संकल्पबद्ध हैं।[9] समाजसेवा से लेकर दुर्व्यसनमुक्ति आंदोलन तक के सफर में लेखनी सदा इनके साथ रही है। यह इनकी ही कलम का जादू है कि कम उम्र में लिखी गयी आत्मकथा 'अग्नि-चक्र' के एक के बाद एक कई संस्करण निकले और हाथोंहाथ बिके।[10] तत्कालीन कृषि मंत्री अजित सिंह के अनुसार, श्री धामा की लेखन सामग्री मनोरंजन के साथ-साथ कमजोर वर्गों के उत्थान, सामाजिक न्याय और गांव-किसान की समस्याओं के प्रति लोगों की समझ बढ़ाने में सहायक है।[11] इन्होंने तीन दर्जन से अधिक मौलिक रचनाएँ लिखीं तथा देश-विदेश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की अनेक चर्चित रचनाओं का हिन्दी भाषा में सरल अनुवाद किया।[12]

गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की गीतांजलि के हिन्दी अनुवाद को जो लयात्मकता, शब्द संयोजन, भाषाई धारा-प्रवाह श्री धामा ने दिया है, वह सब कुछ अपने आपमें अद्वितीय है।[13]

प्रसिद्ध उद्योगपति हीरो साइकिल कंपनी के एम.डी. श्री ओमप्रकाश मूंजाल के मुताबिक, श्री धामा का साहित्य हर पुस्तकालय में विशिष्ट स्थान पाने का अधिकारी है।[14]

-प्रकाशक

---

1. ओझा, राजपूताने का इतिहास, पृष्ठ 270
   डॉ. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का इतिहास, पृष्ठ 104
2. कन्निटिया कैमास पृष्ठ देखत मन लाग्यो।........
   गयो गेह दाहिम्म, तलप अलप मन किन्नो।
   -पृथ्वीराज रासो, कैमास करनाटी प्रसंग
3. राष्ट्रीय दैनिक 'विराट वैभव', नयी दिल्ली, 15 अक्टूबर, 2006
4. 'गोलकोंडा दर्पण' हिन्दी मासिक हैदराबाद, मार्च, 2004 एवं इनाडु तेलुगू दैनिक, महबूबनगर, 2 मार्च 2004
5. 'स्वतंत्र वार्ता', हिन्दी दैनिक हैदराबाद, 27 दिसंबर 2003
6. जीवन पद्धति, लेखिका गुणमाला सोमाणी, संस्करण 2003, पृष्ठ 16
7. पांचजन्य साप्ताहिक, 3-9 दिसंबर 2001
8. हिन्दी साहित्य का गौरवशाली इतिहास, फरहाना ताज, संस्करण 2005, पृष्ठ 99
9. वहीं पृष्ठ 99 एवं 'स्वतंत्र वार्ता' दैनिक, हैदराबाद 24 अक्टूबर, 2004
10. हिन्दी साहित्य का गौरवशाली इतिहास, पृष्ठ 112
11. हमारी विरासत, चतुर्थ परिशिष्ट, पृष्ठ 327
12 Dhama A Legend of Social Reformer: by S.C. Sharma, 2001
13. राष्ट्रीय दैनिक 'गुजरात वैभव' अहमदाबाद, 8 मार्च 2007
14. पत्र परिचायवली, पृष्ठ 90

परिशिष्टः ३

श्री धामा की चर्चित पुस्तकें

श्री तेजपाल सिंह धामा ने जहाँ स्वामी दयानंद सरस्वती, डॉ. हेडगेवार के सामाजिक कार्यों से प्रेरित होकर समाज के लिए कुछ कर गुजरने का संकल्प लिया, वहीं उपन्यासकार गुरुदत्त के साहित्य में निहित वेद, उपनिषद व दर्शन शास्त्रों के निचोड़ ने इन्हें सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध विज्ञान, तर्क व प्रमाण सहित लेखनी उठाने को विवश किया।

इनका प्रथम काव्य संग्रह 'आंधी और तूफान' बच्चों के साथ-साथ बड़ों में अत्यंत लोकप्रिय हुआ। तत्पश्चात् द्वितीय रचना उपन्यास 'शांति मठ' लिखा, जो एक संपादक को इतना पसंद आया कि उन्होंने अपने साप्ताहिक पत्र में उसे श्रृंखलाबद्ध प्रकाशित किया।

समाज सुधार से संबंधित श्री धामा की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं:

शोध ग्रंथ	हमारी विरासत, गौ का गौरव
तार्किक	मनुर्भव अर्थात विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा
उपन्यास	पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता, अखण्ड आर्यवर्त, नल-नील अभियान श्रीरामसेतु निर्माण, अग्नि की लपटें (चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी के जीवन पर), पंक से पंकज (महर्षि वाल्मीकि कथामृत)
काव्य संग्रह	मातृशक्ति (महाकाव्य), बलिदान, चेतना, वरदान
कहानी संग्रह	संस्कार, मन का मैल
काव्यानुवाद	रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' का हिन्दी में अनुवाद
लेख संग्रह	उद्गार
व्यक्तित्व विकास	डाइनेमिक मैमोरी पॉवर मेथड्स, बॉडी लैंग्वेज, पॉजिटिव थिंकिंग, सफल वक्ता कैसे बनें?
पत्रों में लेखन	विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हजारों लेख, समीक्षाएं, बिजनेस ग्राफ आदि प्रकाशित

महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द, विशिष्ट व्यक्तियों व स्थान आदि की सूची

त्राः

तदर्शिनाः

दर्शी होते हैं। इसी

ऐसी रचनाएं प्रका

न संस्कार उत्प

की नहीं। भा